कालाध्ययन

तत्वार्थसूत्र–सिद्धांत पुस्तक रात्रौ वाचनेसे अकाल अध्ययन करनेका दोष आताहै ऐसे कित्येक लोक कहते हैं, परंतु जिसपुस्तकमैं स्वाध्यायके कालका निर्णय कीया है, ऐसे जे मूलाचारनामा सर्वमान्य पुस्तक इस पुस्तकमैं पांचमाअधिकार मै स्वाध्यायका काल कहा है, सो इहां कहनेसे लोकोंकी शंका निवृत्ति होयगी, ऐसा जानि ओ पुस्तककी गाथा और संस्कृतअर्थ इहा लिखते हैं

॥ गाथा ॥

॥ पादोसियवेरत्तिय गोसग्गियकालमेव गेण्हिता ॥
॥ उवधो कालहिपुणो सज्झाओहोदि कायवो ॥ ७३ ॥ 215

सस्कृतअर्थ

प्रादोपिक, वैरात्रिक, गोसर्गिक, कालमेव गृहीत्वा, ॥ उभयकाले पुन स्वाध्यायो भवति कर्तव्य ॥

हिंदुस्थानीअर्थ–इसीमैं स्वाध्यायकौ वर्ज्जकाल कहियेतो, प्रात कालके चारघडी, मध्यान्हिके चार घडी, शामके चार घडी, और मध्येरात्रीके चारघडी, इतनाही काल वर्ज्य कह्या हैं इतना काल छोडके फेर बाकीके कालमैं स्वाध्याय करनेकौं कहिये सिद्धातपुस्तक वांचनेकौं बिलकूल हरकत नहीं

यह पुस्तक मुंबईमें निर्णयसागर छापेखानेमें नाना रामचंद्र नाग इन्होंने छपवाके प्रसिद्ध किया संवत १९५१ सन्‌ १८९६

पेक्षाकरितौ सिद्धक्षेत्रमैंही सिद्धहोयहै तातै अल्पबहुत्वनाहीहै ॥ भूतपूर्वनयकी अपेक्षाचिंतवनकरिये तो क्षेत्रसिद्ध दोयप्रकारहैं॥एक जन्मतै, अर एक संहरणतै ॥अन्यक्षेत्रमे हरेगयेसिद्धअल्पहै इनतै संख्यातगुणे जन्मसिद्धहैं, क्षेत्रकाविभागकरि ऊर्द्धलोकतै भये सिद्धअल्पहै, तिनतै सख्यातगुणा अधोलोकतै सिद्धभयेहैं, तिनतै सख्यातगुणा तिर्यग्लोकतै सिद्ध भये हैं, सर्वतै थोरा समुद्रतै सिद्ध भये हैं, तिनतै सख्यातगुणा द्वीपतैसिद्धभयेहैं॥ऐसे सामान्यकह्या॥विशेषकरि सर्वतैथोरा लवणसमुद्रतैभये सिद्धहैं, तिनतै संख्यातगुणा कालोदधितै सिद्ध भये हैं, तिनतै सख्यातगुणा जंबूद्वीपतैसिद्ध भये हैं, तिनतै सख्यातगुणा धातुकीखडतै सिद्धभयेहैं, तिनतै संख्यातगुणा पुष्करार्धतै सिद्धभयेहैं ॥ ऐसैही कालादिकका विभागतै अल्पबहुत्वजानना॥ १२॥ ऐसैंही द्वादशअनुयोगकरि सिद्धमै भेद हैं, अर स्वरूपमै भेद नहीहैं ॥ ९ ॥ इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेदशमोध्याय ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥

॥ चोपाई छंद ॥

॥ संवत उगणीसै दस शुद्धि ॥ फागुण बुधि दशमी तिथि बुद्धि ॥
॥ लिख्यो सूत्र टीपण गुणथान ॥ नमै सदासुख नित धरिध्यान ॥ १ ॥

श्लोकसंख्या दो हजार. — आवृत्ति १ ली

स्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसापराय, यथाख्यात, ये पचप्रकारचारित्रते सिद्धहोय हे तथा परिहारविशुद्धिविना चारीतेही सिद्धहोयहे ॥ ६ ॥ अव प्रत्येक बुद्धवोधित भेद कहेहें ॥ प्रत्येकबुद्धतो अपनीशक्तिहीकरि स्वयमेव ज्ञानपावे अर बोधितकहिये परकेउपदेशते ज्ञानपावे सो वोधितबुद्धहे ॥ केईतो प्रत्येकबुद्ध मोक्षपावेंहें केई वो धितबुद्धि मोक्षपावेंहें ॥ ७ ॥ अव ज्ञानते भेद कहेंहें ॥ प्रत्युत्पन्ननयकीअपेक्षाते एक केवलज्ञानतेही सिद्धहोयहें॥भूतग्राही नयते केई मति, श्रुति, दोयज्ञानकरि केवलज्ञा न उपजाय मोक्षपावेंहें ॥ केई तीन, केई च्यारिज्ञानकरि केवलज्ञान उपजाय मोक्ष पावेहे ॥ ८ ॥ अव अवगाहनाकरि भेदकहेंहें ॥ जघन्यतो साढातीन हाथकी काय कुछघाटि अवगाहनाते सिद्धहोयहें ॥ उत्कृष्ट पाचसैपचीस धनुषकी अवगाहनाते सिद्धहोयहें ॥ मध्यप्रदेशोत्तर अनेक अवगाहनेके भेदते सिद्धहोयहें ॥ ९ ॥ अव अ तरकरि भेदकहेहे ॥ सिद्धहोयहे तिनके जघन्यअतर नहीहोयतो दोयसमयहें अर उ त्कृष्टअतर लगता मोक्षजायतो अष्टसमयका हें वहुरि अंतर, जघन्यतो येकसमय हें उत्कृष्ट छह महिने हें, छह महिनेताई कोऊ सिद्ध नहीहोय हें॥१०॥ अव सख्या करि भेदकहेहें ॥ जघन्यतो एकसमयमे एक सिद्धहोयहे॥ अर उत्कृष्ट एकसमयविषे एक सौआठ जीव मोक्षपावे ॥११॥ अव अल्पवहुत्वकरि भेद कहेंहें ॥ प्रत्युत्पन्ननयकी अ

का क्षेत्र (अढाईद्वीप) अर दोयसमुद्र   मस्तक्षेत्रतै सिद्धहोयहै ॥ १ ॥ अब काल
भेद कहैहैं ॥ प्रत्युत्पन्ननयतै एकसमयमेंही सिद्धहोयहैं ॥ भूतपूर्वनयकीअपेक्षाकरि
सामान्यतौ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी दोऊकालमें सिद्धहोयहैं, विशेषकरि अवसर्पिणी
का सुखमादुखमा जो तीसराकाल ताका अंतभागमैउपज्या अर दुखमासुखमा जो
चौथाकाल तिससबमै उपज्या सिद्धहोयहैं तथा चौथाकालका जन्म्या पंचमकालमैभी
सिद्धहोय हैं अर पचमकालमै उपज्या सिद्धनहीहोयहै अर देवलेगया समस्त उत्सर्पि
णीअवसर्पिणीमे सिद्धहोयहै ॥२॥ अब गतिकरि भेद कहैहै ॥ गतीअपेक्षातै सिद्धगती
मेही सिद्धहोय वा मनुष्यगतीमेही सिद्धहोय ॥ ३ ॥ अब लिंगभेद कहैहैं ॥ लिंगकरि
के प्रत्युत्पन्ननयकीअपेक्षा अवेदपणातै सिद्धहोयहैं ॥ भूतग्राही नयकीअपेक्षातै तीनू
वेदमै क्षपकश्रेणीचढी मोक्षपावैहैं, द्रव्यवेदकरि पुरुषवेदतेही सिद्धहोयहैं ॥ ४ ॥ अब
तीर्थभेद कहैहैं ॥ केईतो तीर्थंकरहोय सिद्धहोयहैं ॥ केई सामान्यकेवलीहोय सिद्ध
होयहैं सोभी दोयप्रकारहैं ॥ केईतो तीर्थंकरविद्यमानहोतै सिद्धहोय, केईतो जिसका
लमै तीर्थंकरनहीहोय तदि सिद्धहोयहैं ॥ ५ ॥ ॥ अब चारित्रकरिकै भेद कहैहैं ॥ प्र
त्युत्पन्ननयकीअपेक्षातै चारित्रकाअभावतेही सिद्धहोयहैं ॥ भूतग्राही नयकीअपेक्षा
लगताही यथाख्यातचारित्रकरि सिद्धहोयहैं ॥ अतरकीअपेक्षा सामायिक, छेदोप

कर्मरहित आत्माका ऊर्द्धगमन ही स्वभाव है ॥ ४ ॥ ऐसें ये चार हेतुके चारदृष्टांत करि जीवको कर्मतै छूटतेही ऊर्द्धगमम निश्चयकरना ॥ फेर कोऊकहै मुक्तभयेपीछै आत्माका ऊर्द्धगमन स्वभावहीहै, तौ लोकके अतमैही कैसेंठहऱ्या, ऊंचा फिरक्यौ नही जाय, ताका हेतुरूप सूत्र कहेहैं ॥७॥ सूत्र ॥ धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥ अर्थ ॥ लोक केअंत ऊपरगत उपकारका कारण जो धर्मास्तिकाय है ताका अभावहै, तातै धर्मास्ति कायका सहायविना जीव ऊर्द्धगमनकरि लोकाकाशके बाहर अलोकाकाशमै नहिजाय हैं ॥ आलोकाकाशमै धर्मास्तिकायका सद्भावमानीयेतो, लोक अलोकके विभागका अभावका प्रसंगआवै, ये मुक्तिजीवहै तिनकै गतिजात्यादिकके भेदका कारणनही तातैं भेदव्यवहार नहीहै, समस्तमुक्तिजीव समान हीहैं ॥ कथचित् भेदभीहै सो काहे ते है सो कहैहैं ॥ ८ ॥ सूत्र ॥ क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञा नावगाहनातरसख्यात्पबहुत्वत साध्या ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ क्षेत्रादिक द्वादशअनुयोग ते सिद्धकौ भेदरूप कहैहैं ॥ अब क्षेत्रकरि भेद कहेहै ॥ प्रत्युत्पन्ननयकीअपेक्षा सिद्ध क्षेत्रमैही सिद्धहैं तथा आपकेप्रदेशमैही सिद्ध है वा आकाशका प्रदेशमैही सिद्धहैं अर भूतग्राहिनयकीअपेक्षा पंद्रह कर्मभूमीका जनम्या जीव तहाही सिद्धहोयहैं ॥ अर कर्मभूमीमै जनम्याकौ कोई देवादिक अन्यक्षेत्रमै लेयजायतौ समस्तमनुष्य

नहि, तातै ऊर्द्धगमनकौ हेतु कहैहैं ॥ ५ ॥ सूत्र ॥ पूर्वप्रयोगात्संगत्वाद्बधच्छेदात्तथा गतिपरिणामाच्च ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ पूर्वकेप्रयोगतै, असंगपणातै, बधकेछेदतै, तथा गतिपरिणामतै, ये चारि हेतुतै ऊर्द्धगमनका निश्चयकरना ॥ अब ये चारि हेतुका समाधान करनेकौ चार दृष्टांत कहे हैं ॥ ६ ॥ सूत्र ॥ आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपालाबुवदेरंडबीजवदग्निशिखावच्च ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ छट्टे सूत्रमै कहे जे चार हेतु तिनकाअनुक्रमतै चार दृष्टात जानना ॥ जैसें कुभकार चाककू दडतै भ्रमणकरावता रहिजाय तोहू पहलेप्रयोगतै जहापर्यंत चाककै फिरवेका सस्कार नहीमिटै तहाताई फिरवोहीकरै, तैसें संसारअवस्थामै जीव ऊर्द्ध मुक्तीमै गमनकरनेकै अर्थी बहुतवार परिणाममै अभ्यास कर रह्याथा सो कर्मके छूटपीछैहू पूर्वले अभ्यासके सस्कारतै ऊर्द्धगमन करैहैं ॥ १ ॥ बहुरि जैसें माटिका लेपकरि व्याप्ततुंबा जलमै डूब्याहुवाभी माटिका लेप उतरिजाय तब जलमै ऊचाआजाय तैसें कर्मके लेपकरि संसारमै डूबा आत्माभी कर्मलेप दूरभये ऊर्द्धगमन करैहैं ॥ २ ॥ बहुरि जैसें एरंडकाबीज डोडामै बंध्याहुवा तिष्ठैथा अर जब एरडका डोडा सूकिकरि फाटै, तदि बीज ऊचाही उछलै, तैसें कर्मबंधनकू टूटतैही जीव ऊर्द्धगमन करैहैं ॥ ३ ॥ बहुरि जैसे पवन रहित अग्नीकी ज्वालाका ऊर्द्धगमन ही स्वभावहै, पवनकरि अन्यदिसामै गमनकरैहै, तैसें

॥ अथतत्वार्थसूत्रदशमाध्यायप्रारम ॥ सूत्र ॥ मोहक्षयातूज्ञानदर्शनावरणातराय क्षयाच्चकेवल ॥ १ ॥ अर्थ ॥ पहले मोहका क्षय क्षपकश्रेणीमै करि वहुरि अंतरमुहू तंमै क्षीणकपायनामपाय पाछै युगपत् ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय, इन कर्मका क्षयकरि केवलज्ञान उपजै हैं ॥ १ ॥ सूत्र॥ वधहेत्वभावनिर्जराभ्याकृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्ष ॥२॥ अर्थ ॥ नवीन वधके हेतु जे मिथ्यात्व अविरतादिक तिनका तौ अभाव भया अर पूर्वके वधेहुये कर्मथे तीनकी निर्जरा ये दोऊतैं समस्तकर्मका अत्यतअभा व होना सो मोक्ष हैं ॥ २ ॥ सूत्र ॥ औपशमिकादिभव्यत्वानाच ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ उपश मीकआदिभाव अर परिणामिकमै भव्यत्व, इनका अभावतै मोक्ष है ॥३॥ सूत्र ॥ अन्य त्रकेवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्य ॥४॥ अर्थ ॥ सम्यक्त्व, ज्ञान, दर्शन, सिद्धत्व, ये भावविना सिद्धके अन्यभावका अभाव हैं, जीवत्वभावकौ सिद्धत्वभावकरि जान ना, अनतवीर्य अनतसुखहै ते अनतज्ञान दर्शनमै अतर्भूत है, जातै अनतवीर्या दिककरि हीनतै अनतज्ञानादिक नाहीहोय अर सुखमै अर ज्ञानमै भिन्नता है नहीं ॥ ४ ॥ सूत्र ॥ तदनतरमूर्द्धगच्छत्यालोकातात् ॥५॥ अर्थ ॥ समस्तकर्मका अभावभ ये पीछै जीव उर्द्धगमन करै है, सो लोककाअत पर्यंत जाय है॥ अव कोऊ या कहै, उर्द्धग मन करनेकौ कारण कौन है, कर्मतो रह्यानही, तातै हेतुकह्याविना निश्चयकियाजाय

सयमकी लब्धिके स्थान असंस्यात हे ॥ तिनमै सर्व जघन्य सयमलब्धिस्थान पुलाक अर कषायकुशील ये दोऊके होते असंस्यात स्थानताई यो युगपत् लारिजाय, पाछै पुलाककीतौ व्युछित्त होय अर पाछै कषायकुशील असस्यात स्थान एकाकी जाय, पाछै कषायकुशील अर प्रतिसेवनाकुशील अर वकुश ये युगपत् लारही असस्यातस्थान गमन करै, पाछै वकुश व्युछित्तने प्राप्तहोय, तीठापाछै असंस्यात स्थान जाय प्रतिसेवनाकुशील व्युछित्तने प्राप्तहोय हैं, तीठापाछै असंस्यातस्थानजाय कषायकुशील व्युछित्तने प्राप्तहोय हैं, याते ऊपर कषाय रहितस्थान हैं ते निर्ग्रंथके हीहैं सोभी असंस्यात सयमलब्धिस्थान जाय व्युछित्तनै प्राप्तहोय हे, याते ऊपर एकस्थान जाय स्नातक निर्वाणने प्राप्तहोय हैं, ऐसै ये सयमलब्धिस्थान असंस्यात हैं तोहू अविभागपरिच्छेदकी अपेक्षा अनतका गुणाकार हैं ॥ १ ॥ ऐसैं पुलाकादिक मुनीका स्वरूप कहा सो अष्टप्रकारकरि समझने योग्य है ॥ ४७ ॥ ॥ इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ ॥



त्त लेहै, कोऊ दोप नहीलगावै है, कोऊ आचार्य हैं, कोऊ उपाध्याय हैं, कोऊ प्रवर्तक है, कोऊ निर्यापक हैं, कोऊ वैयावृत्य करैहै, कोऊ ध्यानविषै श्रेणीका आरंभ करैहै, कोऊकै केवलज्ञान उपजै हैं ॥ इत्यादि मुख्य गौण बाह्यप्रवृत्तिकी अपेक्षा लिंगभेद है ॥ दिगम्बर है ते नग्नहै, वस्त्र आभरण शस्त्रादि रहित हैं, ऐसे लिंग कह्या ॥ १ ॥ अब लेश्या कहैहै ॥ पुलाकमुनीकै तीन् शुभही लेश्या हैं ॥ बकुश तथा प्रतिसेवना कुशील इनकै पट्लेश्या हैं ॥ अन्यआचार्यके अभिप्रायतै तीन् शुभही लेश्या हैं ॥ कषायकुशीलकै उत्कृष्ट चारलेश्या हैं, अन्यआचार्यके अभिप्रायतै तीन् शुभही लेश्या हैं ॥ निर्ग्रंथ और स्नातक इनकै केवल शुक्ललेश्या हैं ॥ अयोगी भगवानकै लेश्या नहीहैं ॥१॥ अब उपपाद जो उत्पन्नहोना सो कहैहैं ॥ पुलाकका उत्कृष्ट उपपाद उत्कृष्ट स्थितिके धारक सहस्रारस्वर्गके देवमै उपजै हैं, अठारहसागर प्रमाण आयु पावै ॥ बकुस अर प्रतिसेवनाकुशीलको उत्कृष्टउपपाद आरण अच्युतस्वर्गमै बावीससागरकी आयुपावनेवालेमै हैं ॥ कषायकुसील अर निर्ग्रंथ का उत्कृष्ट उपपाद सर्वार्थसिद्धिविषै तेतीससागर आयु प्रमाणके धारकमै है ॥ अर इनि पंचप्रकारके मुनीका जघन्य उपपाद दोयसागरकी आयुके धारक सौधर्मस्वर्गविषै हैं ॥ स्नातककै निर्वाणमैही उपपाद है ॥ ऐसें उपपाद कह्या ॥ १ ॥ अब स्थान कहैहैं ॥ कषायके तीव्रमंदपणातै

चारागमे पचसमिति तीनगुप्तिका व्याग्यान पर्यंत होय है ॥ स्नातक है ते केवलज्ञानी है, तिनके श्रुत नहीहैं ॥१॥ अब सेवना कहैंहैं ॥ वहुरि प्रतिसेवना जो विराधना सो पुलाकके तो पचमहाव्रत अर एक रात्रिभोजनत्याग इनि छहव्रतमे परके वसतै परकी जवरीतै एककोई व्रतकी विराधना होये है ॥ वहुरि वकुश दोयप्रकार है, एक उपकरणवकुश दूजा शरीरवकुश ॥ तिनमै उपकरण वकुशके वहुत सोभादि सहित कमडलादिक राखनेकी इच्छा याही विराधना हैं ॥ अर शरीरवकुशके शरीरसस्कार करना, सवारना, सोभनीक रहनेमै परिणाम सोही विराधना है ॥ अर प्रतिसेवना कुशीलके मूलगुणमे विराधना नहीलगे अर उत्तरगुणमै कोइक विराधना लगे है सो प्रतिसेवना है ॥ अर कषायकुशील, निर्ग्रंथ, स्नातक, इनके विराधना नाहीहै ॥ ॥ १ ॥ वहुरि तीर्थकहै है ॥ ये पंचप्रकारकेमुनी समस्त तीर्थंकरके तीर्थमे होय है ॥ १ ॥ अर लिंग कहैंहै ॥ लिंग दोयप्रकार है ॥ एकद्रव्यलिंग एकभावलिग ॥ भावलिंग करिके तो पचप्रकारके मुनी निर्ग्रंथही हैं सम्यक्त्वसहित है मुनिपणामे निरादरभाव कोऊके नाही है ॥ अर द्रव्यलिंगकरि तिनमे भेद हैं, कोऊ आहार करैहै, कोऊ अनशनादितप करै है, कोऊ उपदेश करैहै, कोऊ अध्ययन करैहै, कोऊ तीर्थविहार करैहै, कोऊ ध्यान करैहै, कोऊ अनेक आसन करैहै, कोऊके दोपलागैहै, कोऊ प्रायश्चि

गका चलना मदमद भया, व्यक्त अनुभव गोचर नही अर अतर्मुहूर्ततै ऊपर केव
लज्ञान जिनकौ उपजै ते निर्ग्रंथ हैं ॥ ४ ॥ अर जिनके घातियाकर्मका अत्यंत नाश
भया ऐसे सयोगकेवली अयोगकेवली इनकौ स्नातक सज्ञा हैं ॥५॥ स्नातवेदसमास्तौ
ऐसा धातुका स्नातशब्द वने हैं सो ज्ञानके सपूर्णताके अर्थमै हैं ॥ ऐसे ये पांचूही मुनी
चारित्र परिणामकी हानि वृद्धीतै भेदहोतै भी नैगम सग्रहादि नयकी अपेक्षाकरि निर्ग्रं
थहीहै ॥ ४६ ॥ सूत्र ॥ संयमश्रुतसेवनातीर्थलिंगलेश्योपपादस्थानविकल्पत साध्या
॥४७॥ अर्थ ॥ ये पुलाकादिक मुनीहै ते संयमादिक अष्ट अनुयोग साध्यकहिये जान
ने, व्याख्यानकरने ॥ अव संयम कहैहैं ॥ पुलाक वकुश प्रतिसेवनाकुशील ये तीनू मुनी
तौ सामायिक, छेदोपस्थापना ये दोयसयममैही वर्तैहैं ॥कपायकुशील हैं ते सामायिक,
छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसापराय ये च्यारी सयमविषै वर्तैं हैं ॥ निर्ग्रंथ,
स्नातक ये दोयमुनी यथाख्यातसयमहीमै प्रवर्तैं हैं ॥ १ ॥ अव श्रुति कहैहैं ॥ वहुरि
पुलाक, वकुश, प्रतिसेवनाकुशील, इन तीनूके उत्कृष्ट श्रुतकाज्ञान दशपूर्व पर्यंत
होय हैं, कपायकुशील अर निर्ग्रंथके उत्कृष्ट श्रुतकाज्ञान चौदहपूर्वपर्यंत होय हैं ॥
अर जघन्य श्रुतज्ञान पुलाककैतौ आचारागमै आचारवस्तु है तहा पर्यंत हैं ॥ वहुरि
वकुश, कुशील, निर्ग्रंथ, इनके जघन्य श्रुतज्ञान अष्ट प्रवचन मातृका पर्यंत हैं, आ

विषेहू कोऊक्षेत्र कालादिकमै विराधना मलरूप परालसहित हैं तातै पुलाककह्या हैं ॥ १ ॥ बहुरिबाह्य अभ्यतर परिग्रहका सर्वथा अभावरूपमै तो उद्यमीभया तिष्ठै हैं व्रतजिनकै अखंडित हैं, मूलगुणखंडित नाहीकरै हैं, अर शरीर उपकरण इनकी भूषा सुदरतामै जिनकै अनुराग हैं, जातै संघके नायक आचार्यहोय तिनकै प्रभावनादिकमै अनुरागहोयही तिसप्रभावनाके निमित्तकरि सुदरशरीर कमंडलु पिच्छिका स्थाना दिककी सुदरतामै अनुरागकरै हैं बहुरि संघकेमुनीमै अनुराग तथा धर्मकी प्रभावना दिककेवास्ते ऋद्धिमै, शरीरके संस्कारमै, यशमै, प्रभावमै, तत्परता है, परमार्थतै एहू परिग्रहही हैं जातै रागमलसहित आचरण कर्बुरीत धारै हैं अर वकुशनाम कर्बूरका हैं तातै इनकौ वकुश कहैं॥२॥ बहुरि कुशील दोयप्रकार हैं, एक प्रति सेवनाकुशील, दूजा कषायकुशील, तहा जिनकै मूलगुण उत्तरगुणतौ परिपूर्ण हैं अर शरीर कमंडलु पुस्तक शिष्य येही परिग्रह, इनतै भावजिनकै न्यारे नहीभये, कोईप्रकार कारणविशेषतैउत्त रगुणकी विराधना करनेवाले, ऐसै मुनी प्रतिसेवना कुशील हैं ॥ बहुरि जानै अन्यक षायका उदयतौ वशकीया अर संज्वलन मात्र कषायकै आधीन हैं सो कषायकुशील हैं ऐसै दोयभेदरूप कुशील कहे ॥ ३ ॥ बहुरि जिनकै समस्तमोहका उदयकातौ अभावभया अन्यकर्मका उदयजिनकै मंद होगया अर आत्मप्रदेशका तथा उपयो

गुणनिर्जरा ॥ ४५ ॥ अर्थ ॥ कोऊ भव्य पचेंद्री सज्ञीपर्याप्तक, प्रथमोपशम सम्य क्तकी उत्पत्तिहोनेकेअर्थि, तीनू करणके परणामके चरण समयमे, वर्तमान विशुद्ध तासहित मिथ्यादृष्टी ताके आयुकर्मविना सप्तकर्मकी निर्जरा होयहै, तातै असयत सम्यग्दृष्टीकै गुणश्रेणि निर्जरा असख्यातगुणा होयहै तातै देशव्रतीकै, तातै सकलसयमीमहाव्रतीकै, तातै अनतानुवधी कषायके विसयोजन करनेवालेकै, तातै दर्शनमोह क्षपावनेवालेकै, तातै उपशमक तीनगुणस्थानवालेकै, तातै उपशांत मोह ग्यारमा गुणस्थानवालेकै, तातै क्षपकश्रेनीके तीनूगुणस्थानवालेकै, तातै क्षीण मोहनाम वारमा गुणस्थानवालेकै, तातै जिनकेवलीकै, इनि दशस्थाननीमै जो कर्म निर्जरैहै सो असंख्यातगुणा गुणश्रेणीरूप समय समय निर्जरैहै, कालअंतरमुहूर्तप्र माण समस्तस्थानमै गुणश्रेणि निर्जरा करै है परतु ऊपर ऊपर घाटिघाटि प्रमाणरूप अतरमुहूर्त हैं ॥ ४५ ॥ सूत्र ॥ पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रंथस्नातकानिर्ग्रंथा ॥ ४६ ॥ ॥ अर्थ ॥ ये पाचप्रकारके मुनी है तिनके सम्यदर्शन हैं अर वस्त्र आभूपण आयु धादिक परिग्रह रहित हैं तातै निर्ग्रंथ संज्ञा पांचोहीकै हैं ॥ वहुरि जे उत्तरगुणकी भावना रहित हैं अर जिनके व्रतमैहू कोऊ क्षेत्रविषै कोऊकालविषै परिपूर्णतानही है तातै पुलाक ऐसी सज्ञा हैं ॥ पुलाकनाम परालसहित शालीकाहै तातै मूलगुण

काययोगायोगानां ॥ ४० ॥ अर्थ ॥ प्रथमशुक्लध्यान तीनू योगमै है ॥ द्वितीयशुक्ल ध्यान तीनू योगतै एकयोगमै हैं ॥ तृतीयशुक्लध्यान काययोगमै हैं ॥ चौथा शुक्लध्यान अयोगकेवलीकै होय हैं ॥ ४० ॥ सूत्र ॥ एकाश्रयेसवितर्कविचारेपूर्वे ॥४१॥ अर्थ॥ आदिके दोऊ शुक्लध्यान श्रुतकेवलीकै आश्रय होय हैं ॥ ते वितर्ककहिये श्रुत अर विचारकहिये पल्टने सहित हैं ॥ ४१ ॥ सूत्र ॥ अविचारंद्वितीय ॥४२॥ अर्थ ॥ दूजा एकत्ववितर्क ध्यान हैं सो विचार जो पल्टना ताकरि रहित है ॥ ४२ ॥ सूत्र ॥ वितर्क-श्रुत ॥ ४३ ॥ अर्थ ॥ वितर्कनाम श्रुतिका हैं ॥ ४३ ॥ सूत्र ॥ विचारोर्थव्यजनयोगसंक्राति ॥ ४४ ॥ अर्थ ॥ अर्थ जो द्रव्य तथा पर्याय हैं, व्यजन वचन हैं, योग मन वचन काय इनकी क्रिया हैं, पल्टणा ताकों सक्राति कहिये, सो प्रथमशुक्लध्यानमै द्रव्यतैपर्यायमै पर्यायतैद्रव्यमै पल्टना होय है, तथा श्रुतका एकवचन अवलबन करिकै अन्यवचनकौ अवलबन करै सो व्यजनका पल्टना है ॥ मन वचन काय इनके योगमैंते येकयोगकौ छोडि अन्यकौ ग्रहणकरै है सो अर्थ व्यजन योग इनका पल्टना है सो पहले शुक्लध्यानमै है ॥ दूजामै पल्टनेका कारण मोहनीकर्मनही ताते मणीके दीपकसमान अचल हैं ॥ ४४ ॥ सूत्र ॥ सम्यक्दृष्टिश्रावकविरतानतवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशातमोहक्षपकक्षीणमोहजिना क्रमशोसस्य्येय

युक्ति तामै तत्परहुवा सर्वज्ञकी आज्ञा प्रकाशनेकौ वारंवार चिंतवन करै सो आज्ञा विचय धर्मध्यान हैं ॥ १ ॥ वहुरि ये प्राणी सर्वज्ञकी आज्ञातै पराङ्मुख है ते समस्त अंधकीज्यौ मिथ्यादृष्टी हैं अर मोक्षके अर्थीहै परंतु सम्यक्मार्गतै दूरही प्रवर्तै हैं ॥ ऐसें समीचीन मार्गका उपाय चिंतवन करना सो अपायविचय हैं अथवा ये प्राणी मिथ्यादर्शन ज्ञान चारित्रतै कैसे रहितहोय ऐसा चिंतवन करना सो अपायविचय धर्मध्यान हैं ॥ २ ॥ ज्ञानावरणादि कर्मका द्रव्य क्षेत्र काल भव भाव इनकेनिमित्त ते भया जो फलकाअनुभव ताका चिंतवन करना जो ये कर्मतै उपज्या कर्मकाफल मोतै भिन्न है मेरा स्वरूपनाही ऐसाचिंतवन सो विपाकविचय धर्मध्यान हैं ॥ ३ ॥ लोकका सस्थानादिकका चिंतवन सो सस्थानविचय धर्मध्यान हैं ॥४॥ ऐसे धर्मध्यानके चारिभेद कहे ॥ ३६ ॥ सूत्र ॥ शुक्लेचाद्येपूर्वविद ॥ ३७ ॥ अर्थ ॥ आदिके दोय शुक्लध्यान पूर्वके जाननेवाले श्रुतकेवलीकै होय हैं ॥ ३७ ॥ सूत्र ॥ परेकेवलिन ॥ ३८॥ अर्थ ॥ तीजा चौथा ये दोय शुक्लध्यान सयोगकेवली अयोगकेवलीकै होयहै ॥३८॥ सूत्र ॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि ॥३९॥ ॥ अर्थ ॥ पृथक्त्ववितर्कविचार १ एकत्ववितर्कविचार १ सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति १ व्युपरतक्रियानिवर्तिनि १ ये च्यार प्रकारके शुक्लध्यान हैं ॥ ३९ ॥ सूत्र ॥ त्र्येकयोग

स्थानके ऊपरके गुणस्थानमें आर्तध्यान नहीहोय परतु प्रमत्तसयत सहावे गुणस्थानमें निदाननामा आर्तध्यान नहीहोय अन्य तीनू आर्तध्यान कदाचित होयहैं ॥३४॥ ॥ सूत्र ॥ हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्योरौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ अव रौद्रध्यान कहै ॥ हिंसा जो प्राणकाघात अर अनृत जो असत्य अर स्तेयकहिये चोरी परधनहरण, अर विषयसंरक्षण जो परिग्रहका ग्रहण रक्षण इनविषै जो वारवार चिंतवन सो रौद्रध्यान हैं ये ध्यान अविरतकै होय अर आरभ हिंसा धनरक्षणादिकरि देशव्रतीकैहूं कदाचित होय ॥ सयमीकै नहीहोय अर होयतौ सयमतै छूटिजाय ॥३५॥ सूत्र ॥ आज्ञापायविपाकसस्थानविचयायधर्म्मं ॥३६॥ अर्थ ॥ धर्मध्यानके भेद कहेहैं ॥ वहुज्ञानी उपदेशदाताके अभावतै, अपनीमदवुद्धीतै, कर्मउदयकेवसतै, पदार्थकेसूक्ष्मपणातै, हेतु दृष्टात जानेविना, सर्वज्ञके आगमकौ प्रमाणकरि अर चिंतवन करै जो इसआगममै यह पदार्थका स्वरूप सर्वज्ञने कह्याहै तैसैही हैं अन्यप्रकार नही हैं, सर्वज्ञवीतरागदेव अन्यथा कहैनहीं ऐसा गहन पदार्थके श्रद्धानतै अर्थका निश्चय करना सो आज्ञाविचय धर्मध्यान हैं अथवा आप पदार्थका स्वरूपजाने तैसाही परकौ कहनेकी है इच्छाजाकै ऐसै पुरुषके अपनेसिद्धातके अविरोधकरि तत्वार्थकौ दृढकरनेका जाकै प्रयोजन होय सो तर्क नय प्रमाणकी

कपाय मल रहित उज्जलपरिणाममै उपजे सो शुक्लध्यान हैं ॥४॥२८॥ सूत्र ॥ परेमोक्षहेतू ॥२९॥ अर्थ ॥ परेकहिये धर्मध्यान अर शुक्लध्यान ये दोऊ मोक्षके कारण हैं ॥ २९ ॥ सूत्र ॥ आर्त्तममनोज्ञस्यसप्रयोगेतद्विप्रयोगायस्मृतिसमन्वाहार ॥ ३० ॥ अर्थ ॥ अमनोज्ञ जो आपकै वाधाका कारण दुष्टजन विप कटक शस्त्र शत्रु इनका संयोगहोतै जो वारंवार ऐसाचिंतवन होय जो मेरैं इनका वियोग कैसेहोय ऐसा अभिप्राय सो प्रथम आर्तध्यान हैं ॥ ३० ॥ सूत्र ॥ विपरीतमनोज्ञस्य ॥३१॥ अर्थ ॥ अपना धन, स्त्री, पुत्र, मित्र, वांधव, जीविका, इनका वियोग होतै इनके संयोगकै अर्थि वारंवार चिंतवन करना सो दूसरा आर्तध्यान हैं ॥ ३१ ॥ सूत्र ॥ वेदनायाश्च ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ आपकौ रोगकी पीडाहोतै ताका वारंवार चिंतवन करना तथा मेरे इस वेदनाका अभाव कैसैहोय ऐसा चिंतवन सो तीसरा आर्तध्यान हैं ॥ ३२ ॥ ॥ सूत्र ॥ निदानच ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ भोगकी वाछाकरि आतुर जो पुरुष ताकै आगामी कालमै विपयभोगकी प्राप्तिवास्ते वारवार संकल्प रहै सो चौथा आर्तध्यान हैं ॥ ३३ ॥ सूत्र ॥ तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयताना ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ ये आर्तध्यान अविरत जे मिथ्यात्वादिक च्यार गुणस्थानवालेकै अर देशव्रती पचमगुणस्थानवर्तीकै अर प्रमत्त संयत सहावेगुणस्थानवालेकै च्यारही आर्तध्यान होय हैं सहागुण

ग्रथअर्थदोऊका अन्य बहुज्ञानीकौ प्रश्न करना सो पृच्छना हैं ॥ २ ॥ जानेहुये अर्थ का वारवार चिंतवन करना सो अनुप्रेक्षा हैं ॥ ३ ॥ शब्दका शुद्धघोषना (बोलना) सो आम्नाय हैं ॥ ४ ॥ धर्मवर्निद्धी कथाका उपदेश देना सो धर्मकथा हैं ॥ ५ ॥ ऐसें पाचप्रकार स्वाध्यायतप कह्या ॥ २५ ॥ सूत्र ॥ वाह्याभ्यतरोपध्यो ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ अव कायोत्सर्गके दोयप्रकार कहेंहैं ॥ धनधान्यादिक तौ वाह्य परिग्रह हैं अर क्रोध मानादिक अभ्यतर परिग्रह हैं ॥ कायकी ममता हूं अंतरपरिग्रह हैं ॥ ये दोऊ उपाधि परिग्रहका त्याग सो दोप्रकार व्युत्सर्गतप हैं ॥ २६ ॥ सूत्र ॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिंतानिरोधोध्यानमांतर्मुहूर्तात् ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ अव ध्यानके लक्षण कहेंहैं ॥ वज्रऋपभनाराच, वज्रनाराच, नाराच, ये तीनि उत्तमसंहनन हैं, इनका धारक पुरुपके चित्तका येकाग्रचिंतवनमे (रुचीकरना) रोकना सो ध्यान हैं ॥ अनेक पदार्थके अवलवनतै चलायमान नहीहोय तदिध्यान हैं, सो उत्कृष्टपणै अंतर्मुहूर्त पर्यंत रहै अधिक नहीठहरै हैं ॥ २७ ॥ सूत्र ॥ आर्तरौद्रधर्म्मशुक्लानि ॥ २८ ॥ अर्थ ॥ अव ध्यानके भेद च्यार कहेहैं ॥ ऋतु जो दुःख ताविषै जो चिंतवन उपजै सो आर्तध्यान हैं ॥ १ ॥ रुद्र जो क्रूर अभिप्राय ताविषै जो उपजै सो रौद्र ध्यान हैं ॥ २ ॥ धर्मपरिणामरूप चिंतवन मे उपजै सो धर्मध्यान हैं ॥३॥ आत्माके

ना सन्मुखगमन करना अञ्जुलीकरना इत्यादि उपचार विनय है ॥४॥ ऐसे च्यारप्र
कार विनयतप कहे ॥ २३ ॥ सूत्र ॥ आचार्योपाध्यायतपस्वीशैक्षग्लानगणकुलस
घसाधुमनोज्ञाना ॥ २४ ॥ अर्थ ॥ अब वैयावृत्यके दसप्रकार कहेहै ॥ जिनतै व्रता
दिक आचरणकरिये सो आचार्य है ॥ १ ॥ जिनकै निकट मोक्षका कारण शास्त्रप
ढिये सो उपाध्याय है ॥ २ ॥ महान्उपवासादि आचरणकरनेवाला तपस्वी हैं ॥३॥
शिक्षाका अधिकारि सो शैक्ष है ॥ ४ ॥ रोगादिकरि क्लेशरूप होय सो ग्लान हैं ॥५॥
वृद्धमुनीश्वरके परिपाटीका होय सो गण है ॥ ६ ॥ दीक्षादेनेवाले आचार्यके शिष्य
होय सो कुल है ॥७॥ ऋषी मुनी यती अनगार ये च्यारप्रकारके मुनीका समूह
सो सघ है ॥ ८ ॥ वहुतकालका दीक्षितहोय सो साधु है ॥ ९ ॥ लोकमै मान्य
होय सो मनोज्ञ है ॥ १० ॥ इन दशप्रकारके मुनीश्वरकै रोग परीषह मि
थ्यादिका सबध आवे तब अपनी कायकरि तथा अन्यद्रव्यकरि तथा उपदेशादिकरि
तिनका प्रतिकार इलाज करै सो वैयावृत्य है ॥ २४ ॥ सूत्र ॥ वाचनापृच्छनानुप्रेक्षा
म्नायधर्मोपदेशा ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ अब स्वाध्यायके पाचभेद कहै हैं ॥ निर्दोषग्रथ
अर अर्थ अर शब्दअर्थ दोऊका जो भव्यजीवकौ शिखावना पढावना सो वाचना है
॥ १ ॥ वहुरि सशय दूरकरनेकौ निर्बाध तत्वके निश्चयकरनेकौ ग्रथकेअर्थका तथा

॥ २१ ॥ सूत्र ॥ आलोचनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपच्छेदपरिहारोप
स्थापना ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ अव नवप्रकार प्रायश्चित्त कहे हैं ॥ प्रमादतै आपको
दोपलाग्याहोय तदि दसदोप रहितहुवा गुरुकों अपना दोष निवेदन करना
सो आलोचना हैं ॥ १ ॥ मोकों दोषलाग्या ते मिथ्याहोऊ नि फल होऊ ऐसैं
वचनकरि प्रगटकहना सो प्रतिक्रमण हैं ॥ २ ॥ आलोचना अर प्रतिक्रमण दोऊ क
रना सो तदुभय हैं ॥ ३ ॥ दोषतैसहित अन्नपान उपकरणका संसर्ग भयाहोयतौ
तिनका त्याग करना सो विवेक है ॥ ४ ॥ कायोत्सर्गादि करना सो व्युत्सर्ग हैं ॥५॥
अनशनादि अगीकार करना सो तप हैं ॥ ६ ॥ दिवस पक्ष मासादिककी दीक्षाका
घटावना सो छेद हैं ॥ ७ ॥ पक्ष मास आदिका विभागतै संघबारै करना सो परि
हार हैं ॥ ८ ॥ पीछली दीक्षाछेदी नवीनदीक्षादेना सो उपस्थापना हैं ॥ ९ ॥ ऐसैं न
वप्रकार प्रायश्चित्त कह्या ॥ २२ ॥ सूत्र ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचारा ॥ २३ ॥ अर्थ ॥
अव विनयके च्यार प्रकार कहेहैं ॥ वहुत सन्मानसहित मोक्षकेअर्थि ज्ञानकाग्रहण
अभ्यासस्मरण इत्यादिक करना सो ज्ञानविनय हैं ॥ १ ॥ शंकादि दोषरहित तत्वा
र्थका श्रद्धान सो दर्शनविनय हैं ॥ २ ॥ ज्ञानदर्शन सहित चारित्रमै समाधानरूप
चित्तकरना सो चारित्रविनय हैं ॥ ३ ॥ आचार्यादिककौ प्रत्यक्षहोतै उठि सन्मुख

थाकाअभाव, ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय, ध्यान, इनकी सिद्धिहोय हैं ॥५॥ ग्रीष्मऋतुमे पर्वतके शिखरपर अर वर्षाऋतुमे वृक्षकेतलै अर सीतऋतुमे चौहटे नदीकेकिनारे बहुत प्रकार कायोत्सर्गकरना सो कायक्लेशतप है ये तप करनेसे देहकौ कष्टआवतै कायरताका अभावहोय, सुखियास्वभाव रहनेका अभाव, भोगतै छूटनेका अभाव होय हैं ॥ ६ ॥ ऐसै छहप्रकार बाह्यतप हैं ॥ १९ ॥ सूत्र ॥ प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्त्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानानुत्तर ॥ २० ॥ अर्थ ॥ अब छहप्रकार अंतर तप है सो कहेंहैं ॥ प्रमादतै वृत्तकौ दोपउत्पन्न होजाय ताके दूरकरनेकौ जो क्रियाकरिये सो प्रायश्चित्त तप हैं ॥ १ ॥ पूज्यपुरुषका आदरकरना सो विनय तप हैं ॥ २ ॥ कायकरि तथा आहार वस्तिकादिकरि धर्मात्माकी उपासना करना टहलकरना सो वैयावृत्त्यनामातप है ॥ ३ ॥ ज्ञानकीभावनामे आलस्यका त्याग सो स्वाध्यायतप हैं ॥ ४ ॥ देहमे तथा देहका संबधमे आपना माननेरूप सकल्पका त्याग सो व्युत्सर्गतप हैं ॥५॥ चित्तके विक्षेपका त्याग सो ध्याननामातप हैं ॥ ६ ॥ ऐसैं छहप्रकार अभ्यतर तप कह्या ॥ ॥ २० ॥ सूत्र ॥ नवचतुर्दशपचद्विभेदायथाक्रमप्राग्ध्यानात् ॥ २१ ॥ अर्थ ॥ प्रायश्चित्त नवप्रकार हैं ॥ विनय च्यारप्रकार हैं ॥ वैयावृत्य दशप्रकार हैं ॥ स्वाध्याय पाचप्रकार हैं ॥ कायोत्सर्ग दोयप्रकार है ॥ ध्यानकेभेद सूत्र २७ में आगै कहसी ॥

सापरायसंयम हैं ॥ ४ ॥ वहुरि मोहनायकर्मकेक्षयतै तथा उपशमतै जैसा आ
त्माका स्वभाव तथा विकाररहित शुद्धस्वभाव इनका प्रगटहोना सो यथाख्यातचारि
त्र है ॥ ५ ॥ १८ ॥ सूत्र ॥ अनशनावमोदर्य्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविवि
क्तशय्यासनकायक्लेशबाह्यतप ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ अब छहप्रकारबाह्यतप कहैहैं ॥ इस
लोकका फल जो धनप्राप्ति लोकप्रशसा रोगकाअभाव भयकाअभाव मन्त्रसाध
नादि फल, तथा विषयसाधनादिरूप स्वर्गादिकके सुख ये परलोकफल इत्या
दिककी वाछा रहित सयमकीसिद्धि रागकाउच्छेद कर्मका विनाशकध्यान स्वा
ध्यायादिककी सिद्धिकेअर्थि एकदिनादि प्रमाणकरि भोजनका त्याग करना
सो अनशनतप हैं ॥ १ ॥ सयमके सिद्धीकेअर्थि, निद्राके जीतनेअर्थि, वात
पित्तकफादिदोपप्रशमकेअर्थि, संतोष स्वाध्यायकीसिद्धिके अर्थि, अल्पभोजन करना
सो अवमोदर्यतप हैं ॥ २ ॥ आशाकेअभावकेअर्थि भिक्षाकेअर्थि साधुके येकगृहादि
कका तथा भाजन भोजनादिकका नियम करना सो वृत्तिपरिसख्यातप हैं ॥ ३ ॥
इद्रियकेदर्पका निग्रहकेअर्थि, निद्राकाविजय,स्वाध्यायकी सुखरूपसिद्धीकेअर्थि, घृता
दिक रसका परित्याग सो रसपरित्यागनामातप हैं ॥ ४ ॥ जीवकीपीडारहित एकात
शून्यगृहादिकमै शयन आसन करना सो विविक्तशय्यासननामातप हैं ॥ यातै बा

लापुरुप जन्मतै तिसवर्पकाहोय सर्वकाल सुखीहुवासंता आप दीक्षाग्रहणकरि पृथ क्त्वर्प (३।९)पर्यंत तीर्थंकरभगवानके चरणके निकट प्रत्याख्याननामा नवमापूर्व पढ्याहोय सो परिहारविशुद्धिसयमकौ अंगीकारकरै ॥ तीनूसंध्याविना समस्त कालमै दोयकोसप्रमाण विहार करैहै ॥ रात्रि विहार नहीकरै, वर्षाकालमै नियमसहि त होय जीवकीउत्पत्ति, मरणकेठिकाणे, कालकीमर्यादा, जन्मयोनीकेभेद, द्रव्यक्षेत्र केस्वभाव, विधानकाजाननहारा, प्रमादरहित, महावीर्यवानहोय ताकै परिहारविशु द्धि होयहैं ॥ परिहारविशुद्धिसयमका जघन्यकाल अतरमुहूर्त है जातै अतरमुहूर्त्त मै गुणस्थान पलटि जाय तौ छूटै है ॥ छठै सातमै दोयगुणस्थानहीमै रहैहै ॥ उत्कृ ष्टकाल अडतीसवर्पघाट कोटपूर्वका है ॥ जैसें कमलपत्र जलकरि नहीलीपै तैसें पट्कायके जीवकरिव्याप्त जगत इनमै विहार करताहू पापतै नहींलीपै हैं ॥३॥ वहुरि जो सूक्ष्म स्थूल प्राणीकी पीडाकापरिहारमै प्रमाद रहित अर आत्मानुभवविषै उत्सा हयुक्त अखंडक्रियायुक्त सम्यक्दर्शन ज्ञानरूप प्रचड पवनकरि प्रज्वलितभई जो विशुद्धिअभिप्रायरूप अग्निकीशिखा इनकरि दग्धभयाहै कर्मरूप इंधन जाकै अर ध्यानकेविशेपकरि क्षीणकियेहै कपायरूप विषके अकुर जानै अर नाशकै स न्मुखभया है मोहकर्मजाकै, यातै पायाहै सूक्ष्मसापरायनाम जानै, ऐसा सूक्ष्म

आक्रोश १ याचना १ सत्कार १ पुरस्कार १ ये सातपरीषह होय हैं ॥१५॥ सूत्र ॥ वेदनीयशेषा ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ ये ज्ञानावरणादि निमित्ततै कहेजे परीषह, तिनतै अवशेष रहे परीषह जे क्षुधा १ तृषा १ शीत १ उष्ण १ दशमसक १ चर्य्या १ शय्या १ वध १ रोग १ तृणस्पर्श १ मल १ ये ग्यारहपरीषह वेदनीयके होतै होय हैं ॥ १६ ॥ सूत्र ॥ एकादयोभाज्यायुगपदेकस्मिन्नेकोनविंशति ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ एकआत्माके युगपत् (एकैकाल) उगणीसपर्यंत परीषह आवैहै ॥ जातै शय्या १ गमन १ वैठना १ इन तीनमै युगपत् येकही परीषह होयहै अर सीत १ उष्ण १ इनदोनूमै येकही होयहै ॥ ऐसैं उगणीस परीषह युगपत् होयहैं ॥१७॥ सूत्र ॥ सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथाख्यातमितिचारित्र ॥१८॥ अर्थ ॥ अब पांचप्रकारे चारित्र कहैहैं॥ समस्तसावद्ययोगका अभेदकरि जामैत्यागहोय सो सामायिकचारित्र है ॥ १ ॥ प्रमादकेवसतै उपज्या जो दोष ताकरि सयमका लोपमया होय ताका प्रायश्चित्तादि इलाजकरि संयमकौ स्थापन करना सो छेदोपस्थापना है ॥ तथा अहिंसादिक तथा समित्यादि भेदकरना सो छेदोपस्थापना चारित्र हैं ॥ २ ॥ वहुरि प्राणिके पीडाका परिहारकरि जहा विशुद्धताविशेषहोय सो परिहारविशुद्धि संयमहै ॥ परिहारविशुद्धिविषै ऐसाविशेषहै, इसको धारणकरनेवा

जो ग्यारमा वारमा गुणस्थानवरती जीवकै चौदह परीषह होयहैं ॥ क्षुधा १ तृपा १ शीत १ उष्ण १ दशमसक १ चर्या १ शय्या १ वध १ अलाभ १ रोग १ तृणस्प र्श १ मल १ प्रज्ञा १ अज्ञान १ ये चौदह परीषहहैं ॥ अन्य परिषहका अभाव है ॥ १० ॥ सूत्र ॥ एकादशजिने ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ घातियाकर्मका नाशकरि जिन जो अरिहत ताके ग्यारह परिपह हैं भगवान्कै घातियाकर्मकेअभावतै एकहू परीषह नहीहै तथापि वेदनीकर्मके सद्भावतै उपचारकरि ग्यारह परीष कहेहै ॥ ये ग्यार ह परीपाके नाम इसआध्यायसे सोलहवासूत्रमें आगेकहसी ॥ मुख्यपणा करि वेदनीकर्ममै शक्तिकेअभावतै भगवान्कै परीसहदेनेकौ शक्ती नहीहैं ॥ ११ ॥ ॥ सूत्र ॥ वादरसापरायेसर्वे ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ वादरसापरायकहिये प्रमत्तगुणस्था नसे अनिवृत्तिकरण जो नवमगुणस्थान पर्यंत समस्त वाईस परीषहही हैं ॥ १२ ॥ सूत्र ॥ ज्ञानावरणेप्रज्ञाज्ञाने ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ ज्ञानावरणकेहोतै प्रज्ञापरीषह अर अज्ञान परीपह होयहैं ॥ १३ ॥ सूत्र ॥ दर्शनमोहांतराययोर्दर्शनालाभौ ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ दर्शनमोहकेहोतै अदर्शन परीषह होयहै ॥ अतरायकर्मकेउदयतै अलाभप रीपह होयहे ॥ १४ ॥ सूत्र ॥ चारित्रमोहेनाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याशय्याक्रोशयाचना सत्कारपुरस्कारा ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ चारित्रमोहहोतै नग्न १ अरति १ स्त्री १ निषद्या १

यामै प्रधान है ॥ ममत्वका त्याग परिग्रहका त्याग याका अवलंबन हैं ॥ इस धर्मका लाभविना अनादिसंसारमै परिभ्रमण करते जीव दुष्टकर्मके उदयतै उपजे नानादु ख कौं अनुभवै हैं ॥ इस धर्मका लाभहोतै नानाप्रकारके स्वर्गादिकके सुखकी प्राप्तिपूर्वक मोक्षकी प्राप्तिहोयहैं ॥ तातै धर्मभावनाकौ चिंतवन करनेतै धर्ममै अनुरागतै प्रवृत्ति होयहैं ॥१२॥ ऐसैं बारह भावनातै महान्‌संवर होयहैं ॥७॥ सूत्र ॥ मार्गाच्यवन निर्जरार्थंपरिषोढव्या परिषहा ॥८॥ अर्थ ॥ संवरकेमार्गतै नही चिगनेके अर्थि अर कर्मनिर्जराके अर्थि, क्षुधा तृषादि परीषह सहना योग्य हैं ॥८॥ सूत्र ॥ क्षुत्‌पिपासा सीतोष्णदशमसकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाचनालाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञानादर्शनानि ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ मोक्षकेअर्थि क्षुधादि बाईस परीषहसहना योग्य हैं ॥ क्षुधाका परीषह/१/तृषा/१/सीत/१/उष्ण १ दंशमसक १ नग्न १ अरति १ स्त्री १ गमन १ बैठण १ शयन १ क्रोध १ मारनका १ याचना नहीकरना १ लाभ १ रोग १ तृणादिक स्पर्शका १ शरीरके मलादिकका १ सत्कार पुरस्कार करनेका १ बुद्धि नही होनेका १ अज्ञानताका १ अदर्शनका १ ये बाईस परीषहका समभावतै सहना परमसंवर हैं ॥ ९ ॥ सूत्र ॥ सूक्ष्मसांपराय छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥ १० ॥ अर्थ ॥ सूक्ष्मसांपराय अर छद्मस्थवीतराग

मे पडी वज्रकणिकाकीज्यौ अतिदुर्लभ है अर कदाचित् त्रसपणापावै तिनमै वि
कलेंद्रियका प्रचुरपनातै पचेंद्रियपणा पावना जैसें गुणवतमै कृतज्ञपणा पा
वनेकी ज्यौ दुर्लभ है ॥ पचेंद्रियमैंहू तिर्यंचकी वाहुल्यतातै, चोहटमै रत्नरास
पावना ज्यौ मनुष्यपना पावना अत्यतदुर्लभ है ॥ अर मनुष्यभवपायकरिकैहू
जो छूटिजाय तौ फेर मनुष्यपणाकी उत्पत्ति अतिदुर्लभ है जैसें दग्ध भया
वृक्षका फिर हरितहोना जैसें दुर्लभ है तैसे मनुष्यपनापावना अतिदुर्लभ हैं ॥
मनुष्यभवहू पावै तो उसमै उत्तमदेश उत्तमकुल इंद्रियपरिपूर्णता सपदा निरो
गपणा बुद्धि वल सत्सगति इनका पावना उत्तरोत्तर दुर्लभ है अर समस्त येऊपा
वै अर जो साचेधर्मका अवलवन नहीहोय तौ नेत्ररहित मनुष्यकी ज्यौ जन्म व्यर्थ
जाय है अर इतनेकष्टतै धर्महू पाजाय अर फेरहू भोगमै रागीहोना भस्मकेअर्थि गो
सीरस चदनकौ दग्धकरनेकी ज्यौ निष्फल है अर विषयसुखमै विरक्तकैहू तपभाव
ना धर्मप्रभावना समाधिमरण अत्यतदुर्लभ है, समाधिमरण होतेंही वोधलाभ फ
लवान् है ॥ ऐसें चिंतवन करनेतै वोधपाय प्रमादी रहना नहीहोयहैं ॥ ११ ॥ अव
धर्मानुप्रेक्षा कहैहैं ॥ ये जिनेंद्रको उपदेश्यौधर्म अहिंसालक्षण हैं सत्यके आधारहैं
विनय याका मूल हैं। क्षमा याका वल हैं। व्रह्मचर्य याकी रक्षा हैं। कषायका अभाव

य अर वाछित देशकौ प्राप्तहोयहै ॥ तस कर्म आवनेकेद्वार जे आश्रव ताकौ रोकतेसतै अकल्यान नहीहोय ॥ ऐसें चिंतवनकरनेतै संवरानुप्रेक्षा होयहैं ऐसें चिंतवन करनेसे संवरमे नित्यही उद्यमीपणा होयहै तदि मोक्षपदकी प्राप्तिहोयहै ॥ ८ ॥ अव निर्जरानुप्रेक्षा कहैहैं ॥ निर्जरा दोयप्रकार हैं, एकतो आपणा रसदेय निर्जरै है सो सविपाक निर्जरा है, अर तपश्चरण करणेतै, परीषहके जीतनेतै, जो निर्जरा होय सो अविपाक निर्जरा है ॥ सविपाक निर्जरा तौ समस्तसंसारी जीवकै होयहै अर अगामी वधकौ कारण है,तातै त्यागने योग्यहै अर अविपाक निर्जरा मोक्षका कारण है तातै ग्रहण करनेयोग्य हैं ॥ ऐसें निर्जरानुप्रेक्षा चिंतवन करनेते कर्मके निर्जराकेअर्थिही प्रवृत्ति होयहै ॥ ९ ॥ अव लोकानुप्रेक्षा कहैहैं ॥ लोकसस्थानादिकका चिंतवन तथा पापका फल नरक, पुन्यका फल स्वर्ग, इत्यादिक चिंतवन तथा षट्द्रव्यका गुणपर्यायात्मक स्वरूपका चिंतवन सो लोकानुप्रेक्षा है ॥ याके चिंतवनतै समस्त परद्रव्यते अपनास्वरूपकौ भिन्नअनुभवकरि पुन्यपापात्मक लोकतै भिन्न ऐसा मोक्षसाधनमे यत्न करै ॥ १० ॥ अव बोधदुर्लभानुप्रेक्षा कहैहैं ॥ एक निगोदशरीमे सिद्धरासीते अनतगुणे जीव है अर निगोदजीवतै समस्तलोक अतररहित भऱ्या है तथा पचप्रकार स्थावर जीवकरि निरतर भऱ्या है तिनमे त्रसपणा पावना, वालूके समुद्र

है, मलवत् अशुचिका भाजन है, चामकरिढक्या अतिदुर्गंध रसकू नवद्वारकरि झरै है, आश्रितवस्तुकू हू अगाराकाज्यौ आपसमान अशुचि करैहै, स्नान अनुलेपन धूप पुष्पमालादिकरिहूं इस शरीरका अशुचिपणा दूरकरनेकौ नहीसमर्थ होयहै, अनुभवकीयाहुवा सम्यक्दर्शनादिक आत्माके अत्यतशुद्धिता प्रगट करैहै ऐसें चिंतवन करनेतै शरीरतै विरक्तता होयहै अर विरक्तहोयतदि संसारसमुद्रकै तरनेकेअर्थि चित्त धारण करैहैं ॥६॥ अव आश्रवानुप्रेक्षा कहेंहैं ॥ कर्मकेआश्रव इसलोकपरलोकमे नाश करनेवाले है, महानदीके प्रवाह्वत् तीक्ष्णइंद्रिय कषाय अव्रतादिक है, तिनमै स्पर्शनादिक इंद्रियकी आताप करिकेही वनकाहस्ती, वायस, सर्प, पतग, हरिणादिक, कष्टसमुद्रमे प्रवेश करैहै तथा कषाय अव्रतादिकहूं इसहीलोकमे वध, वध, अयश, क्लेशादिककौ उपजावैहै अर परलोकमै वहुतदु खकरि प्रज्वलित नानागतिमे परिभ्रमण करावैहैं ॥ ऐसें आश्रवके दोषकौ चिंतवन करना सो आश्रवानुप्रेक्षा है ॥ ऐसें चिंतवन करनेतै जीवकै उत्तमक्षमादिक परमधर्मविषै कल्याणरूप वुद्धि नही छूटै हैं ॥ ७ ॥ अव सवरानुप्रेक्षा कहैहैं ॥ इंद्रिय कषायादिककरि सकुचित जो आत्मा ताके समस्तदोष काछवाकीज्यौ नहीहोयहैं ॥ जैसें महान्समुद्रमे प्रवेशकरती जो नाव ताके छिद्रकौढाकते जलप्रवेश नही करै, तदि नावमै तिष्ठतापुरुषका नाश नहीहो

त्वानुप्रेक्षाकहेहैं ॥ जन्ममरणके महादु खभोगनेकों मे एकहीहु कोऊ मेरास्वजन परि
वार नाहीहे, एकाकी नरकादिकनिमे जन्मग्रहणकरूंहु अर मरणमे रोगमे दरिद्रमे महा
घोर संकटमे एकाकीहु अर स्वर्ग राज्यादिक विभव भोगनेमेहु मे एकाकीहुं, व्याधि ज
न्ममरणादि दु खहरनेमे कोऊसहाई नहीहे बंधुमित्रादि स्मशानते अधिक नहीजाय
हे, एक अविनासी धर्मही सहाई सहगामीहे ऐसें चिंतवनकरना सो एकत्वानुप्रेक्षा
हैं ॥ ४ ॥ ऐसें चिंतवनकरनेते स्वजननमे प्रीति राग नही वधेंहे परमे द्वेषनही उपजे
तदि परमवीतरागताकों प्राप्तिभया मोक्षके अर्थि यत्न करेंहे ॥ अब अन्यत्वानु
प्रेक्षा कहेंहैं ॥ ये शरीर वधनप्रति मोते येक हे अर लक्षणभेदते मे भिन्नहु, शरीर
इन्द्रियरूप हे मे अतींद्रियरूपहुं, शरीरअज्ञानीहे मे ज्ञानीहु, शरीरअनित्यहे मे
नित्यहु, शरीरआद्यतवानहे मे अनादिअनतहु, संसारमे अनवस्थितरूप परिभ्र
मणकरता जो मे ताके वहुतशरीर व्यतीतभये सोही मे हु, जो शरीरहीते मेरा अन्य
पणा हे तो वाह्यपरिग्रहते मेरा अन्यपणा कैसैनहीहोय ऐसें मनविषे धारन करनेते
शरीरादिकमे वांछा नहीउत्पन्नहोयहे तदि तत्वज्ञान पूर्वक वैराग्यकीवृद्धिहोते अवि
नासी मोक्षसुखकी प्राप्तिहोयहे ॥ ५ ॥ अब अशुचित्वानुप्रेक्षा कहेंहैं ॥ ये शरीर
अत्यतअशुचि हे अतिदुर्गंधरुधिर वीर्यते उपज्या हे अशुचि आहारकरिही वध्या

कोऊ देव दानव मत्र यंत्र तत्र योगिनी यक्ष क्षेत्रपालादि शरण नहीहैं, पुष्टशरीर भो
जनप्रतिसहाइहै, कष्टआये आत्माकौ महादु खउपजावैहै अर वडेयत्नकरि सचयकी
या धन परलोक नहीजायहै, वाधव मित्रादिकहू रोगकौआवतै तथा मरणकौआवतै
नहीरक्षाकरै है, विषयभोग भोजनादिक वढावैहै और दु खमे कोऊअपना नही, कर्म
केउदयतै रोकनेकौ कोऊसमर्थ नही हैं, सम्यक्आचरणकिया धर्मही एक शरण है॥
मृत्युकेआवतै इन्द्रादिक कोऊशरणनही ऐसी भावनाकरना सो अशरणानुप्रेक्षा है ॥
॥ २ ॥ मै अशरणहू ऐसें चिंतवन करनेसे संसारकेपदार्थमे ममत्वकानाशहोय तदि
अर्हत् (सर्वज्ञ) प्रणीतमार्गमै युक्त होयहै ॥ अव संसारानुप्रेक्षा कहैहैं ॥ कर्मके वश
तै ससारी अनादिकालतै पचपरावर्तनरूपकरि परिभ्रमणकरैहै अनेकयोनि जन्म
कुलकोडके सकटमे कर्मकाप्रेर्न्या जीव, पिताहोय माईहोयहै पुत्रहोयहै पोताहोयहै
माता भगनी स्त्री पुत्री होय है, शत्रुकामित्र मित्रकाशत्रु होयहै राजाकारंक रककारा
जा देवकातिर्यंच तिर्यंचकादेव इत्यादिक अनेक परिभ्रमणरूपससारमें कहू स्थिर
ता हैनही अनंतानतकालसू उलट पलटहोय अनेकदु खभोगवैहै ऐसे ससारकास्वरूप
चिंतवनकरना सो ससारानुप्रेक्षाहै ॥ ३ ॥ ऐसें संसारभावनाकूभावनेतै ससा
रकेदुःखतै भयउपजैहै तदि विरक्तहुवा ससारके हननेकेअर्थि यत्न करैहै ॥ अव एक

वचन कहना सो सत्य है ॥५॥ धर्मकी वृद्धिकेअर्थि, छह इंद्रियके विषय अर षटका
यके जीवकी विराधनाकाअभाव सो सयम है ॥६॥ कर्म क्षयके अर्थि, तपीये सो तप
है ॥७॥ संयमीकैयोग्य ज्ञानादिककादान देना सो त्याग है ॥८॥ शरीरादिकमै ममत्व
काअभाव सो अकिंचन्य है ॥ ९ ॥ पूर्वीअनुभवी स्त्रीकास्मरण, कथाश्रवण, अवलो
कनादिकका त्याग सो ब्रह्मचर्य है ॥ स्वस्त्रीमे सतोष, परस्त्रीकात्याग सोही ब्रह्मचर्य
है ॥ स्वस्त्री तथा परस्त्री दोनूका त्याग सो उत्तमब्रह्मचर्य है ॥ १० ॥ ये दशधर्मपरम
संवरके कारण हैं ॥ ६ ॥ सूत्र ॥ अनित्याशरणससारेकत्वान्यत्वाशुच्याश्रवसवर
निर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वास्व्यातत्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ अब द्वाद
शअनुप्रेक्षाका वर्णन करैहैं ॥ अब अनित्यभावना कहैहैं ॥ ये शरीर, इंद्रिय विषयो
पभोग, द्रव्य, है ते जलके बुदबुदावत् है अस्थिर है, मोहतै अज्ञानीस्थीरमानैहै,
संसारमै कोउवस्तुध्रुवनहीं है, एक आत्माका ज्ञान दर्शन स्वभावही ध्रुव हैं ॥ ऐसें
ध्रुवपणा चिंतवनकरना सो अनित्यभावना हैं ॥ १ ॥ ऐसें अनित्यताचिंतवन करने
से, भोगकरिछांडे ऐसें पुष्पमाल्यादिकका वियोगकालमे दुःखनहीउपजे है ॥ अब
अशरणभावना कहैहैं ॥ जैसे, वनमै वलवान क्षुधावान व्याघ्रकरिपकऱ्या मृगकाबच्चा
इसकों कोऊशरणनही तैसें जन्ममरण व्याघ्रके संकटरूप परिभ्रमणकरते प्राणीको,

स्थान योनिस्थानका जाननहारा साधुके सूर्यका उदय होतै,नेत्रनितै च्यारहस्तप्रमाण भूमिकौ अवलोकनकरि, हस्ती घोडा वलध गाडा गाडी मनुष्यकरि मर्द्दलीभूमिविषै, आहार विहार निहारि गुरुवदना तीर्थवंदना इनके निमित्त गमनकरना सो इर्यासमिति हैं ॥ १ ॥ वहुरि पृथ्वीकायकादिकमै आरंभकी प्रेरना रहित, कठोरता निष्ठुरता परपीडादि रहित, हित मित मधुर ऐसा वचनवोलना सो भाषासमिति हैं ॥१॥ छीयालीस दोप, वतीस अतराय, चौदहमल, इनतै रहित, निर्द्दोष आहारका ग्रहणकरना सो येपणासमिति हैं ॥ १ ॥ वहुरि शरीर उपकरणादिककौ देखी सोधि, मेलना लेना सो आदाननिक्षापना समिति हैं ॥१॥ वहुरि नख केश मल मूत्र कफादिककौ शुद्धभूमिकौ देखी क्षेपणकरना सो उत्सर्गसमिति हैं, इसकौ क्षेपणासमिति कहैंहैं ॥१॥५॥

॥ सूत्र ॥ उत्तमक्षमामार्द्दवआर्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणिधर्म ॥२६॥ अर्थ ॥ अव दशधर्म कहैंहैं॥ शरीरकीस्थिति जो आहार ताके अर्थि परघरप्रति गमनकरते जे साधु ताकौ, दुष्टके क्रोधकेवचन हास्य अवज्ञा ताडन शरीरकाघात इत्यादिक होतेहू परिणाममै कलुषताकाअभाव सो उत्तमक्षमा हैं ॥ १ ॥ जातिआदि आठ मदका अभाव सो मार्द्दव हैं ॥ २ ॥ मन वचन कायकी वक्रताकाअभाव सो आर्जव है ॥ ३ ॥ लोभ जनित मलिनताका अभाव सो शौच हैं ॥ ४ ॥ मुनि श्रावककौ सुदर

अथतत्वार्थसूत्रनवमअध्यायप्रारम ॥ सूत्र ॥ आश्रवनिरोधःसंवर ॥ १ ॥ अर्थ ॥
नवीनकर्म आवनेके कारण सो आश्रवहैं ॥ आश्रवका रोकना सो संवर हैं ॥ तिनमै
संसारपरिभ्रमणकू कारण ऐसी, मिथ्यात्व रागादि परणतिरूप क्रियाकात्याग सो
भावसवर हैं ॥ अर भावसंवरपूर्वक कर्मपुद्गलके ग्रहणकरनेका अभावरूपक्रिया सो द्र
व्यसंवर हैं ॥१॥ सूत्र ॥ सगुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरिपहजयचारित्रै ॥ अर्थ ॥ ससा
रकेकारण मिथ्यात्व, रागादिक, इनतै आत्माका रक्षण सो गुप्ति हैं ॥ प्राणीके पीडाका
परित्यागकरिकै आहार विहारादिकके अर्थि, सम्यक्प्रवृत्ति सो समित्ति है॥ शरीरादि
कनास्वभाव चिंतवन करना सो अनुप्रेक्षा है ॥ क्षुधादिक वेदनाकीउत्पत्तिहोतै कर्मनि
र्जराकै अर्थि, समभावतै परिपहका सहना सो परिषहजय हैं ॥ ससारपरिभ्रमणका का
रण जो क्रिया ताकौ त्याग सो चारित्र हैं ॥ ये गुप्ति १ समिति १ धर्म १ अनुप्रेक्षा
१ परिपह १ चारित्र १ यह छहभावतै संवरहोय हैं ॥ २ ॥ सूत्र ॥ तपसानिर्जराच
॥३॥ अर्थ ॥ तपकरि निर्जराहोय हैं, च शब्दतै संवरभी होय हैं ॥३॥ सूत्र ॥ सम्य
ग्योगनिग्रहोगुप्ति ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ संसारसुखकी वाछारहित इन्द्रियसंयमकै अर प्राण
संयमकै निमित्त मन वचन काय इनकी क्रियाका रोकना सो गुप्ति हैं ॥ ४ ॥ सूत्र ॥
ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गा समितय ॥५॥ अर्थ ॥ अब पांच समिति कहैंहैं ॥ जीव

पूर्वी १ देवगत्यानुपूर्वी १ अगुरुलघु १ परघात १ उच्छास १ आताप १ उद्योत १ प्रशस्त विहायोगति १ बादर १ पर्याप्त १ प्रत्येकशरीर १ सुम १ त्रस १ शुभग १ स्थिर १ सुस्वर १ आदेय १ यशकीर्ति १ निर्माण १ तीर्थंकरनाम १ ये सैतीस नामकर्मकी है ॥ बहुरि उचगोत्र १ सातावेदनीय १ ये ४२ पुण्यप्रकृती हैं ॥ २५ ॥ सूत्र ॥ अतोन्यत्पापं ॥ ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ इन पुन्यप्रकृतीते अन्य पापप्रकृति है ॥ ज्ञानावरणकी ५ दर्शनावरणकी ९ मोहनीयकी २६ अतरायकी ५ अर नरकगति, तिर्यंचगति, ऐसी गती २ अर पचेंद्रियविनाजाति ४ संस्थान ५ संहनन ५ अप्रशस्तवर्ण १ रस १ गध १ स्पर्श १ नरकगत्यानुपूर्वी १ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १ उपघात १ अप्रशस्त विहायोगति १ स्थावर १ सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ साधारणशरीर १ अस्थिर १ अशुभ १ दुर्भग १ दु स्वर १ अनादेय १ अयशकीर्ति १ ये चवतीस नामकर्मकी अर असातावेदनीय १ नरकआयु १ नीचगोत्र १ ये ८२ पापप्रकृती हैं ॥ २६ ॥

इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रे अष्टमोध्याय ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥

---

* चारित्रमोहकी २५ दर्शनमोहकी १ ऐसी २६ दर्शनमोहकी सत्वमै ३ है परंतु बंधमै दर्शनमोहकी १ गणीहै

कर्म रसदीये पीछे निर्जराहीने प्राप्तहोय है ॥ २३ ॥ सूत्र ॥ नामप्रत्यया सर्वतोयोग
विशेपात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिता सर्वात्मप्रदेशेष्वनतानंतप्रदेशा ॥ २४ ॥ अर्थ ॥
अव प्रदेशवध कहेंहैं ॥ नाम जे समस्तकर्मकी प्रकृति होनेको कारण, ऐसें सर्वभाव
नमै मन वचन कायके योग इनके विशेषतै सूक्ष्म एकक्षेत्रमै अवगाहकरि तिष्ठते स
मस्तआत्मप्रदेशमै अनत प्रदेशहैं ॥ भावार्थ ॥ एकआत्माका असंख्यातप्रदेश हैं तिस
येकयेक प्रदेशप्रति अनंतानत पुद्गलके स्कध एकएकसमयमै वधरूपहोय तिष्ठै सो प्र
देशवध हैं ॥ ते पुद्गलस्कध कैसे है, समस्तज्ञानावरणादिक मूलप्रकृति तथा उत्तरोत्तर
प्रकृति होनेको कारण हैं, वहुरि ते पुद्गलस्कद कैसे है समस्तत्रिकालवर्ती भावनमै मन
वचन कायरूप योगके निमित्ततै आवैहै अर सूक्ष्महै इंद्रियगोचर नाही ॥ वहुरि
आत्माकेप्रदेश अर कर्मकेप्रदेश क्षीरनीरकी ज्यों एकक्षेत्र अवगाहकरि तिष्ठै हैं ॥२४
सूत्र ॥ सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणिपुण्य ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ सातावेदनीय १ शुभआयु ३
शुभनाम ३७ शुभगोत्र १ ये पुण्यप्रकृति ४२ है सो कहेंहैं ॥ तिनमै तिर्यंचआयु १
मनुष्यायु १ देवायु १ ये तीनशुभआयु प्रकृति हैं ॥ अर मनुष्यगति १ देवगति १
पचेंद्रियजाति १ पाचशरीर ५ तीनआगोपाग ३ समचतुरस्रसंस्थान १ वज्र
ऋपभनाराचसंहनन १ प्रशस्तवर्ण १ रस १ गंध १ स्पर्श १ मनुष्यगत्यानु

रसागरकी ॥ पर्याप्तअवस्थामै उत्कृष्टस्थिति हैं ॥ १५ ॥ सूत्र ॥ विंशतिर्नामगो त्रयो ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ नामकर्म अर गोत्रकर्मकी उत्कृष्टस्थिति वीसकोडा कोडीसागरकी हैं ॥ १६ ॥ सूत्र ॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमान्यायुष ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ आयुकर्मकी उत्कृष्टस्थिति तेतीससागरकी हैं ॥१७॥ अब कर्मकी जघन्य स्थितिबंध कहैंहै ॥ सूत्र ॥ अपराद्वादशमुहूर्तावेदनीयस्य ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ वेदनीयकर्मकी जघन्यस्थिति द्वादशमुहूर्तकी हैं ॥ १८ ॥ सूत्र ॥ नामगोत्रयोरष्टौ ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ नामकर्म अर गोत्रकर्मकी जघन्यस्थिति अष्टमुहूर्तकी है ॥१९॥ सूत्र ॥ शेषाणामंतर्मुहूर्ता ॥२०॥ अर्थ ॥ शेष जे ज्ञानावरण १ दर्शनावरण १ मोहनीय १ आयु १ अंतराय १ ये पाचकर्मकी जघन्यस्थिति अंतरमुहूर्त प्रमाण हैं ॥ ऐसैं एकसमयमै जो कर्मबंधैहै ताकी उत्कृष्टस्थिति तथा जघन्यस्थिति कहीं ॥२०॥ अब अनुभाग कहै हैं ॥ सूत्र ॥ विपाकोनुभव ॥२१॥ अर्थ ॥ जो कर्मप्रकृतिउदयमै आवै ताका रस अनुभवमैआवै सो अनुभवहैं ॥२१॥ सूत्र ॥ सयथानाम ॥२२॥ अर्थ ॥ जैसा प्रकृतिकानाम ताका तैसाही रस देनेका स्वभाव है जैसैं ज्ञानावरणका उदय जिसआत्माकोआवै तिसकौ ज्ञानकाअभावहोय अर दर्शनावरणीय कर्मके प्रकृतिका उदयआवै तो दर्शन नही होनेदे तैसैं समस्तकर्मका स्वभाव हैं ॥ २२ ॥ सूत्र ॥ ततश्चनिर्जरा ॥ २३ ॥ अर्थ ॥

तोहू उत्साहका सामर्थ्य नहीहोय सो वीर्यांतरायकर्म है ॥ १ ॥ ऐसें अंतरायकर्मकी पाचप्रकृति है ॥ ऐसी कर्मोंकी मूलप्रकृति आठ अर उत्तरप्रकृति एकसौअठतालीस कहीं ॥ १३ ॥ अब एकसमयमे जो कर्मबधैहै ताकी स्थितिके कालकौ कहेंहैं ॥ सूत्र ॥ आदितस्तिसृणामतरायस्यचत्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्य परास्थितिः ॥१४॥ अर्थ ॥ ज्ञानावरण १ दर्शनावरण १ वेदनीय १ अर अंतराय१ये च्यारकर्मकी उत्कृष्टस्थिति तीसकोडाकोडीसागर प्रमाण हैं ॥ सो उत्कृष्टस्थितिबंद मिथ्यादृष्टि सज्ञीपचेंद्रिय पर्याप्तजीवके होय हैं ॥ एकेंद्रियपर्याप्तके एकसागरके सातभाग कीजे तिनमै तीनभाग स्थिति हैं ॥ पचीससागरके सातभागमे तीनभागस्थिति द्विंद्रीयपर्याप्तके हैं ॥ त्रींद्रियपर्याप्तके पचाससागरके सातभागमे तीनभाग हैं ॥ चतुरिंद्रियपर्याप्तके सो सागरके सातभागमे तीनभाग हैं ॥ असंज्ञीपचेंद्रीके एकहजारसागरके सातभागमे तीनभाग हैं ॥ पर्याप्तिसज्ञीपचेंद्रीके अंत कोडाकोडीसागर प्रमाण हैं ॥ एकेंद्रियादिकके पूर्वोक्त पल्यकै असंस्यातभाग हीन जानना ॥१४॥ सूत्र ॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ मोहनीकर्मकी उत्कृष्टस्थिति सत्तरकोडाकोडीसागरकी मिथ्यादृष्टीसज्ञीपर्याप्तीकैंहैं ॥ येकेंद्रियके येकसागरकी है ॥ द्वींद्रियके पचीससागरकी ॥ त्रींद्रियके पचाससागरकी ॥ चतुरिंद्रियके सो सागरकी ॥ असैनीपचेंद्रियके हजा

स्थानविषै स्थिरभावरूप (आंगोपांग दृढ) होय सो स्थिरनाम है ॥ १ ॥ जाके उदयतै
रसादि धातु उपधातु अस्थिर होय सो अस्थिरनामकर्म है ॥ १ ॥ जाके उदयतै
प्रमा सहित शरीरहोयसो आदेयनामकर्म है ॥ १ ॥ जाके उदयतै प्रभारहित
शरीरहोय सो अनोदय नामकर्म है ॥ १ ॥ जाकै उदयतै पवित्रगुण लोकमैप्रगट
होय सो यशस्कीर्तिनाम है ॥ १ ॥ जाकै उदयतै अवगुण प्रगटहोय सो अयशकी
र्तिनाम है ॥ १ ॥ जाके उदयतै अचिंत्यविभूति विशेषसहित अर्हंतपणाका कारण
प्राप्तहोना सो तीर्थंकरनाम है ॥ १ ॥ ऐसैं तिराणवेप्रकार नामकर्मकी प्रकृति कहीं
॥ ११ ॥ सूत्र ॥ उच्चैर्नीचैश्च ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ जाकै उदयतै लोकपूज्यकुलमै जन्महो
य सो उच्चगोत्र है ॥ १ ॥ जाकेउदयतै निंद्यकुलमै जन्महोय सो नीचगोत्र है ॥ १ ॥
ऐसैं दोयप्रकार गोत्रकर्म कह्या ॥१२॥ सूत्र ॥ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणां ॥१३॥
अर्थ ॥ अब अंतरायकर्मकी पांचप्रकृतीकहैहैं ॥जाकेउदयतै देनेकी इच्छाकरै तोहू दी
यानहीजाय सो दानांतराय है ॥१॥ जाके उदयतै लेनेकी इच्छाहोय तोहू लाभ नही
होय सो लाभांतराय है ॥ १ ॥ जाकेउदयतै भोगनेकी इच्छाकरै तोहू भोगीनहीसकै
सो भोगांतराय है ॥ १ ॥ जाकै उदयतै उपभोग करनेकी इच्छा करै तोहू उपभोग न
हिकरिसकै सो उपभोगांतराय है ॥१॥ जाकै उदयतै कोऊ कार्य करनेकों उत्साहकरै

ति हैं ॥ बुरीरीति गमन सो अप्रशस्तविहायोगति हैं ॥ जाके उदयतै एकशरीर येकआत्मातैभोगिये ऐसाशरीरपावे सो प्रत्येक शरीरनामकर्म है ॥१॥ जाके उदयतै वहुतजीवकै भोगनेयोग्य एकशरीरपावै सो साधारण शरीरनामकर्म है ॥१॥ जाके उदयतै द्विइंद्रयादिकमै जन्म होय सो त्रसनामकर्म हैं ॥१॥ जाके उदयतै एकेंद्रियमै उत्पत्तिहोय सो स्थावरनाम हैं ॥१॥ जाके उदयतै अन्यको प्यारालागै प्रीतिउपजावै सो सुभगनाम है ॥ १ ॥ जाकेउदयते रूपादि सुंदरगुणहोय तोऊ अन्यकै अप्रीतिउपजावै सो दुर्भगनाम है ॥१॥ जाके उदयतै मनोज्ञस्वर होय सो सुस्वरनाम है ॥१॥ जाके उदयतै अमनोज्ञ स्वर होय सो दुःस्वरनाम है ॥१॥ जाके उदयतै मस्तक मुख हस्त पादादि शरीरकेअवयव रमणीक सुंदर होय सो शुभनाम है ॥१॥ जाकेउदयते मस्तकादि शरीरके अवयव असुंदरहोय सो अशुभनाम है॥१॥ जाके उदयतै पृथ्वी, पहाड, अग्नि, जल, वस्त्र, पटलादिकमै प्रवेशकरतै नहीरुकनेवाला सूक्ष्म शरीरउपजै सो सूक्ष्मशरीरनाम है ॥ १ ॥ जाके उदयतै अन्यको बाधाकरै रोकै ऐसा शरीरउपजै सो वादरशरीरनाम है ॥१॥ जाके उदयतै आहारआदिक छहपर्याप्त पूर्ण करै सो पर्याप्तनाम है ॥१॥ जाके उदयतै एकहू पर्याप्त पूर्णनहीकरै अपर्याप्तअवस्थामै मरणकरै सो अपर्याप्तनाम है ॥१॥ जाके उदयतै रसादिक धातु उपधातु अपनेअपने

धीशरीर योग्यपुद्गल नहीग्रहणकरै तवतक कर्मसहित आत्माका आकार, पूर्वला मनुष्यशरीरसदृश रहता देवपर्यायके सन्मुख होय है, ताकौ देवगत्यानुपूर्वी कहिये ॥ ऐसे नामकर्मकी पिंडप्रकृति ६५कही॥ अव नामकर्मकी आपिंडप्रकृति२८कहेंहैं॥जाकेउदयतै लोहपिंडकी ज्यौ भान्याहोयकरि तलै गिरपडैनही तथा आकके फूफदाकी ज्यौ हलकाहोय उडिजायनही सो अगुरुलघु नामकर्मप्रकृती हैं ॥ १ ॥ यो अगुरु लघु शरीरसवधी नामकर्मको भेद हैं ॥ अगुरुलघुनामा स्वाभाविक द्रव्यका स्वभाव नाही हैं ॥ जाके उदयतै अपनेशरीरके अगकरि अपनाशरीरका घात होय सो स्वघात नामप्रकृति है ॥ १ ॥ जैसें वडेश्रृग, लंवेस्तन, वडाउदर, इनितै आपकाही घात होय है ॥ जाके उदयतै अपने अगतै परका घात होय सो परघात नामकर्म हैं ॥१॥ जैसे तीक्ष्णश्रृग, तीक्ष्णनख, सर्पकैडाढ, विंचू, ये परके घातक है ॥ जाके उदयतै आतापमय शरीरपावै सो आतापनामप्रकृती है ॥ १ ॥ सो सूर्यके विमानके है पृथ्वीकाय जीवकेही होय हैं ॥ जाकै उदैते उद्योतरूपशरीर पावै सो उद्योतनामकर्म है १ ॥ सो चद्रविमानकेहै पृथ्वीकाय जीवकै तथा आग्याआदिजीवकै हैं ॥ जाकेउदयतै उश्वास आवै सो उश्वासनामकर्म है ॥१॥ जाके उदयतै आकाशविषै गमनविशेपहोय सो विहायोगति है ॥ १ ॥ शोभनीक गमन होय सो प्रशस्तविहायोग

रि जामे हाडकी संधि, छोटे कीलेकरि सहित होय सो कीलकसंहनन हैं ॥ १ ॥
बहुरि जामे हाडकी संधिमे अंतरहोय, चौगिरद बडी छोटी नस लिपटीहोय, मासादि
कतै आच्छादित होय सो असंप्राप्तासृपाटिक संहनन है ॥ १ ॥ सो ये संहनन मनु
ष्य अर तिर्यंचनिके होय है ॥ देव नारकी एकेंद्रिय इनके हाड नही, तदि संहनन
कैसें होय ॥ जिसके उदयतै शरीरके स्पर्शउपजे सो स्पर्शनामकर्म आठप्रकार हैं सो
कहैंहैं ॥ कर्कश १ कोमल १ भार्‍यो १ हलको १ सचिक्कण १ रूक्ष १ शीत १ उष्ण
१ ॥ जाकै उदयतै शरीरमै रस निपजे सो रसनामकर्म पांचप्रकार है सो कहैंहैं ॥
तीक्ष्ण,१कटुक,१मधुर,१आम्ल,१कषाय१॥ जाके उदयतै शरीरमै गंध निपजे सो गं
धनामकर्म दोयप्रकार है ॥ सुगंध,१दुर्गंध १॥ जाकेउदयतै शरीरको वर्ण प्रगटहोय
सो वर्णनामकर्म पांचप्रकार हैं ॥ सो कहैंहैं ॥ कृष्ण,१नील,१स्वेत,१रक्त,१हरित१॥
अब आनुपूर्वीनामकर्म च्यारप्रकार हैं सो कहैंहैं ॥ जाकेउदयतै मरण हुवा पाछे नवी
नशरीरके योग्यपुद्गलवर्गना ग्रहण नहीकरै जबतक पूर्वलाशरीरका आकार बन्यार
है सो आनुपूर्वनामाकर्म च्यारप्रकार हैं ॥ नरकगतिअनुपूर्वी १ तिर्यंचगति अनुपूर्वी
१ मनुष्यगतिअनुपूर्वी १ देवगतिअनुपूर्वी १ ॥ इन आनुपूर्वीकाउदय तीनसमय
उत्कृष्ट रहैंहैं ॥ जैसें, मनुष्य मरणकरि देवगतीके सन्मुखजाय तदि जबतक देवसंबं

औदारिकादि शरीरके आकृति उपजै सो संस्थाननाम छहप्रकार हैं ॥ जो ऊपरि नीचे समान विभागरूप शरीरके अंगउपागमे आकारहोय सो सुदर मर्यादरूप अंग होय सो समचतुरसंस्थान हैं ॥१॥ जिस शरीरकेपुद्गल ऊपरले वडेहोय नीचेकेछोटे (वडके वृक्षकी ज्यों) होय सो न्यग्रोधपरिमंडल सस्थान हैं ॥१॥ जिस शरीरके पुद्गल वाम्बीकी ज्यो नीचे विस्ताररूप होय ऊपर सकोचरूप होय सो स्वातिकसस्थान हैं ॥ ॥ १ ॥ जाकी पीठ बीचमे वडीहोय, ऊपर, नीचे, हलकाहोय सो कुब्जकसंस्थान हैं ॥ ॥ १ ॥ जाकै हस्तपादादिकअग छोटेहोय उदर मस्तक वडाहोय सो वामनसंस्थान हैं ॥१॥ जिस शरीरके समस्त अग उपाग नीचे ऊचे घाटिवादि विडरूप होय सो हुड कसस्थान हैं ॥ १ ॥ जिसके उदयतै हाडका वधानमे विशेष होय सो सहनननाम हैं सो छहप्रकार हैं ॥ जिसशरीरमे सहननकहिये हाड अर ऋषभकहिये नसके वेष्टन अर नाराचकहिये कीले ये वज्रमय होय सो वज्रऋषभनाराचसहनन हैं ॥१॥ अर जामे हाड अर सधिके कीलातौ वज्रमय होय अर नशके वधन वज्रमय नहीहोय सो वज्रना राचसहनन हैं॥१॥वहुरि जाकै वज्र विशेषण रहित नाराचकहिये कीली, तिनकरि कीलि त हाडकी सधिहोय सो नाराचसहनन है ॥१॥ वहुरि जामे हाडकीसंधिमे कीलेआधे होय एकतरफ होय, दूजे तरफ नही होय सो अर्द्धनाराचसहनन हैं ॥ १ ॥ वहु

है और अपिंडप्रकृति २८ है ॥ अव पिंडप्रकृतीकेनाम कहैंहैं ॥ जाके उदयतै आत्मा भवातरको जाय सो गति हैं ॥ गति च्यारप्रकार हैं ॥ नरकगति १ तिर्यंचगति १ मनुष्यगति १ देवगति १ वहुरि जिसविषै अव्यभिचारिसमान भावकरि एकतारूप भया जो अर्थका स्वरूप सो जाति हैं ॥ जाति पाचप्रकार हैं ॥ एकइंद्रियजाति १ वेइंद्रियजाति १ तीन इंद्रियजाति १ चार इंद्रियजाति १ पाच इंद्रियजाति १ जाकैउदयतै आत्माकै शरीरउपजै सो शरीरनामकर्म है सो शरीर पाचप्रकार हैं ॥ औदारिकशरीर १ वैक्रियकशरीर १ आहारकशरीर १ तैजसशरीर १ कार्माणशरीर १ जाकैउदैतै अंग उपाग उपजै सो आगोपाग हैं सो तीनप्रकार हैं ॥ औदारिकआगोपाग १ वैक्रियक आगोपाग १ आहारकआगोपाग १ जाकैउदयतै नेत्र करणादिक यथास्थानहोय सो स्थान कर्म हैं ॥१॥ यथाप्रमाणहोय सो निर्माणकर्म हैं १॥ जाकै उदयतै औदारिकादिक शरीरकेपुद्गलका परस्परप्रवेशरूप वधान होय सो वधन हैं॥ताके पाचभेद हैं ॥ औदारिकवधन १ वैक्रियवधन १ आहारकवधन १ तैजसवधन १ कार्माणवधन १ जाकै उदयतै औदारिकादि शरीरके पुद्गल परस्पर अनुप्रवेशतै इकसार साफ होजाय छिद्र रहित मिलिजाय सो सघातनामकर्म हैं ॥ संघात पांचप्रकार हैं ॥ औदारिकसंघात १ वैक्रियकसघात १ आहारकसंघात १ तैजससंघात १ कार्माणसंघात १ जाकैउदयतै

करावनेवाला, अनतानुवधीहै, जातै अनत ससारका कारण मिथ्यात्वभाव होय सो अनतानुवधी है सो क्रोध, मान, माया, लोभ, ऐसे च्यार प्रकार हैं ॥ ४ ॥ जाके उदयतै एकदेशत्यागरूप (श्रावककेव्रत) किंचित्मात्रभी नहीकरनेदे सो अप्रत्यास्यानावरणी क्रोध मान माया लोभ ये चारकपाय हैं ॥ ४ ॥ वहुरि जाकैउदयतै सकलसयमकौं नहीग्रहणकरिसकै सो प्रत्यास्यानावरणी क्रोध मान माया लोभ हैं ॥४॥ जाकेउदयतै सयमभी रहै अर शुद्धस्वभावमै लीन नहीहोयसकै सो संज्वलन क्रोध मान माया लोभ है ॥ ४ ॥ ऐसें सोलहप्रकार कपाय कहें ३।९।१६ ऐसें अठाईसप्रकार मोहनीकर्मकी प्रकृती कहीं ॥ ९ ॥ सूत्र ॥ नारकतैर्यग्योनिमानुपदैवानि ॥ १० ॥ अर्थ ॥ आयुकर्मके चारभेद कहेहैं ॥ नरकविषै उपजनेका कारण सो नरकआयु हैं ॥ १ ॥ तिर्यंचभवमै उपजनेका कारण तिर्यंचआयु हैं ॥ १ ॥ मनुष्यभवमै उपजनेका कारण मनुष्य आयु हैं ॥ १ ॥ देवभवमै उपजनेका कारण देवआयु हैं ॥ १ ॥ १० ॥ सूत्र ॥ गतिजातिशरीरागोपागनिर्माणवधनसघातसंस्थानसहननस्पर्शरसगधवर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतय प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययश कीर्तिसेतराणितीर्थंकरत्वच ॥ ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ अव तिराणवैप्रकार नामकर्मकी प्रकृतीकहे हैं ॥ पिंडप्रकृति ६५

सो मिथ्यात्व हैं ॥ १ ॥ तत्वार्थका श्रद्धान अश्रद्धान दोऊमिल्याहुवा होय सो सम्यक्मिथ्यात्व हैं ॥ १ ॥ सम्यक्तको विगाडने समर्थतो नहीं, परतु श्रद्धानकौ मलीन करै सो सम्यक्प्रकृतिमिथ्यात्व हैं ॥ १ ॥ अव अकषायके नवप्रकार कहै हे ॥ जाकैउदयतै हास्यप्रगटहोय सो हास्य हैं ॥ १ ॥ जाकेउदयतै वस्तुमें आसक्त होना सो रति हैं ॥१॥ जाकैउदयतै कछुही सुहावै नही सो अरति हैं ॥१॥ जाकेउदयतै इष्टका वियोगादितै परिणाममै खेदितहुवा शोचकरना सो शोक हैं ॥ १ ॥ जाकेउदयतै दुखकारी पदार्थतै उद्वेगरूप डरना सो भय हैं ॥ १ ॥ जाकेउदयतै आपना दोष छिपावना अर परकादोष देखि परिणाम मलीन करना सो जुगुप्सा हैं ॥ १ ॥ जाकैउदयतै स्त्रीसंवधीभाव पावना सो स्त्रीवेद हैं ॥ १ ॥ जाकेउदयतै पुरुषसंवधीभाव होना सो पुरुषवेद है ॥ १ ॥ जाकेउदयतै नपुसकसवंधीभाव पावना सो नपुसकवेद है ॥१॥ अव चारित्रमोहनीके सोलहप्रकार कहैंहैं ॥ जाकैउदयतै सर्वथा एकातरूप असत्य तत्वमै प्रीति होय, अनेकातरूप सत्य तत्वतै द्वेषभाव होय, असत्यकौ सत्यथापि पक्षकरै, अपनाअसत्यार्थ तत्वकौ सत्यार्थ माननेमै अभिमान करै, पर्यायादिकामै ममताकरावने वाला, अन्यायमै न्यायरूप प्रतीतिकरावनेवाला, अपनाझूठापदस्थ, कुत्सितआचरण, विपरीतज्ञान इनमै सत्यपणाका उच्चपणाका मद

त्माने चलायमानकरै तथा बैठेहूंके नेत्रमै शरीरमै विकारकरै सो प्रचला हैं ॥१॥ वहुरि सोई फेरिप्रवर्तें सो प्रचलाप्रचला हैं ॥१॥ जिसमै सोवतेंहू पराक्रम सामर्थ्य प्रगटहोय, सूताहि उठि कछुकार्यकरैफेर सोवे अर कार्यकीया ध्यानमै नहिरहै जो मै कछुकिया, ऐसें निद्राकौ स्त्यानग्रद्धी कहीये सो स्त्यानग्रद्धिदर्शनावरण हैं ॥१॥ ऐसें नवप्रकार दर्शनावरणीय प्रकृति जो स्वभाव कह्या ॥७॥ सूत्र ॥ सदसद्वेद्ये ॥८॥ अर्थ ॥ वेदनीकर्मकी दोय प्रकृती है सो कहेहैं॥ एक सातावेदनीय एक असातावेदनीय ॥ जाकाउदयतै देवादिक गतीमै, शरीर, मन, इनसंवधी सुखप्राप्तहोय सो सातावेदनीय हैं ॥ जाकेउदयतै नरकादिकमै अनेकप्रकार दु ख अनुभवै सो असातावेदनीय हैं ॥८॥ सूत्र ॥ दर्शनचारित्रमोहनीयाकपायाकपायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवपोडशभेदा सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकपायकपायौहास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुनपुंसकवेदा अनतानुवन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकश क्रोधमानमायालोभा ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ अव मोहनीयकर्मकी अठाईसप्रकृती है सो कहेहैं ॥ दर्शनमोहनीयके तीनप्रकार हैं अर च्यारित्रमोहनीयके पचवीसप्रकार हैं ॥ च्यारित्रमोहनीमै अकपायवेदनी नव प्रकार हैं, कपायवेदनी सोलहप्रकार हैं ॥ अव दर्शनमोहनीके तीनप्रकार कहे हैं ॥ मिथ्यात्व, सम्यक्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृतीमिथ्यात्व ॥ तत्वार्थका श्रद्धान नाही

त्वारिंशद्विपञ्चभेदायथाक्रम ॥ ५ ॥ अथ ॥ ज्ञानावरणके पाचभेद हैं ॥ दर्शनावरणके नवभेद हैं ॥ वेदनीयकर्मके दोयभेद हैं ॥ मोहनीकर्मके अठाईसभेद है ॥ आयुक र्मके च्यारभेद हैं ॥ नामकर्मके तिरानवैभेद है ॥ गोत्रकर्मके दोयभेद हैं ॥ अतरायकर्म के पाचभेद है ॥ ५ ॥ सूत्र ॥ मतिश्रुतावधिमन पर्ययकेवलाना ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ अब ज्ञानावरणके पाचभेद कहैहैं ॥ मतिज्ञानकू आच्छादन करै सो मतिज्ञानावरण हैं ॥१॥ श्रुतज्ञानकौ आच्छादन करै सो श्रुतज्ञानावरण हैं ॥ १ ॥ अवधिज्ञानकौ आच्छादन करै सो अवधिज्ञानावरण हैं ॥ १ ॥ मन पर्ययज्ञानकौ आच्छादन करै सो मन पर्ययज्ञानावरण हैं ॥ १ ॥ केवल ज्ञानको आच्छादन करै सो केवलज्ञानावरण हैं ॥ १ ॥ ॥ ६ ॥ सूत्र ॥ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानानिद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यान गृद्धयश्च ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ दर्शनावरणीय कर्मके नवभेद कहैहैं ॥ नेत्रइन्द्रियद्वारे दर्शन कौ रोकै सो चक्षुदर्शनावरण हैं ॥ १ ॥ अन्य च्यारइन्द्रियद्वारे, रसन स्पर्शन घ्राण कर्ण, इनके विषयकौ रोकै सो अचक्षुदर्शनावरण हैं ॥ १ ॥ अवधिदर्शनकौ रोकै सो अवधिदर्शनावरण हैं ॥ १ ॥ केवलदर्शनकौ रोकै सो केवलदर्शनावरण हैं ॥ १ ॥ मद खेद ग्लानि दूरकरनेकौ सोवना सो निद्रा हैं ॥ १ ॥ बहुरि तिसनिद्राका ऊपरा ऊपर आवना सो निद्रानिद्रा हैं ॥१॥ जो शोक श्रम मद ग्लानि इनतें उपजी निद्रा आ

दु खरूप वेदना करानेका हैं ॥ दर्शनमोहनीयकर्मका स्वभाव स्वतत्वका परतत्वका श्रद्धान नहींहोनेदे ॥ चारित्रमोहनीयकर्मका स्वभाव संयमरूप नहींहोनेदे ॥ आयु कर्मका स्वभाव भवमै स्थिरकरनेका हैं ॥ नामकर्मका स्वभाव नारकादिकका शरीरादिरूप नामधरानेका हैं ॥ गोत्रकर्मका स्वभाव ऊच नीच स्थानादिक कहावनेका हैं ॥ अतरायकर्मका स्वभाव दानादिकमै विघ्न करनेका हैं ॥ वहुरि जो कर्म जितनेकाल अपनाकर्मका स्वभावकौ नहीछोडै ताकौ स्थितिकहीये ॥(उदाहरण)॥ जैसैं छेली गाय, भैसी, इत्यादिकका दुग्ध जितनेकाल अपनेमधुरस्वभावकौ नहींछोडै सोही स्थिति है ॥ तैसैं ज्ञानावरणादिक अर्थकेनहिजाननेरूपस्वभावतै नहींछूटै सो स्थिति हैं ॥ वहुरि कर्ममै रस देनेकी शक्ति सो अनुभाग हैं, जैसैं छेली गाय भैसी इत्यादिकका दुग्धमै तीव्र मद जो रस चिक्कणता मिष्टता होहैं, तैसैं कर्ममै जो तीव्र मदादिसामर्थ्य सो अनुभागवध हैं ॥ याहीकौ अनुभव कहिये हैं ॥ वहुरि कर्मभावरूप परिणये जे पुद्गलस्कंध तिनके परमाणूकी जो गिणती सो प्रदेशवध हैं ॥ ३ ॥ सूत्र ॥

अद्योज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रातराया ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ आद्यजो प्रकृतिवध, सो ज्ञानावरण १ दर्शनावरण १ वेदनीय १ मोहनीय १ आयु १ नाम १ गोत्र १ अतराय १ ऐसैं अष्टभेदरूप हैं ॥ ४ ॥ सूत्र ॥ पंचनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विच

अथतत्वार्थसूत्रअष्टमअध्यायप्रारभ ॥ सूत्र ॥ मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगानबंधहेतव ॥१॥ अर्थ ॥ मिथ्यादर्शन १ अविरत १ प्रमाद १ कषाय १ योग १ ये पाच, वंधके कारण हैं ॥ तत्वार्थका अश्रद्धान सो मिथ्यात्व है, मिथ्यात्वभाव पाच प्रकार है ॥ सो कर्मवधका कारण है ॥ पांचइन्द्रियकाविषय अर छट्ठामनका विपय इनकौ नहि रोकना अर छहकायकेजीवकी दयाका अभाव ये वाहरअविरत हैं-, ते अविरत कर्मवंधके कारण हैं ॥ अर विकथादिक प्रमाद करके स्वरूपकाभूलना सो वधका कारण हैं ॥ अर क्रोध मान माया लोभ ये चारप्रकारकेकषाय ते वधके कारण हैं ॥ अर मन वचन कायके योग ते कर्मवंधके कारण है ॥ १ ॥ सूत्र ॥ सकषायत्वाजीन कर्मणोयोग्यान्पुद्गलानादत्तेसबंध ॥ २ ॥ अर्थ ॥ कषायसहितपनातै यो जीव कर्मके होनेयोग्य पुद्गलकौ ग्रहणकरै सो वध हैं ॥२॥ सूत्र ॥ प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधय ॥३॥ अर्थ ॥ जीव जो कर्मवंधकौ प्राप्तहोय हैं सो प्रकृति जो स्वभाव ताकौलिये वधे हैं, जैसी निंवकी प्रकृति कडवी हैं गुडकीप्रकृती मिठी हैं, तैसाही आठौकर्मके प्रकृतीका स्वभाव जूदाजूदा हैं ॥ ज्ञानआवरणीयकर्मके प्रकृतीका स्वभाव ऐसाहै, पदार्थका जानपना नहीहोनेदे ॥ अर दर्शनावरणीयकर्मके प्रकृतीका स्वभाव ऐसाहै, पदार्थका सामान्यअवलोकन हू नहींकरनेदे ॥ वेदनीकर्मका स्वभाव, सुखरूप

नेवाली उत्तमवस्तु पात्रदानदेनैयोग्य द्रव्य हैं॥ अब दातारके सातगुणकहै हैं॥ दान देय, इसलोकपरलोकमै धन, सपदा, यश, कीर्ति इनकी नहीवाछाकरना सो ये निरपेक्ष नामा दातारका प्रथम गुण है १ क्षमा १ कपटरहितता १ आदेशभावकाअभाव १ विषाद रहितपणा १ हर्षितपणा १ निर्हंकारीपणा १ ये सप्तगुण दातारके हैं ॥ अब पात्रके तीनभेद कहैंहैं ॥ रत्नत्रयके धारकमुनी, उत्कृष्ट पात्र है ॥ व्रतसहित श्रावक, मध्यमपात्र है ॥ व्रतरहित सम्यक्तसहित अव्रतसम्यक्दृष्टी, जघन्यपात्र हैं ॥ दानदेनेके योग्य तीन प्रकारके पात्र हैं॥ ऐसें दानयोग्य विधि, द्रव्य, दात्र, पात्र, कहैं ॥ इनमै जो नानाप्रकारके विशेषहै तिनके विशेषतै पुण्यमै विशेष है ॥ उदाहरण ॥ जैसे पृथ्वी जल पवनादि विशेषतै फल विशेष होय तैसें जानना ॥३९॥ इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेसप्तमोध्याय ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



च अतीचार कहेंहैं ॥ संन्यासग्रहणकरके जीवनेकीइच्छा सो जीविताशसानामाअती
चार हैं ॥१॥ शीघ्र मरण चाहना सो मरणाशसाअतीचार हैं ॥ १ ॥ पूर्वकालमें जिस
मित्रसहित क्रीडाकरीथी तिसका स्मरणकरना सो मित्रानुरागनामाअतीचार हैं
॥ १ ॥ पूर्वेअनुभव किये जे इंद्रियजनितसुख तिनका वारंवार चिंतवन करना सो
सुखानुवंधनामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ आगै भोगनकी वांछारूप चिंतवन करना सो
निदान वंधनामाअतीचार हैं॥१॥ ऐसें पांचअतीचार सल्लेखनाके कहें॥३७॥ सूत्र॥
अनुग्रहार्थंस्वस्यातिसर्गोदान ॥ ३८ ॥ अर्थ ॥ अपना अनुग्रहतो पुन्य संचयकरना
हैं अर परजो पात्र तिसकै सम्यग्ग्यानादिककी वृद्धिहोनाहै, ऐसे अपने अर परके
उपकारकेअर्थि द्रव्यका त्याग करना सो दान जानना ॥ ३८ ॥ सूत्र ॥ विधिद्रव्यदातृ
पात्रविशेपात्तद्विशेष ॥३९॥ अर्थ ॥ नव प्रकार विधि कहेंहैं ॥ पात्र आये तिसको ति
ष्ठतिष्ठ ऐसें आदरपूर्वक वचन कहना सो प्रतिग्रह हैं १ उच्चस्थानदेना १ चरणको प्रासु
क प्रमानीक जलतें धोवना १ प्रासुकद्रव्यतै पूजना १ नमस्कारकरना १ मनकीशुद्धता
१ वचनकीशुद्धता १ कायकीशुद्धता १ भोजनकीशुद्धता १ ये नवप्रकार भक्तितें देना
सो विधि हैं॥वहुरि जिसवस्तुतें राग, द्वेष, असंयम, मद, दु ख, भय, प्रमाद, रोगादिक
नहीउपजै ऐसी वस्तु तपस्वीको देना अर तपकी स्वाध्यायकी वीतरागताकी वृद्धिकर

सो स्मृत्यनुपस्थानअतीचार हैं ॥ १ ॥ ये पाचअतीचार प्रोषधोपवासके हैं ॥ ३४ ॥ सूत्र ॥ सचित्तसंबंधसन्मिश्राभिषवदु पक्काहारा ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ जीवसहितवस्तु हैं सो सचित्तवस्तु हैं सचित्ततै भिड्यारह्याहोय सो सचित्तसबंध हैं, सचित्तसू मिल्याहोय सो सन्मिश्र हैं, इनिविषै प्रमादते सेवन ॥ १ ॥ तथा अतीभूखतै सेवन ॥ १ ॥ तथा तीव्र प्रीतितै सेवनेमै प्रवृत्तिकरै ॥ १ ॥ तीनअतीचार तो ये हैं ॥ अर पुष्टरसका भोजनकरना ॥ १ ॥ अर भलेप्रकार पक्यानही ऐसैंआहारादिकका भोजनकरना ॥ १ ॥ ये पाचअतीचार भोगोपभोगपरिमाणव्रतके हे ॥ ३५ ॥ सूत्र ॥ सचितनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्य्यकालातिक्रमा ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥ सचित्त जो कमल पत्रादिकमै धरयाहुवा आहार देना सो सचित्तनिक्षेपनामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ सचित्ततै ढक्याहुवा भोजन साधुकौंदेना सो सचित्तपिधानअतीचार हे ॥ १ ॥ अन्यपुरुपकादान आपनेनामसे देना सो परव्यपदेशनामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ अन्यदातारकेगुण सहसकैनाही तथा आदररहित देना सो मात्सर्यनामअतीचार हैं ॥ १ ॥ कालका विलंबकरि अकालमै देना सो कालातिक्रमनामाअतीचार हे ॥१॥ ये पाचअतीचार अतिथिसंविभागव्रतके हैं ॥३६॥ सूत्र ॥ जीवितमरणाशसामित्रानुरागसुखानुबंधनिदानानि ॥ ३७ ॥ अर्थ ॥ सल्लेखनाकेपा

माअनर्थदंडहैं ॥ १ ॥ धीटपणातै वहुतप्रलाप वकवादकरना सो मोखर्यनामाअती
चार है ॥ १ ॥ विचाररहित प्रयोजनतै अधिकपनाकरि दौडना खोदना कूदना चा
लना सो असमीक्ष्याधिकरणनामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ जितना अर्थकरि अपना भोग
उपभोग सधै सो अर्थ, तातै अधिकका सग्रहकरना सो उपभोगपरिभोगनर्थक्यना
माअतीचार हैं ॥ १ ॥ ये पाचअतीचार अनर्थदंड विरतिनामाव्रतके हैं ॥३२॥ सूत्र॥
योगदु प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ मन वचन कायके योग
इनतीनूंकी खोटीप्रवृतिरूपकरना सो तीनअतीचार तो ये हैं ॥ ३ ॥ उत्साह रहित
अनादरतै सामायिक करना सो अनादर अतीचार है ॥ १ ॥ अर पाठकरनेका तथा
क्रियाका भूलजाना सो स्मृत्यनुपस्थाननामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ ये पांचअतीचार
सामायिकके हैं ॥ ३३ ॥ सूत्र ॥ प्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणाना
दरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥३४॥ अर्थ ॥ यहा जीवहै कि नही, ऐसैं विनादेख्या तथाको
मल उपकरणतै विनाझाड्या भूमिविषै मलादिक शरीरादिकका क्षेपणा ॥१॥ उपकर
णादिक विनाझाड्या ग्रहणकरना ॥१॥ विनादेख्या बिछावना ॥ १ ॥ तीनअतीचार
तो ये भये अर क्षुधादि पीडितहोय उपवासमै अनादरपना आवश्यकादि क्रियामै
उत्साह नहीकरना सो अनादरअतीचार हैं ॥ १ ॥ क्रिया आवस्यकादि भूलिजाना

उतरना सो अधोतिक्रमनामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ गुफा विलादिक सुरंगादिकमै प्रवेश करना सो तिर्यग्नामाअतीचार है ॥ १ ॥ लोभका वसतै क्षेत्रका वधावना सो क्षेत्रवृद्धिनामा अतीचार हैं ॥ १ ॥ प्रमादतै संख्याका भूलाना सो स्मृत्यतराधाननाम अतीचार हैं ॥ १ ॥ ये पाचअतीचार दिग्व्रतके हैं ॥ ३० ॥ सूत्र ॥ आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ आप मर्यादरूपकीया क्षेत्रमै तिष्ठता पुरुप, प्रयोजनका वसतै मर्यादावाहरके पुरुपकौ बुलावना सो आनयन नामअतीचार हैं ॥ १ ॥ मर्यादा वाह्य क्षेत्रमै, पुरुषको कहै तुम ऐसैकरो सो प्रेष्यप्रयोगनामा आतीचार हैं ॥ १ ॥ मर्यादावाहरके क्षेत्रमें व्यापारकरनेवाले पुरुषकौ शब्द सुनादेना तथा खखारा इत्यादिक करना सो शब्दानुपात नामा अतीचार हैं ॥ १ ॥ मर्यादावाहर व्यापारमे प्रवर्तनेवालेकौ अपना रूप दिखाना रूपतै समस्याकरना सो रूपानुपात अतीचार हैं ॥ १ ॥ मर्यादके वाह्यक्षेत्रविषै पापाण वस्त्रादिक पुद्गलक्षेपणा सो पुद्गलक्षेप नामा अतीचार है ॥१॥ ये पाचअतीचार देशविरति व्रतकेहैं ॥३१॥ सूत्र ॥ कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमिक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ रागभावकी अधिकतातै हास्यसहित नीचवचन वोलना सो कदर्पनामाअतीचार दोषहै ॥ १ ॥ अर हास्यरूप नीचवचनसहित शरीरकी कुचेष्टा करना सो कौत्कुच्यना

मनानगक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशा ॥२८॥ अर्थ ॥ अपनेसतान विना, अन्यका वि
वाहकरना सो परविवाहनामाअतीचार है ॥ १ ॥ इत्वरिका जो व्यभिचारनी सो व्य
भिचारनी दोयप्रकार हैं ॥ येक परिग्रहीताकहिये एकभर्तृका अर दूजी अपरिग्रही
ताकहिये गणिका इत्यादिक तिनके जावना आवना लेनादेना सो इत्वरिका गमन
हैं ॥ येक इत्वरिका परिग्रहीता गमननामाअतिचार हैं ॥ १ ॥ अर येक इत्वारिका
अपरिग्रहीता गमननामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ बहुरि कामके अंगछोडि अन्य अंगते
कामक्रीडा करना सो अनंगक्रीडानामाअतीचार है ॥ १ ॥ बहुरि कामकी तीव्रताका
अभिप्राय सो कामतीव्राभिनिवेशनामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ ये पाचअतीचार स्वदा
रासतोषव्रतके हैं ॥ २८ ॥ सूत्र ॥ क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यभा
डप्रमाणातिक्रमा ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ क्षेत्र वास्तु, हिरण्य सुवर्ण, धनधान्य, दासीदास,
कुप्य भाड, इनका जो प्रमाणकियाथा जो हमारे एताही परिग्रहहै अन्यनाहीं पछे अ
तिलोभकेवसतै प्रमाणछोडि अधिककरलेना सो परिग्रहत्यागव्रतके पाचअतीचारहैं
सो कहैं ॥२९॥ सूत्र ॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यतराधानानि ॥३०॥
॥ अर्थ ॥ जो दिशाका प्रमाणकियाथा ताका उल्लंघन करना सो अतिक्रम हैं, तहां
पर्वतादिक ऊपर चढि चलना सो ऊर्ध्वातिक्रमनामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ कूपादिकमें

परके ठिगनेके निमित्त लिखदेना सो कूटलेखक्रिया हैं॥ १ ॥ कोऊपुरुप सुवर्णादिक वस्तु आपकौ सोपिगया ताकी गिणती ओ भूलगया पाछे अल्पसख्याकरि मागने लग्या तदि कहे तुमाराहै सो लेजावो ऐसें वचनका कहना सो न्यासापहार हैं ॥ १ ॥ प्रयोजनका प्रकरण, अगविकार भ्रकुटी क्षेपादिकतै परके अभिप्रायकौ जानिकरकै जो ईर्पाभावतै प्रगट करना सो साकारमत्रभेदनामा अतिचार हैं ॥१॥ ऐसें पाचअतीचार सत्यअणुव्रतके हैं ॥२६॥ सूत्र ॥ स्तेनप्रयोगस्तदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहारा ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ कोऊपरधन चोरताहोय ताकौ प्रेरणाकरना तथा चोरकी अनुमोदना करना सो स्तेनप्रयोगनामाअतीचार हैं ॥१॥ चोरकू आप प्रेरनाहू नहीकरै भलाहू नहीजानै परंतु चोरकौ ल्यायोधन ग्रहण करै सो तदाहृतादाननामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ उचितन्यायतै छोडि अन्यप्रकारकै देना लेना सो ही अतिक्रमहै अर राज्यतै विरुद्ध जो अतिक्रम सो विरुद्धराज्यातिक्रमनामाअतीचार है ॥ १ ॥ वहुरि न्यून तोलकरि तोलदेना अधिककरिलेना सो हीनाधिकमानोन्माननामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ कृत्रमसुवर्णादिक शुद्धमैमिलाय ठिगने रूप व्यवहारकरना सो प्रतिरूपकव्यवहारनामाअतीचार हैं ॥१॥ ऐसै पाचअतीचार अचौर्यअणुव्रतके हैं ॥ २७ ॥ सूत्र ॥ परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहीताग

शीलेषुपञ्चपञ्चयथाक्रम ॥ २४ ॥ अर्थ ॥ पांचअणुव्रतके अर तीनगुणव्रतके च्यार शिक्षाव्रतके इनि सप्तशीलके पाचपाच अतीचार हैं सो कहैहै ॥ २४ ॥ सूत्र ॥ वध वधछेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधा ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ मनुष्य वा तिर्यंचकौ शाकल जेवडी इत्यादिकतै वाधना वा जुडना पींजरेमै देना सो वधनामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ दड वेत चाबूक इत्यादिकतै मनुष्य वा तिर्यंचनीकौ मारना सो वधनामाअतीचारहै ॥ १ ॥ कर्ण नाशिका हस्तादिक अग उपाग इनका छेदना सो छेदनामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ न्यायरूप भारतै मनुष्य वा तिर्यंचकौ अधिकभार लादना सो अतिभारारोपणअतीचार है ॥१॥ मनुष्यका वा तिर्यंचका खान पानकौ रोकना तथा अपनेस्वाधिन जे मनुष्य वा तिर्यंच तिनकौ विलवतै अन्न पानादि देना सो अन्नपाननिरोधनामा अतीचार है ॥ १ ॥ ऐसैं पाचअतीचार अहिंसाअणुव्रतके कहै ॥ २५ ॥ सूत्र ॥ मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमत्रभेदाः ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ स्वर्ग मुक्तीका साधन करनेवाली क्रियाकौ छोडकै, परजीवकौ अन्यथा प्रवर्तन करावना सो मिथ्योपदेश नामाअतीचार हैं ॥१॥ जो स्त्री पुरुषके एकांतमें हुवा आचरणकौ प्रगटकरना सो रहोभ्याख्यान नामाअतीचार हैं ॥ १ ॥ अन्यपुरुषतौ आपकौ कह्यानही परंतु परकीचेष्टातै जानिकरि ऐसैंयाने कह्याहै वा ऐसें याने कियाहै ऐसें

वक है सो मरणके अवसरमै सल्लेखनामै प्रीतिकरै ग्रहणकरै सल्लेखनानाम कृशकरने का हैं, सो सल्लेखना दोयप्रकार है॥ एककायासल्लेखना ॥ एककषायसल्लेखना ॥ अब कायसल्लेखना कहैहैं॥ शोक काम निद्रा मन इंद्रिय आलस्य प्रमाद इनके जीतनेकौ, वात पित्त कफादिकके प्रकोपके अभावकरनेकौ, सुखियास्वभाव दूरकरनेकौ, मार्गतै नहिचिगनेकौ, परिसह सहनेकौ, उपवास नीरसआहार कजिका वेला तेला इत्यादि जिनसूत्रके अनुकूल शरीरकौ कृशकरना सो कायसल्लेखना हैं॥अर क्रोध मान माया लोभ तथा राग द्वेषादिककौ घटाय परम वीतरागता धरना सो कषायसल्लेखना हैं॥ जो शरीरसल्लेखना अर कषायसल्लेखनातै परम वीतरागतारूपहोय पंचपरमगुरुकौ स्मरणकरना परमात्मभावना भावता देहकौ त्यागना सो सल्लेखना हैं ॥२२॥ सूत्र ॥ शंकाकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवासम्यग्दृष्टेरतीचारा ॥२३॥ अर्थ॥ जिनभाषित तत्वमैं शंकाकरना सो शंका हैं॥ १॥ जिनधर्म सेवनकरि इसलोक परलोकमै भोगचाहना सो कांक्षा हैं॥ २॥ अशुभकौ देखि मनका मलीनपना करना सो विचिकित्सा हैं ॥३॥ मिथ्यादृष्टीका ज्ञान चारित्र इनमै मनकरि वचनकरि गुणकाविचारना सो अन्यदृष्टिप्रशंसा हैं॥ ४॥ मिथ्यादृष्टीके गुणका वचनतै प्रकाश करना सो मिथ्यादृष्टीसंस्तव हैं॥ ५॥ ये पाचअतीचार सम्यक्तके हैं॥ २३॥ सूत्र॥ व्रत

धर्मध्यानमै लीन तथा पचपरमेष्ठीगुणमै एकाग्रहोय तीनकालमै तिष्टना सो सामा
यिक शिक्षाव्रत है ॥१॥ वहुरि एक महिनामै दोय अष्टमी दोय चतुर्दशी ये च्यारपर्वमै
स्नान विलेपन भूपन गधमाल्यादि समस्तत्यागि येकातमै वा साधुकेनिकट वा चै
त्यालयमै वा प्रोपधोपवासके गृहमै समस्तगृहकार्यादिछोडि आहारादिक पच इन्द्रि
यके विपयकौ त्यागि पचपापनिका षोडश प्रहरपर्यंत त्यागकरि धर्मध्यानसहित
सोलहप्रहर व्यतीतकरै सो प्रोपधोपवासनामा द्वितीयशिक्षाव्रत है॥ २ ॥ वहुरि जि
नमै विपय कपाय सधै अर अनेकप्रकार अनत जीवका घात होय ऐसैं मदिरा मास
लोणी कद मूल आदो जमीकद केवडो केतुकी निंबपुष्पादिक इनकातौ जिवेपर्यंत
त्यागही करना अर योग्यविषय इद्रियाकी लोलपता आकाक्षा (इच्छा) घटावनेके
अर्थि अर अभिमान घटावनेनिमित्त भोग उपभोगइनका प्रमाणकरना सो भोगो
पभोगनामा तिसराशिक्षाव्रत हैं ॥३॥ वहुरि अतिथि जे मुनिश्वरादिक पात्र, तिनकौ
अपने अर परकै उपकारकेअर्थि भक्तिपूर्वक योग्यविधितै निर्दोष आहार औषधिवस्ति
का पुस्तक इनका देना तथा उपकरण देना सो अतिथि संविभागनामा चौथाशिक्षाव्र
त हैं ॥४॥ ऐसैं तीनगुणव्रत च्यारशिक्षाव्रत इन करिसंयुक्त पाच अणुव्रत गृहस्थधार
णकरै सो व्रती हैं ॥२१॥ सूत्र ॥ मारणातिकीँसल्लेखनांयोपिता ॥२२॥ अर्थ ॥ व्रतीश्वा

पातिथिसविभागव्रतसप्तश्च ॥२१॥ अर्थ॥ यावत्जीव पूर्वोदिकदिशामै जावनेका भेजनेका वस्तुमगावनेका प्रमाणकरना सो दिग्विरति व्रत हैं ॥१॥ अर यावत् जीव जो दिशाका प्रमाणकीया तिसमै घटाय कालकी मर्यादरूप त्याग करना सो देशव्रत हैं ॥२॥ अर प्रयोजनविना जो पापके आवनेका कारण ते अनर्थदण्ड पाचप्रकारहैं ॥ सो कहैंहैं ॥ परजीवकी जीति, हार, वध, वधन, अगछेदन, सरवस्वहरणादिक अपने परीणाममै चिंतवन करना सो अपध्यान अनर्थदण्ड हैं॥ अथवा परकेदोष ग्रहणकरना परकीलक्ष्मीकी वाछाकरना परकेस्त्रीकारूपादिक अवलोकनकरना परका कलहदेखना इत्यादिकहू अपध्याननामा अनर्थदंड हैं ॥ १ ॥ वहुरि प्राणीको पीडा हिंसाकाउपदेशकरना सो पापोपदेश अनर्थदण्ड हैं ॥२॥ प्रयोजनादिविना वृक्षादिक छेदना भूमि कुटन जलसेचनादि निंद्यकर्मकरना सो प्रमादचरित अनर्थदण्ड है ॥ ३ ॥ विष कटक शस्त्र अग्नि चावकादिक हिंसाका उपकरन देना सो हिंसादाननाम अनर्थ दण्ड हैं ॥४॥ रागादिक वधावनेवाली हिंसाको पोषनेवाली दुष्टकथा श्रवण सो दु श्रुतनामा अनर्थदण्ड हैं ॥ ५ ॥ ये पाचप्रकार अनर्थदण्डका त्याग सो अनर्थदण्ड विरतिनामा तीसरा गुणव्रत है ॥ ३ ॥ वहुरि समस्तद्रव्यमै रागद्वेषछोडि समतारूपहोय देशकालकी मर्यादा करकै समस्तसवाद्य योग त्याग, परमात्माका स्वरूप चिंतवन करना तथा

अर वैराग्यके निमित्त जगतका अर कायाका स्वभाव चिंतवन करना श्रेष्ठहै ॥१२॥ सूत्र ॥ प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणहिंसा ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ कषायसहित आत्माका परिणाम सो प्रमत्त हैं, प्रमत्तके योगतै प्राणीके प्राणका वियोग करना सो हिंसा हैं ॥ १३ ॥ सूत्र ॥ असदभिधानमनृत ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ असमीचीन वचनका कहना सो अनृत हैं असत्य हैं ॥ १४ ॥ सूत्र ॥ अदत्तादानंस्तेय ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ विनादिई वस्तुका ग्रहण करना सो स्तेयकहिये चोरी हैं ॥ १५ ॥ सूत्र ॥ मैथुनमब्रह्म ॥१६॥ अर्थ ॥ मैथुन हैं सो अब्रह्म हैं ॥ १६ ॥ सूत्र ॥ मूर्छापरिग्रह ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ रागादिक अभ्यतर परिग्रह हैं अर चेतन अचेतन वस्तुमै ममता सो बाह्यपरिग्रह हैं ॥१७॥ सूत्र॥ नि शल्योव्रती ॥१८॥ अर्थ ॥ मायाशल्य १ मिथ्याशल्य १ निदान शल्य १ ये तीन् शल्यरहितहोय सो व्रती हैं ॥१८॥ सूत्र ॥ अगार्यनगारश्च ॥१९॥ अर्थ ॥ व्रती दोयप्रकारके हैं ॥ अगार जो गृह तामें वसनेवाला अगारी व्रती हैं अर ग्रहके त्यागी अनगारी व्रतीहैं ॥ १९ ॥ सूत्र ॥ अणुव्रतोगारी ॥ २० ॥ अर्थ ॥ अणुकहिये अलपव्रतकेधारी गृहस्थीअगारी हैं जाके त्रस हिंसाका त्याग ॥ स्थूल झूठकात्याग ॥ परघनका त्याग ॥ परकी स्त्री त्याग ॥ परिग्रहका परमाण सो अनुव्रती हैं ॥२०॥ सूत्र ॥ दिग्देशानर्थदंडविरतिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोगपरिभोगपरमा

॥ ९ ॥ सूत्र ॥ दु खमेववा ॥ १० ॥ अर्थ ॥ ये हिंसादिक पाचपाप दु खहीहैं इनको दु खरूपही भावना करना ॥ १० ॥ सूत्र ॥ मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानिचसत्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनयेषु ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ परजीवके दु खनहीहोनेका अभिलाप ताकूं मैत्रीकहिये ॥ मुखकी प्रसन्नतादिकतै अंतःकरणमै भक्तिरूप प्रीतिहोना ताकौ प्रमोदकहिये ॥ दीन दु खित जनकै उपकार होनेका परिणाम सो कारुण्य हैं ॥ राग द्वेप पूर्वक पक्षपातकौ अभाव ताकौ माध्यस्थ कहिये ॥ समस्तप्राणीकै मैत्री भावना भावना ॥ सम्यक्ज्ञानादिक करि अधिकहोय तिनगुणवतकै प्रमोदभावना भावना ॥ क्लेशरूपप्राणीकै कारुण्यभावना भावना ॥ अविनयी जे तीव्रकषायी व्यसनी पापी इनमै मध्यस्थभाव रखना ॥ ११ ॥ सूत्र ॥ जगत्कायस्वभावौवासवेगवैराग्यार्थं ॥१२॥ अर्थ ॥ यो जगत् अनादिनिधनहै, वेत्रासन, झल्लरी, मृदगकै सदृश हैं, इस अनादिसंसारमै अनतकालतै नानायोनीमै परिभ्रमणकरते जीव अनते दु ख भोगवे है, कोऊ नित्यनही हैं, जीवना जलकै बुदबुद समान है, विजुलीवत् मेघवत् भोगकी सपदाचचलहै इत्यादि जगत्का स्वभाव चितवन करनेतै ससारतै सवेगभाव होय हैं ॥ अर ये काया हैं, सो अनित्य है, दु खका कारण हैं, नि सार हैं, अशुचि है, पोषणकरते ही नष्टहोय हैं, इत्यादि चिंतवनतै, विपयतै देहतै वैराग्य उपजे हैं॥ यातै व्रतीकौ संवेग

के अप्रतीति योग्यहोय है, कोऊप्रतीति नहीकरै है, इसलोकमै जिन्हाच्छेदन सर्वस्व हरणादिकने प्राप्तहोयहै जिसतै झूटकहा तिसतै वढावैर वंधैहै अर परलोकमै निंद्य गतीकू प्राप्तहोयहै तातै असत्यवचनतै विरक्तहोय त्यागकरना सोही जीवकाकल्याणहै ॥ २ ॥ तैसैंही परद्रव्य हरनेवाला चोर, समस्तकै पीडाकरनेवाला होयहै इसलोकमे नानाप्रकार घात वधन हस्त पाद नाशिका ओष्ठकाछेद सर्वस्व हरनादिकनै प्राप्तहोयहे अर परलोकमे अशुभगति प्राप्तहोयहै अर महानिंद्यहोयहै तातै चोरीतै विरक्तहोय त्यागकरना सोही श्रेष्ठहै ॥ ३ ॥ तैसैही कुशीलीहू मोहतै नष्टकार्यकरैहै कार्यअकार्यका विचाररहित निंद्यचेष्टानै प्राप्तहुवा अपनाहितका नाशकरैहै अर परकी स्त्रीका आलिंगनमै रतिकरनेवाला इहा वैरनै प्राप्तहोयहे लिंगछेदन वध वधन सर्वस्वहरनादिकनै प्राप्तहोयहै परलोकमै अशुभगतीनै प्राप्तहोयहै तातै अब्रह्मतै विरक्तहोना जीवकाकल्याण हैं ॥ ४ ॥ तैसैंही परिग्रहवान् परिग्रह सचयकरनेमे रक्षण करनेमे क्षयहोनेमै वहुतदु खनै प्राप्तहोयहै अर जैसे इधनकरि अग्निकीतृप्ति नही होय तैसे परिग्रहतै तृप्ति नाहीहोयहै अर परिग्रहवान् लोभी, कार्य अकार्य योग्य अयोग्य नहीजानैहै अर परलोकमै निंद्यगतीनै प्राप्तहोयहै अर यो लोभीहै ऐसें निंद्यहोयहै तातै परिग्रहतै विरक्तहोना सोही कल्याणहै, ऐसें व्रती भावना भावै हैं ॥५॥

प बैठे तहां परकोईआवे ताका वर्जन नहीकरना तथा आपकौ कोईमनैकरै तहा न हीवैठना १ आचारागकी आज्ञाप्रमाण शुद्धभिक्षाग्रहण करना १ ये स्थान, उपकरण, शिष्य, हमारे ये तुमारे ऐसा विसवाद नहीकरना १ ये अचौर्यव्रतकी पाच भावना हैं ॥ ६ ॥ सूत्र ॥ स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहरागनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरस स्वशरीरसस्कारत्यागा पंच ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ स्त्रीमै प्रीतिभाव करनेवाली कथाकेश्रव णका त्याग १ स्त्रीके मनोहर अग अवलोकनका त्याग १ पूर्वे भोगभोगे तिनके स्म रणका त्याग १ पुष्ट इष्टरसरूप भोजनका त्याग १ अपने शरीरका शृंगारादिरूप सस्कारका त्याग १ ऐसैं ब्रह्मचर्यव्रतकी पाच भावना है ॥ ७ ॥ सूत्र ॥ मनोज्ञा मनोज्ञेंद्रियविपयरागद्वेपवर्जनानिपच ॥ ८ ॥ ॥ अर्थ ॥ स्पर्शनादिक पचइंद्रियके इष्ट विपयमै प्रीतीका त्याग, अनिष्ट विपयमें द्वेषका त्याग ये पाचभावना परिग्रहत्याग व्र तकी है ॥ ८ ॥ सूत्र ॥ हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शन ॥९॥ अर्थ ॥ हिंसादि पाच पाप करनेमै अपने कल्याणका नाश हैं, इसलोक परलोकमै निंद्यपणाहै, हिंसाकरने वाला नित्यही उद्वेगरूप रहैहै अर निरतर वैरानुवध होय है अर इसलोकमै वध वध क्ले शादिकने प्राप्तहोय हैं अर परलोकमें अशुभ गतीने प्राप्तहोय हैं, निंद्यहोय है तातैं हिंसातैं विरक्तहोय त्यागकरना इसजीवका कल्याण है १ तैसैंही असत्यवादी समस्त

॥ अथतत्वार्थ सूत्र सप्तमअध्यायप्रारभ ॥ सूत्र ॥ हिंसान्ततस्तेयोब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रत ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हिंसा १ असत्य २ चोरी ३ अब्रह्म ४ परिग्रह ५ ये पाच पापकी विरक्तता सो व्रत हैं ॥१॥ सूत्र ॥ देशसर्वतोणुमहती ॥२॥ अर्थ ॥ ये हिंसा दिक पाचपापका एकोदेशी त्याग सो अणुव्रत हैं ॥ अर सर्वप्रकारतै त्याग सो म हाव्रत है ॥ २ ॥ सूत्र ॥ तत्स्थैर्यार्थभावना पचपच ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ इन अहिंसादि क पचव्रतकौ स्थिरिकरणके अर्थि एकएकव्रतकी पांचपांच भावना हैं ॥ ३ ॥ सूत्र ॥ वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानिपंच ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ वचन गुप्ति १ मनोगुप्ति १ ईर्यासमिति १ आदाननिक्षेपनासमिति १ अलोकित पानभो जन कहिये देखि सोधि भोजन पान करना १ ये अहिंसाव्रतकी पाच भावना हैं ॥ ॥ ४ ॥ सूत्र ॥ क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषणचपच ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ प्रत्याख्यान कहिये त्याग, क्रोधकात्याग १ लोभकात्याग १ भयकात्याग १ हास्यकात्याग १ ये च्यारकातौ त्यागकरना अर जिनसूत्रके अनुकूल वचन बोलना १ ये सत्यव्रतकी पाच भावना हैं ॥ ५ ॥ सूत्र ॥ शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधा करणभैक्ष्यशुद्धिसधर्माविसंवादा पच ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ सूनाघर तथा पर्वतकी गुफादि कमै वसना १ परके छोडेहुवेघर विमोचितावास हैं तामै वसना १ जिसठिकानै आ

नेयोग्यमक्ष्य भोजनकरनेयोग्यभोज्य पीवनेयोग्यपेय आस्वादनेयोग्यलेह इत्यादि
कनिमे विघ्नकरनेतै अतरायकर्मका आश्रवहोय हैं ॥ विभव तथा विभवसमृद्धिदेखि
मात्सर्यकरनेतै तथा अपनेद्रव्यहोतेहू नहीखरचनेतै द्रव्यकी अतिवाछातै, देवकै च
ढीवस्तुके ग्रहनकरनेतै अतरायकर्मका आश्रवहोय हे ॥ निर्दोप उपकरणके त्यागने
तै परकीशक्ति विनासनेतै धर्मकाछेदकरनेतै सुदरआचारके धारक तपस्वी गुरुका
घातकरनेतै जिनप्रतिमाकी पूजाकेविगाडनेतै तथा दीक्षित तथा दरिद्री दीन अ
नाथ इनको कोऊ वस्त्र पात्र स्थान देतेहोय तिनके निषेधकरनेतै परको वदिग्रहमे रो
कनेतै वाधनेतै गुह्यअगछेदनेतै कर्ण नासिका ओष्ठ काटनेतै जीवकेमारनेतै अंतराय
नामाकर्मके आश्रवहोय हैं ॥ जैसै कोऊमद्यपानी अपनीरुचितै मद मोह भ्रम करने
वाली मदिरापीयकरिकै अर तिसके उदयकेवसतै अनेक विकारको प्राप्तहोय हे, तथा
जैसे रोगी अपथ्यभोजनकरि अनेकवात पित्त कफादि जनित विकारको प्राप्तहोय हैं, तैसें
आश्रवविधिकरि ग्रहणकिया अष्टप्रकारकर्म तथा एकसौअडतालीस तथा असख्या
तलोकप्रमाण कर्मप्रकृतितै उपजेविकारको प्राप्तहोय हैं ॥ २७ ॥ इतितत्वार्थाधिग
मेमोक्षशास्त्रेपष्ठोध्याय ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अनज्ञा नहीकरना, अन्यजीवतै उद्धतपना छोडना, परकीनिंदा ग्लानि हास्य अपवाद का त्यागकरना, अभिमान रहितरहना, धर्मात्माजनकी पूजा सत्कार करना, देखतेही उठि खडारहना अञ्जुलीजोडना नम्रीभूतहोना वदनाकरना, अवारके अवसरमै अन्यपुरुपकै ऐसेंगुणहोना दुर्लभ तैसै गुण आपमैहोतेहूं उद्धतपना नहीकरना, अहकार काअभावकरना जैसैं भस्ममै ढक्याअग्निकीनाई अपना महात्म नहीप्रगटकरना, धर्म के कारणमै परमहर्षकरना सो समस्त उच्चगोत्रके आश्रवके कारण हैं॥ २६ ॥ सूत्र ॥ विघ्नकरणमतरायस्य॥२७॥ अर्थ॥ दानदेतेमै विघ्नकरनेतै दानातरायकर्मके आश्रव होय हैं॥ कोऊकै लाभहोताहोय तिसलाभके कारणकौ विगाडै तातै लाभां तरायकर्मका आश्रवहोय हैं॥ परकेभोग विगाडनेतै भोगातरायकर्मका आश्रवहोय है॥ उपभोगविगाडनेतै उपभोगांतरायकर्मका आश्रवहोय हैं॥ परकीशक्ति विगाड नेतै वीर्यांतरायकर्मका आश्रवहोय हैं॥ कोऊज्ञानाभ्यासकरताहोय ताका निषेधकर नेतै कोऊ जिनधर्म जिनशास्त्र प्रसिद्धकरताहोय ताका निषेधकरनेतै जीर्णोद्धारकर ताहोय ताका निषेधकरनेसे अंतरायनामाकर्मका आश्रवहोय हैं ॥ कोऊका सत्कार होताहोय तिसका विनाशकरनेतै तथा दान लाभ भोग उपभोग शक्ती स्नान विलेपन अत्तरसुगंध पुष्पमाल्यादिक, वस्त्र आभरण शय्या आसन भक्षणकर

विषै विद्यमान् वा अविद्यमान गुणके प्रगटकरनेकी इच्छा सो आत्मप्रसंसा हैं॥ पर केसत्यगुणकौ आच्छादन करना अर अपने झूटे गुणहू प्रगटकरना सो ये परनिंदा आत्मप्रससा है सो नीचगोत्रके आश्रवके कारण हैं॥ तथा जाति कुल वल श्रुत आज्ञा ऐश्वर्य रूप तप, इनका मद करना परकी अवज्ञाकरनी परकी हास्यकरना पर के अपवादकरनेका स्वभावरखना धर्मात्मापुरुषकी निंदाकरना अपनी उच्चता दिखा वना परके यशकौ विगाडदेना असत्यकीर्ति उपजावना सत्यगुरुका तिरस्कारकरना गुरुके दोष प्रगटकरना गुरूकास्थान विगाडना अपमानकरना गुरुकौपीडाउपजा वना अवज्ञाकरना गुणकौलोपना गुरूकौअञ्जुलीनहींजोडना गुरुकीस्तुतीनहींकरना गुरुकेगुणनहीप्रकाशना गुरुकौआवतैनहीखडाहोना तीर्थंकरादिककी आज्ञाका लो पना ये समस्त नीचगोत्रके आश्रवके कारण हैं॥ २५॥ सूत्र ॥ तद्विपर्ययोनीचैर्वृ त्यनुत्सेकौचोत्तरस्य ॥ २६॥ अर्थ ॥ अपनी निंदाकरना परकीप्रसंसाकरना परके भलेगुणकौ प्रगटकरना औगुणकौ ढाकना गुणवतविषै विनयतै नम्रीभूतरहना आ पमै ज्ञानादिकगुणकी अधिक्यताहोतेहू ज्ञानादि मदकौ प्राप्तनहींहोना अहकार नहीकरना ये उच्चगोत्रके आश्रवके कारण हैं॥ जाति कुल रूप वीर्य ज्ञान ऐश्वर्य तप अधिकार इनतै हीनहोय इनसे आपकी उच्चता नहीचिंतवनकरना अन्यजीवकी

भक्तिपूर्वकदेना सो शक्तितस्त्याग है ॥ ६ ॥ अपनाशक्तीकूं नछिपविता जिनंद्रका मार्गके अनुकूल अनशनादिक (उपोपणादिक) तपकरना सो शक्तितस्तप हैं ॥ ७ ॥ मुनीश्वरादिक च्यारसघकै कोऊकारणतै व्रत शील तप सयम इनमैविघ्नआवे तिनका विघ्नदूरकरके रक्षाकरना सो साधुसमाधि हैं ॥ ८ ॥ गुणवतकै दु खआवतै निर्दोपविधिकरके उनका दु खदूरकरना टहलकरना सो वैयावृत्य है ॥ ९ ॥ केवलीकेगुणमै अनुराग (प्रीति) करना सो अर्हतभक्ति हैं ॥ १० ॥ आचार्यादिककेगुणमै प्रीतिकरना सो आचार्यभक्ति हैं ॥ ११ ॥ वहुश्रुतिके गुणमै प्रीति करना सो वहुश्रुतभक्ति हैं ॥१२॥ श्रुतज्ञानके गुणमै अनुराग (प्रीति) सो प्रवचनभक्ति हैं ॥ ॥ १३ ॥ षटआवश्यकका यथाकाल प्रवर्तनकरना सो आवश्यकापरिहानि हैं ॥ १४ ॥ ज्ञानके प्रकाशतै तथा महातपकरके जिनपूजाकरके जिनधर्मका उद्योतकरना सो मार्गप्रभावना हैं ॥ १५ ॥ धर्मके आयतनमै धर्मात्मापुरुषमै प्रीतिकरना सो प्रवचनभक्ति हैं ॥ १६ ॥ ये षोडशभावना हैं ते उपमारहित अचिंत्यविभूतिका कारण प्रभावजाका त्रैलोक्यमै विजयरूप तीर्थंकरनाम पुन्यकर्मको आश्रवके कारण हैं ॥ ॥ २४ ॥ **सूत्र** ॥ परात्मनिंदाप्रशसेसदसद्गुणोछादनोद्भावनेचनीचैर्गोत्रस्य ॥ २५ ॥ ॥**अर्थ**॥ परकेदोषहोतै वा अनहोतै प्रगटकरनेकी इच्छा सो परनिंदा हैं ॥ अर आप

न्नताशीलव्रतेष्वनतीचारोमीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौशक्तितस्त्यागतपसीसाधुसमाधि
वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यवहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिमार्गप्रभावनाप्रव
चनवत्सलत्वमितितीर्थंकरत्वस्य ॥ २४ ॥ अर्थ ॥ अव सोलाभावनाके नाम कहैंहैं ॥
दर्शनविशुद्धि १ विनयसंपन्नता १ शीलव्रतेष्वनतीचार १ ज्ञानोपयोग १ सवेग १
शक्तितस्त्याग १ शक्तितस्तप १ साधुसमाधि १ वैयावृत्य १ अर्हतभक्ति १ आचार्यभ
क्ति १ प्रवचनभक्ति १ आवश्यकापरिहाणि १ मार्गप्रभावना १ प्रवचनवत्सलत्व
१ अव सोलाभावनाके लछन कहैंहैं ॥ जिनेंद्रका उपदेश्या मोक्षमार्गमे रुचि अर
नि·सकितादिअष्टअगकीउज्ज्वलता सो दर्शनविशुद्धि हैं ॥१॥ दर्शन ज्ञान चारित्रमे
अर इनके धारन करनेवालेमे आदर तथा विनयकरना सो विनयसंपन्नताहैं ॥ २ ॥
शील जो वीतरागतारूप अपना स्वभाव अर अहिंसादिक व्रतमे मन वचन कायते
निर्दोषप्रवृत्तिकरना सो शीलव्रतेष्वनतीचार हैं ॥३॥ ज्ञानकी भावना पढना पढावना
उपदेशकरना इत्यादि जिनोपदेशश्रुत ज्ञानके अर्थमे निरतर उपयोग रखना सो
अभीक्ष्णज्ञानोपयोगहैं ॥ ४ ॥ संसारके दु खनीते नित्यमयभीत रहना सो संवेगहैं
॥ ५ ॥ धर्मात्मापुरुषकों उपकारके अर्थि आहार औषधी शास्त्र अभयदान देना,
सम्यक्भावके उपकारकेअर्थि आहार औषधि शास्त्र अभयदान सम्यक्भावते

उपअंग काटना स्पर्श रस गंध वर्ण इनकी विपरीतताकरना अनेक जीवकौ दुखदेने वालेजंत्र पींजरे बनावना कपटकीअधिकता परनिंदा अपनीप्रससाकरना झूठवचन बोलना परकाद्रव्यग्रहणकरना महाआरंभ महापरिग्रहका मदकरना उज्वलआभरण वस्त्र वेषका मदकरना रूपका मदकरना कठोरवचन निंद्यवचन असत्यप्रलाप क्रोध केवचन धीठताके वचनकहना सौभाग्यमै उपयोगकरना वशीकरणके प्रयोगकरना पर जीवनकै कौतूहल उपजावना आभरणपेरनेमै आदर अनुरागकरना जिनमंदिरके चदनादि गंध अर पुष्प माल्यादिकका चोरना हस्यकरना ईटके पकावनेके प्रयोग दावाग्निके प्रयोगकरना देवकीप्रतिमाकाविनाशकरना प्रतिमाकेस्थानजे मदिरा दिकताका नाशकरना मनुष्य वा तिर्यंचके वैठनेके रहनेके स्थानकौ मल मूत्रादिक ते विगाडना वाग बगीचे वन इनका विनाशकरना क्रोध मान माया लोभ इनका तीव्र पणा पापकर्मतै जीविकाकरना इत्यादिकतै अशुभनामकर्मके आश्रव होय हैं ॥२२॥ सूत्र ॥ तद्विपरीतशुभस्य ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ मन वचन काय इनकी सरलता अर पूर्वे कहे तासूं उलटे परिनाम ते शुभनामकर्मके आश्रवके कारणहैं तथा धर्मात्माकौ देखि हरखकोप्राप्तहोना सम्यक् भावरावना ससारभ्रमनतै भयभीतरहना प्रमाद वर्जना इत्यादि शुभनामकर्मके आश्रवके कारणहैं ॥२३॥ सूत्र ॥ दर्शनविशुद्धिर्विनयसंप

जेरा वालतप ये देवआयुके आश्रवके कारणहैं ॥ तहां सरागसंयम तो महाव्रतीमुनीका हैं ॥ संयमासंयम देशव्रती श्रावकका हैं ॥ तिनकौ तौ कल्पवासी देवकीआयुका नियमहैं ॥ वहुरि पराधीनहुवा क्षुधातृषाकरि वाधा भोगना तथा वंदियहादिमै ब्रह्मचर्य भूमिशयन मलधारन करना दुर्वचनादिककी आतप सहनकरना दीर्घकाल रोगदरिद्र धारन सो आकामनिर्जरा हैं,यातैंहू व्यतरादिकमै तथा मनुष्यमै तिर्यंचमै उपजना होयहैं ॥ मिथ्यादृष्टीका तप करना सो वालतपहैं, ते वालतपके धारक, भवनवासी व्यतर ज्योतिषी इनमै तथा वारमा स्वर्गपर्यंत उपजे हैं तथा मनुष्यमै तिर्यंचमै हु उपजेहै, तथा धर्मात्मापुरुषतै मित्रताका संवध, धर्मकेस्थान आयतनकी सेवा, सत्यार्थधर्मकाश्रवण धर्मकी महिमाहोई तैसें प्रवर्तन, प्रोषधोपवासादिककाकरना शीलवान्‌पणा दयापणा अतिअल्पक्रोधादिक येहू देवायुके आश्रवके कारण हैं ॥२०॥ सूत्र ॥ सम्यक्तुंच ॥२१॥ ॥ अर्थ ॥ सम्यक्त्वतै कल्पवाशी देवहीका आयुका आश्रव होय हैं ॥ २१ ॥ सूत्र ॥ योगवक्रताविसंवादनंचाशुभस्यनाम्नः ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ मन वचन कायकी कुटिलता अर संवादकरना इनितै अशुभनामकर्मके आश्रव होय हैं ॥ अशुभयोगनिका ऐसा विशेपजानना ॥ मिथ्यादर्शनधरना परकीपूठिपाछे खोटीकहना चित्तकाअस्थिरपना तारवडी वाटघाट रखना, खोटीवस्तु आछीमे मिलाय वेचना, खोटीसाखभरना अंग

केपरिणाम आर्तध्यानतै मरनकरना इत्यादि तिर्यंचआयुके आश्रवके कारणहै ॥१६॥ सूत्र ॥ आल्पारंभपरिग्रहत्वमानुषस्य ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ अल्पआरंभ अल्पपरिग्रहमै परिणाम सो मनुष्यआयुके आश्रवके कारणहैं ॥ बहुरि मिथ्यादर्शनसहितबुद्धि विनयवानस्वभाव सरलप्रकृति साचेआचरणमै सुखमानना अपनासुखजनावना अल्प क्रोध व्यवहारमै सरलप्रकृति सतोषमै रति प्राणीकाघातमै विरक्तता कुकर्ममै निवृत्ति होना समस्तसैमिष्टवचन स्वभावहीतैमधुरता लौकिकव्यवहारमै उदासीनता ईर्षारहितपणा अल्पसक्लेशपणा देवगुरुअतिथिका दानमै पूजामै अपनेद्रव्यते विभागकरना कपोतलेश्याकेपरिणाम मरणकालमैधर्मध्यानीपणा ये मनुष्यआयुके आश्रवके कारणहैं ॥ १७ ॥ सूत्र ॥ स्वभावमार्दवंच ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ विना सिखाया स्वभावतैही कोमलपणा ये हू मनुष्यआयुके आश्रवके कारणहैं ॥ १८ ॥ सूत्र ॥ निःशीलव्रतत्व चसर्वेषां ॥१९॥ अर्थ॥ चशब्दतै अल्पारंभी अल्पपरिग्रहीपणा शीलरहितपणा ये समस्त (च्यारूं) आयुके आश्रवके कारणहैं ॥ प्रश्न ॥ सीलव्रतरहितकौ देव आयुका बंध कैसाहोय ॥ प्रश्नकासमाधानरूपउत्तर ॥ भोगभूमीमैं उपजेजीव शीलव्रतरहितहै तौभी मदकषायके प्रभावतै देवहीहोयहैं ॥ १९ ॥ सूत्र ॥ सरागसंयमसंयमासंयमाकामनिर्जराबालतपांसिदैवस्य ॥ २० ॥ अर्थ ॥ सरागसंयम तथा संयमासंयम अकामनि

व्रतीकौदु खदेना गुणवतकामथनकरना दीक्षाग्रहणकरनेवालेकौं दु खदेना परस्त्रीके संगमकेनिमित्त तीव्ररागकरना आचाररहित निराचारिहोना सो नपुंसकवेदके आ श्रवके कारणहैं ॥ १४ ॥ सूत्र ॥ वव्हारंभपरिग्रहत्वनारकस्यायुष ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ वहुतआरंभकरना परिग्रहमें वहुतममत्वकरना सो नरकआयुके आश्रवके कारणहै ॥ मिथ्याआचरण अतिअभिमान शिलाभेदसमानक्रोध तीव्रलोभकेपरिणाम निर्दयप णा परजीवकै संतापउपजावनेके परिणाम परके घातकरनेके परिणाम परके बंधन होनेकाअभिप्राय प्राणीकाघातकरनेवाला असत्यवचन परद्रव्यके हरनेमै परिनाम मैथुनमै अतिराग अभक्ष्यभक्षण दृढवैर साधुकीनिंदा तीर्थंकरकीआज्ञाभंग कृष्णले श्याकेपरिणाम रौद्रध्यानकरिमरण इत्यादिकहू नरकआयुके आश्रवके कारणहैं ॥ ॥ १५ ॥ सूत्र ॥ मायातैर्यग्योनस्य ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ मायाचारकेपरिणाम तिर्यंचआ युके आश्रवके कारणहै ॥ वहुरि मिथ्याधर्मकाउपदेश वहुआरंभ बहुपरिग्रहमैपरि णाम कपटकूडमैतत्परपना पृथ्वीभेदसमानक्रोध शीलरहितपना वचनतै चेष्टातै ती व्रमायाचारकरना परकेपरिणामनीमें भेदउपजावना अतिअनर्थप्रगटकरना वर्ण गंध रस स्पर्श इनकाविपरीतकरना जाति कुल शीलमै दूपणलगावना विसंवादमैप्रीति रखना परकेउत्तमगुणकाछिपावना विनाहोतै औगुणप्रगटकरना नील कपोत लेश्या

कर्मके आश्रवके कारणहैं॥अन्यजीवके अरति प्रगटकरना परके रतिका विनाश करना पापीकी सगती करना खोटीक्रियामै उत्साहकरना ए अरतिवेदनीकर्मको आश्रवकरै हैं॥अपनै शोकहोय तामै विखादीहोय चिंतवन करना परकै दु खप्रगटकरना अन्यकौ शोकमैदेखि आनदधरना सो शोकवेदनीकर्मके आश्रवको कारन हैं ॥ बहुरि अपना भयरूप परिनामकरना परकै भयउपजावना निर्दयपनाकरि परकौ त्रासदेना इत्या दिक भयवेदनीके आश्रवको कारणहैं ॥ बहुरि सत्यधर्मकौप्राप्तभये, जे च्यारवर्णके धारक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, तिनकै कुलकी क्रिया आचारकी ग्लानिकरना, परकाअपवादकरना सो जुगुप्सावेदनीके आश्रवके कारणहैं ॥ बहुरि अतिक्रोधकेप रिणाम अतिमानीपना ईर्षाकाव्योहार असत्यवचन अतिमायाचारमे तत्परपणा अति रागभावका करना परस्त्री सेवनकरना परस्त्रीका रागभावतै आदरकरना स्त्रीकैसेभाव आलिंगनादिकरना इनिभावतै स्त्रीवेदको आश्रवहोयहैं ॥ अल्पक्रोध कुटिलताकाअ भाव विषयमै उत्सुक्ताकाअभाव निर्लोभता स्त्रीकेसंबंधमेअल्पराग अपनेस्त्रीमेस तोप ईर्षाकाअभाव अर स्नान गंध पुष्पमाल्य आभरणमै अनादर इत्यादिक पुरुषवे दके आश्रवके कारणहैं ॥ बहुरि चार कषायका प्रबलपना तथा गुह्यइंद्रियकाछेदना स्त्री पुरुषके, कामकेअगछोडि अन्यअंगमै व्यसनीपना, शीलवंतकौ उपसर्गकरना

मासभक्षनादिकको निर्दोषकहना सो श्रुतकाअवर्णवाद हैं ॥ मुनीकेसंघकौ अशुचित्वा
दिरूप कहना सो सघकाअवर्णवाद हैं॥ च्यारनिकायकेदेव मांसभक्षणकरै मद्यपानकरै
ऐसा कहना सो देवावर्णवाद हैं॥ धर्मकाफल असुरादिहोना ऐसाकहना सो धर्मकाअव
र्णवाद हैं॥ इनकरि दर्शनमोहनीयकर्मके आश्रवहोइहैं ॥१३॥सूत्र ॥ कषायोदयातीव्र
परिणामश्चारित्रहोयस्य ॥१४॥ अर्थ ॥ कपायकेउदयतै तीव्रपरिणामहोना सो चारि
त्रमोहनीके आश्रवके कारणहैं ॥ तथा जगतके उपकारकरनेमै समर्थ जे शीलव्रत
तिनकीनिंदाकरना आत्मज्ञानी तपस्वीकी निंदाकरना धर्मकाविध्वसकरना धर्मके सा
धनमै अंतरायकरना शीलवानकौ शीलतैचिगावना देशव्रती महाव्रतीकौ व्रततैचला
यमान करना मद्य मास मधुके त्यागिकौ चित्तमै भ्रमउपजावना चारित्रमै दूषणलगा
वना क्लेशरूपलिंग (भेषधरना) क्लेशरूपव्रतधरना आपकै अर परकै कषायउपजा
वना इत्यादि कषायवेदनीयके आश्रवके कारणहैं ॥ वहुरि उत्कट हसना दीन दु
खित अनाथकी हास्यकरना कामकथा कामचेष्टाकरि हास्यकरना वृथाप्रलापकरना
ये परिनाम हास्यवेदनीयकर्मके आश्रव करैहैं ॥ वहुरि परकोई क्रीडाकरै तिसकी
डामै आप तत्परता अन्यकै क्रीडाकी सामग्रीमै उद्यमकरना, उचितक्रियाका वर्ज नही
करना, परकैपीडाका अभावकरना, द्वेषादिकमै उत्सकपनाकाअभाव सो रतिवेदनी

न करना तथा विश्वासघात वक्रस्वभावता पापकर्मकरि जीवकौ निरर्थकदडदेना विष
पोवना तथा फासी जाल पिंजर इत्यादि वनावना जीवकौ पकडनेकौ मारनेकौ यत्रका उ
पाय तथा खोटेप्रयोग शस्त्रदानदेना पापतैमिलेभाव इत्यादिक असतावेदनीयकर्मके
आश्रवकेकारणहैं॥११॥ सूत्र॥ भूतव्रत्यनुकपादानसरागसंयमादियोग क्षातिशौचमि
तिसद्वेद्यस्य ॥१२॥ अर्थ॥ भूतकहिये सामान्यप्राणी अर व्रतीकहिये अहिंसादिपां
चव्रतकेधारक इनकै पीडाजानि आपकैंजैसैदु खआया तैसैपरिणामहोना सो भूतव्र
तीमै अनुकपा हैं॥ परजीवके उपकारकैआर्थि अपनाधनादिकदेना सो दान हैं॥ धर्मा
नुरागसहित सयम सो सरागसयम हैं॥ आदिशब्दतै सयमासयम अकामनिर्जरा वाल
तपमी समक्षलेना॥ निर्दोषक्रियाविशेषकौ योग कहियेहैं॥ बहुरि क्रोधकौअभाव सो
क्षांतिहैं ॥ अर लोभकेप्रकारकात्याग सो शौचहैं ॥ सो भूत व्रतीमै अनुकपाकादानदे
ना॥ संयमकाधारना॥ क्षमाकरना॥ निर्लोभीरहना॥ इनीतै सातावेदनीकर्मके आश्रव
होयहैं॥ तथा अरिहतकीपूजाकरनेमैतत्परता वाल वृद्ध तपस्वी इनके वेयावृत्यकरनेमै
उद्यमीरहना सरलपरिणामधरना विनयादिरूपरहना॥ येही सातावेदनीयके आश्रव
केकारणहैं॥ १२॥ सूत्र॥ केवलिश्रुतसघधर्मदेवावर्णवादोदर्शनमोहस्य ॥१३॥ अर्थ
केवलीकौ कवलाआहारकहना क्षुधा तृषा रोगादिदोषकहना सो केवलीका अवर्णवादहैं

कारणहैं ॥ वहुरि परकेदेखनेमै मात्सर्य तथा अंतराय तथा नेत्रकाउत्पाटन दृष्टिका
गर्व वहुतनिद्रा दिवसमैशयन आलस्य नास्तिक्यताकाग्रहण, सम्यकदृष्टिको दूषण
लगावना, कुतीर्थकीप्रससा प्राणीकाघात परजनकीनिंदा इत्यादिक दर्शनावरणकर्म
के आश्रवको कारणहैं ॥ १० ॥ सूत्र ॥ दु खशोकतापाक्रदनवधपरदेवनान्यात्मपरो
भयस्थानान्यसद्वेद्यस्य ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ पीडारूपपरिणाम सो दु खहैं ॥ अपनेउप
कारका वियोगहोते जो परिणामका मलीनपणा तिसमै लीनअभिप्रायरूपहोय चिं
ताखेदरूपहोना सो शोक हैं ॥ वहुरि अपवादकेनिमित्ततै अत करणकी क्लुषताते
तीव्रपश्चात्ताप करना सो ताप हैं ॥ वहुरि पर तापते उपज्या अश्रुपातपूर्वक विलापादि
रूप प्रगट रुदनकरना सो आक्रंदन हैं ॥ वहुरि आयुवल इंद्रियवल प्राणादिककावि
योग करना सो वध हे ॥ वहुरि ऐसाविलापकरै जो श्रवणकरनेवालेकै करुनाउपजि
आवै सो परिदेवन हैं ॥ सो दु ख, शोक, ताप, आक्रदन, वध, परिदेवन, ये आपकरै
तथा परकै दु खादिकरै तथा आपकै अर परकै दोऊकैकरै ताकै असातावेदनीयकर्मके
आश्रव आवैहैं ॥ वहुरि अशुभयोग परकाअपवाद परकीचुगली निर्दयता परकैआ
तापकरना अंगोपागकाछेदन भेदन ताडन त्रासन तर्जन घर्षण इत्यादिक तथा
परकीनिंदा अपकीप्रससाकरना तथा संक्लेसप्रगटकरना महाआरंभ महापरिग्रह धार

दर्शनावरणयो ॥ १० ॥ अर्थ ॥ कोऊपुरुष मोक्षका कारण ऐसा तत्वज्ञानकी कथ
नी करताहोय ताकौ सुनिकरि ईर्षाभावतै प्रसंसा नहीकरै मौनराखै ताकौ प्रदोष कहि
ये ॥ बहुरि आपकौ जाका ज्ञानहोय अर जाननेकेअर्थि वाकू कोऊपूछै इसवस्तुका
स्वरूप कैसाहै तदि आप नटजाय, जो मैतौ नहीजानू ताकौ निन्हव कहिये ॥ बहुरि
आपकौ शास्त्रकाज्ञानहोय अर शिखावने योग्यभीहोय तौहू पैलेकौ शिखावैनाही
जो शीखजायतौ मेरीबराबरीकरैगा ऐसा अभिप्रायकौ मात्सर्यकहिये ॥ बहुरि कोऊ
ज्ञानाभ्यासकरताहोय तिसमैविघ्नकरदे, पुस्तक तथा पढावनेवालाका तथा स्थानक
का वियोगकरदे सो अंतराय हैं ॥ बहुरि परनै प्रकाशकिया ज्ञानकौ वर्जना सो असा
दना हैं ॥ बहुरि प्रशस्तज्ञानकौ दूषणलगावना सो उपघात हैं ॥ सो ये प्रदोष १
निन्हव १ मात्सर्य १ अंतराय १ असादना १ उपघात १ ये दोषतै ज्ञानावरण अर
दर्शनावरण इन कर्मके आश्रवहोयहैं ॥ औरहू कहैंहैं ॥ आचार्य उपाध्यायतै द्वेष
अर अकालमैअध्ययन श्रद्धानकाअभाव विद्याकेअभ्यासमैआलस्य तथा अनादर
तै सूत्रकेअर्थकाश्रवण धर्मतीर्थकालोप बहुश्रुतिपणाकागर्व तथा मिथ्याउपदेशदेना
तथा बहुश्रुतिनिकाअपमानकरना असत्यप्रलाप उत्सूत्रवाद खोटेशास्त्रकाबेचना
खोटेशास्त्ररचने हिंसादिकमैप्रवर्तना इत्यादिसमस्त ज्ञानावरणकर्मके आश्रवको

॥४॥ ऐसैंच्यारप्रकार निक्षेपकह्या ॥ अव दोयप्रकार निर्वर्तना कहेंहैं ॥ निपजाईये सो निर्वर्तना हैं ॥ शरीरतै कुचेष्टा उपजावना सो देहदु प्रयुक्तनाम निर्वर्तना हैं ॥ १ ॥ हिंसाके उपकरण अर शस्त्रादिककीरचना सो उपकरण निर्वर्तना हैं ॥ २ ॥ तथा एक मूलगुणनिर्वर्तना एकउत्तरगुणनिर्वर्तना ऐसैंही दोयभेदहैं ॥ पचप्रकारशरीर वचन मन उच्छ्वास निश्वास इसका निपजावना सो मूलगुणनिर्वर्तना ॥ अर काष्ठ पाथर चित्रामादि निपजावना सो उत्तरगुणनिर्वर्तना हैं ॥ वहुरि संयोजना कहेंहैं ॥ सो संयोजना दोयप्रकारहैं ॥ शीत स्पर्शरूप जो पुस्तक कमंडलु तथा शरीरादिक तिनकौं तावडातै तप्तजो पीछिका, ताकरि पूछना सोधना सो उपकरणसयोजना हैं ॥ १ ॥ वहुरि पान जो जलादिक तिनका अन्यपानमै मिलावना तथा भोजनमै मिलावना तथा भोजनकौ पानमै मिलावना तथा अन्यभोजनमै मिलावना सो भुक्तपानसंयोजना है ॥ २ ॥ अन निसर्गाधिकरण तीनप्रकारहै सो कहेंहैं ॥ दुष्टप्रकार कायाका प्रवर्तन करना सो कायनिसर्गाधिकरणहैं ॥१॥ दुष्टप्रकार वचनकाप्रवर्तन करना सो वाक्निसर्गाधिकरणहैं ॥ २ ॥ दुष्टप्रकार मनकाप्रवर्तन करना सो मनोनिसर्गाधिकरणहैं ॥ ॥ ३ ॥ भावार्थ ॥ जीव अजीव दोऊद्रव्यके आश्रयतै कर्मकाआगमन होयहैं तिनभावकै विशेषणकहेंहैं ॥ ९ ॥ सूत्र ॥ तत्प्रदोषनिन्हवमात्सर्यांतरायासादनोपघाताज्ञान

१ ये तीन, अर मन १ वचन १ काय १ ये तीनयोग, अर कृत १ कारित १ अनुमो
दना १ ये तीन, अर क्रोध १ मान १ माया १ लोभ १ ये च्यार॥ इनकौ परस्परगुणीये
तव एकसोआठभेद होयहैं ॥८॥ सूत्र॥ निर्वर्तनानिक्षेपसंयोनिसर्गोद्विचतुर्द्वित्रिभेदा
पर॥ ९॥ अर्थ॥ निक्षेपकहिये धरना॥ निपजाइये सो निर्वर्तना हैं॥ मिलावना सो
सयोजना हैं॥ जो प्रवर्ताइये सो निसर्ग हैं॥ निक्षेपके चारभेदहैं सो कहैहैं॥ अना
भोग निक्षेपाधिकरण १ सहसा निक्षेपाधिकरण १ दु प्रमृष्ट निक्षेपाधिकरण १ अप्र
त्युवेक्षित निक्षेपाधिकरण १॥ ऐसें निक्षेपच्यारप्रकारहैं॥ अब इनकाअर्थ कहैहैं॥
भयादिकतै वा अन्यकार्यकै उतावलीते, जो सीघ्रताते पुस्तक कमंडलु शरीर तथा शरी
रकामल इत्यादिक उतावलीसो क्षेपिये सो सहसा निक्षेपाधिकरण हैं॥ १॥ उताव
ली नहीहोताहु, इहाजीवहै वा नहीहै, ऐसा विचार नकरते अर न अवलोकन करते
पुस्तक कमडलु शरीर अर शरीरसंबंधीमल इत्यादिक पदार्थ निक्षेपणकरिये
तथा वस्तु जहांधरनाचाहिये तहां नहीधरना जैसेतैसे अनेकजागा धरदेना सो अ
नाभोगनिक्षेपाधिकरण हैं॥ २॥ बहुरि जो दुष्टताते वा यत्नाचाररहितते जो उप
करण शरीरादिक क्षेपणा सो दु प्रमृष्ट निक्षेपाधिकरण हैं॥ ३॥ बहुरि जो विनादे
ख्या, वस्तुका निक्षेपणकरना स्थापनकरना सो अप्रत्युवेक्षित निक्षेपाधिकरण हैं॥

(भावार्थ) कपाहकरिसहित जीवकै जे कर्मके आश्रवआवैहै तिनमै ऐसीस्थितिप डैहैं जाकरि दीर्घकाल ससारपरिभ्रमणकरिये ॥ अर कपायरहित जीवकै आश्रवआ वैहै परतु स्थितिनहीपडै आवैजिसहीसमय निर्जर जायहैं ॥ ४ ॥ सूत्र ॥ इंद्रियकषायाव्रतक्रियापचचतु पचपचविंशतिसख्या पूर्वस्यमेदा ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ अब पापाश्रवके कारण कहैहैं ॥ इद्रियपाच कषायच्यार अव्रतपाच क्रियापच्चीस ये सापरायिक आश्रवके कारणहैं॥५॥ सूत्र ॥ तीव्रमदज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेपेभ्य स्तद्विशेप ॥६॥ अर्थ ॥ कपायकी उत्कटतातै जो परिणामहोय सो तीव्रभावहैं ॥ कषायकीमदतातै जो परिणामहोय सो मदभावहैं ॥ मै इसप्राणीकौमारू ऐसें जानिकरि मारनेमै प्रवृत्तिकरना सो ज्ञातभावहै ॥ विनाजानै प्रमादतै प्रवृत्तिकरना सो अज्ञात भावहैं ॥ पुरुपकाप्रयोजन जाकेआधारहोय सो अधिकरणहैं ॥ द्रव्यकीशक्ती सो वीर्यहैं ॥यातै जीवके असख्यातलोकप्रमाण परिणामहोहै ॥ जैसाजैसापरिणामहोय तैसातैसा कर्ममै रस पडै है स्थितिपडैहैं ॥ सोही आश्रवकेभेद जानना ॥ ६ ॥ सूत्र ॥ अधिकरणजीवाजीवा ॥७॥ अर्थ ॥ आश्रवकाआधार जीवद्रव्य, अजीवद्रव्य ऐसे दोयमेदहैं ॥७॥ सूत्र ॥ आद्यसरभसमारभयोगकृतकारितानुमतकपायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकश ॥ ८ ॥ ॥ अर्थ ॥ जीवाधिकरणके १०८ भेदहै सो कहैहैं ॥ सरंभ १ समारंभ १ आरभ

अथतत्त्वार्थसूत्रषष्ठअध्यायप्रारंभ ॥ सूत्र ॥ कायवाङ्मनःकर्मयोगः ॥ १ ॥ अर्थ ॥
कायकी वचनकी मनकी क्रिया सो योग हैं ॥ १ ॥ सूत्र ॥ सआस्रव ॥ २ ॥ अर्थ ॥
जो मनका वचनका कायका योग सो आश्रव हैं ॥ उदाहरण ॥ जैसें नौकामें छिद्र
होय, उसछिद्रमेसे जलआवे, सो छिद्र जलआवनेका द्वार हैं, तैसें मन वचन
योग सो कर्मआवनेके द्वार हैं ॥ २ ॥ सूत्र ॥ शुभ पुण्यस्याशुभःपापस्य ॥
॥ अर्थ ॥ शुभयोगते पुण्यका आश्रवहोय, अशुभयोगते पापका आश्रवहोवे ॥
अशुभयोग के नाम कहेहैं ॥ जीवका घात, अदत्तका ग्रहण (चोरी) मैथुन सेवन
दिक अशुभ काययोग हैं ॥ अर कर्कश कठोर निंद्य असत्य इत्यादि
सो अशुभ वचनयोग हैं ॥ परजीवकाघात इर्षा
मनयोग है ॥ अब ग कहेहैं ॥ अहिंसादिक
मकाययोग हैं ॥ सूत्रके
वनयोग हैं ॥

गुणहोय सो हीनगुणवालीपरमाणूकों आपरूप परणमन करावेहैं॥ एकमै दोयगुणस्नि
ग्धताकेहोय अर दुजीमै च्यारगुणरूक्षपणाकेहोय तो दोऊमिलैतादि अधिकगुणरूप
जो रूक्षपारमाणू तिसरूप होयहैं॥ ऐसैंही रूक्षतैस्निग्धमिलैतौ अर रूक्षसेरूक्षमिले
वा स्निग्धतैस्निग्धमिले वा स्निग्धतैरूक्षमिलैतौ अधिकगुण जिसपारमाणूमे होय ति
सरूप हीनगुणरूप परमाणू परिणमि जायहैं ॥३७॥ सूत्र ॥ गुणपर्ययवद्द्रव्य ॥३८॥
अर्थ ॥ द्रव्यहै सो गुणवान् अर पर्यायवान् है ॥ गुणपर्यायविना द्रव्यनही ॥ द्रव्य
अनेकपरणतिरूप अनेकपर्यायरूपहोतेहुं गुणकाअभाव नहीहोयहै, तातै गुणकास
मुदायही द्रव्यहैं॥ अर समयसमय जो परिणतिहोयहै सोही द्रव्यमैपर्यायहै, सो पर्या
य रहित किसीकालमै नही ॥३८॥ सूत्र॥ कालश्च॥३९॥ अर्थ॥ कालभी द्रव्यहै गुण
पर्यायवान्है॥३९॥ सूत्र॥ सोनंतसमयः॥४०॥ अर्थ॥ कालजो है सो अनंतहै समय
जाका ऐसाहैं॥४०॥ सूत्र॥ द्रव्याश्रयानिर्गुणागुणा ॥४१॥अर्थ॥ जिनका द्रव्यकौ आ
श्रय अर आपअन्यगुणतै रहित ते गुण हैं॥ इससूत्रमें गुणकालक्षणकह्या॥ गुण हैते
द्रव्यसूं तन्मय है, तातै द्रव्यकैआश्रयकह्या अर गुणमैअन्यगुण नाही, तातै निर्गुण कहे
॥४१॥ सूत्र॥ तद्भाव परिणाम ॥४२॥अर्थ॥द्रव्य जिसस्वरूपतै परिणमै ताकोतद्भाव
कहिये, तद्भाव है सो परिणाम है॥४२॥इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेपंचमोध्याय ॥५॥

परमाणूहू दोयकौ आदिलेय अनेकरूक्षपरमाणूकौ तथा स्निग्धगुणकेपरमाणूनकूं [illegible]
बंधे है ॥ ३४ ॥ सूत्र ॥ गुणसाम्यसदृशानां ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ गुणतै समान होय तथा
सदृसहोय तिनकेहू बंध नहीहोय ॥ दोयगुण स्निग्धकेधारकपरमाणूके [illegible]
गुण धारकपरमाणूके बंध नहीहोय ॥ तथा तीन च्यार पाच संख्यात
तगुण जे अविभागपरिच्छेद समानहोय तिनके बंध नहीहोय ॥ सो कौनके
सो सूत्रकहैहैं ॥३५॥ सूत्र ॥ द्व्यधिकादिगुणानांतु ॥३६॥ अर्थ ॥ [illegible]
णअधिक होय, एकमै दोयगुणघटतीहोय, तिनकैबंध पर्हे ॥
[illegible] च्यारगुणस्निग्धताका वा रूक्षताका होय सो
स्निग्धके वा रूक्षके, [illegible] स्निग्ध वा रूक्षकै [illegible]
[illegible]परमाणूके [illegible]परमाणूतैं

त् इत्यादि अनेकधर्मात्मक (गुणात्मक) वस्तुकहनेमें येकातीके विरोधादि अष्ट दूषण दिखाये सो जानलेना ॥ ३२ ॥ सूत्र ॥ स्निग्धरूक्षत्वाद्बंधः ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ पुद्गलपरमाणूके सचिक्कणपणातें तथा रूखापणातें परस्परबंधहोयहै ॥ पुद्गलपरमाणूमें सचिक्कणपणा तथा रूखापणा सदावर्तेहैं ॥ किसीपरमाणूमें सचिक्कनपणाका एक अविभागपरिच्छेदहै, किसीमें दोय किसीमेंतीन च्यार संख्यात असंख्यात अनंततांई अविभागपरिच्छेद हैं ॥ अर समयसमय षट्गुणी हानीवृद्धीरूप सचिक्कण गुण तथा रूक्षगुण निरतर घटै वधै हैं ॥ ऐसें सचिक्कणपरमाणूका रूक्षहोय हैं अर रूक्षपरमाणूका सचिक्कणहोयहैं ॥ ये रूक्षपणाके तथा सचिक्कणताके अविभागपरिच्छेदके निमित्ततै, एक परमाणु तथा द्व्यणुकादि स्कधके पररूपर बंधहोय हैं ॥ ३३ ॥ सूत्र ॥ नजघन्यगुणानां ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ जघन्यगुणकेधारक परमाणूहै तिनकेबंध नहीहोय॥ जिसपरमाणूमें रूक्षपणाका वा सचिक्कणपणाका एकअविभाग परिच्छेद रहिजाय सो बधकोप्राप्त नहीहोय है ॥ जो एकगुणस्निग्धहोय तिसपरमाणूकों एकगुणस्निग्धपरमाणूतें तथा दोयगुणस्निग्धतें तथा संख्यात असख्यात अनतस्निग्धतें बध नहीहोयहै ॥ तैसैंही येकगुणस्निग्धपरमाणूकों एकगुणरूक्षपरमाणूतें तथा संख्यात असख्यात अनतगुणरूक्षपरमाणूतें बध नहीहोयहैं ॥ ऐसे ही एकगुणरूक्ष

॥ सो अष्टदूषण दिखावे हैं ॥

१ एकवस्तुमें सत्असत् दोऊ विरोधीधर्म (गुण) कहनेतें विरोधदूषण लगेगा।

१ एकवस्तुमें सत्असत् दोऊका एकआधार कैसेंहोय तातें वे अधिकरण

१ सत्, असत्के आश्रयकहियेतो पहलेअसत्होय तब सत्केआश्रय असत्को सत्केआश्रयकहियेतो, पहलें सत्नाही ऐसें दोऊका अभावरूप राश्रय दूषण हैं

१ सत् काहेकरिहै, तहांकहे असत्करिहै, फेरकहे असत् काहेकरिहै रिहै ऐसें कांहूं ठरना नाहीहोय तातें अनवस्था दूषण है.

१ सत्मे असत्मिले असतमें सत्मिले

१ सत्तें अस [illegible] अर असततें

१ सत्को [illegible]

उनकाभेदहोय अन्यस्कधतैं मिलनेतैं नेत्रगोचरहोय हैं ॥ २८ ॥ सूत्र ॥ सद्द्रव्यलक्ष
ण ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ द्रव्यका लक्षण सत् हैं जो सत्रूपहै सो द्रव्य है ॥ २९ ॥ सूत्र ॥
उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तसत् ॥ ३० ॥ अर्थ ॥ अपने जातीकौं नहिछोडतै, जे चेतन अर
अचेतनद्रव्यके निमित्ततैं, एकपरणति छोडि, अन्यपरणतीकौं प्राप्तहोना सो उत्पाद
हैं ॥ अर पूर्वपरणतीका अभावहोना सो व्यय हैं नाश है ॥ अर पूर्वपरणतीका नाश
अर उत्तरपरणतीका ग्रहणहोतेहूं अपनेजातीकौं नहीछोडना सो ध्रौव्य है ॥ उदाहरण
जैसैं मट्टीके पिंडका घट करना सो उत्पाद हैं ॥ अर पिंडपर्यायका अभाव सो व्यय हैं ॥
अर पिंडपर्यायमै तथा घटपर्यायमै माटिका अभाव नहीहोना सो ध्रौव्य हैं ॥ उत्पाद १
व्यय १ ध्रौव्य १ ऐसैं तीनपरणती जामैहोय सो सत्कहावैहै अर सत्है सो द्रव्यहै
॥ ३० ॥ सूत्र ॥ तद्भावाव्ययनित्य ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ जो पहलैसमयमैहोय सोही दूजै
समयमैहोय ताकौं तद्भावकहिये ॥ तद्भावका नाशनहीहोना सोही नित्य हैं ॥ ३१ ॥
सूत्र ॥ आर्पितानर्पितसिद्धे ॥३२॥ अर्थ ॥ जाकौं मुख्य करिये सो अर्पित है ॥ जाकौं
गौन करिये सो अनर्पित है ॥ सो ये दोऊ नयकरि अनेक गुणस्वरूपी वस्तुका कहना
सिद्धहोयहैं ॥ अनेकगुणात्मकवस्तु कहनेमै एकातीकौं विरोधादि अष्टदूषण आवै है

स्वभावतैंहीं होयहै ॥ जैसे मेघपटलादिक क्रियाकौ कालका उपकार हैं ॥ वहुतकालजा मे लगै सो परत्व अर अल्पकालजामेलगै सो अपरत्व सो समस्त कालद्रव्यका उप कारहैं ॥ २२ ॥ सूत्र ॥ स्पर्शरसगंधवर्णवंत पुद्गला ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ स्पर्श १ रस १ गंध १ वर्ण १ ये च्यारगुण पुद्गलद्रव्यके है ॥ स्पर्श रस गंध वर्ण ये च्यारगुणज्याकैहो य सो पुद्गलहैं ॥ २३ ॥ सूत्र ॥ शब्दबंधसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमच्छायातपोद्यो तवतश्च ॥२४॥ अर्थ ॥ शब्दबंध सूक्ष्मपणा स्थूलपणा संस्थानभेद अंधकार छाया आताप उद्योत इनि अष्टपर्यायकरिसहित पुद्गलद्रव्य हैं ॥ ये शब्दबंधादिक समस्त पुद्गलकेपर्याय हैं ॥२४॥ सूत्र ॥ अणवस्कंधाश्च ॥२५॥ अर्थ ॥ अणुअरस्कंध येही पुद्ग लद्रव्यके पर्याय हैं ॥ २५ ॥ सूत्र ॥ भेदसंघातेभ्यः उत्पद्यते ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ पुद्गल केस्कंद संघाततैउपजे हैं ॥ वाह्य अभ्यंतर निमित्ततै स्कंदविदारेजाय सो भेद हैं ॥ अर जे भिन्नभिन्नथे तिनका येकहोना सो संघात है ॥ २६ ॥ सूत्र ॥ भेदादणु ॥ ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ परामाणु हैते भेदहीतै होयहैं संघाततै नहीहोय ॥ २७ ॥ सूत्र ॥ भेदसंघाताभ्यांचाक्षुष ॥ २८ ॥ अर्थ ॥ स्कंध हैते अनतानत परमाणुके समुदायतै होयहैं ॥ तिनमै केइस्कंध नेत्रतै ग्रहणमैआवैहै ते चाक्षुष हैं ॥ अर केतेकस्कंध नेत्रतै ग्रहणमैनहीआवै ते अचक्षुष हैं ॥ परंतु केतेक स्कंध, सूक्ष्म परिणमतै नही है, तथापि

उपकार जीवअरपुद्गलद्रव्यकौहै सो धर्मद्रव्यअरअधर्मद्रव्यकाहैं ॥जीवद्रव्यअरपुद्गलद्र
व्य एकक्षेत्रतै अन्यक्षेत्रमैगमनकरै तहा वाह्यसहकारी कारण धर्मद्रव्यहैं ॥ अर स्थि
तिकरतै वाह्यसहकारी कारण अधर्मद्रव्य हैं ॥ १७ ॥ सूत्र ॥ आकाशस्यावगाह ॥
॥ १८ ॥ अर्थ ॥ सर्वद्रव्यकौ अवगाहदेना यो आकाशद्रव्यका उपकार हैं ॥ १८ ॥
सूत्र ॥ शरीरवाङ्मन प्राणापाना पुद्गलानां ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ शरीर वचन मन
प्राणकहियेउच्छ्वास अपानकहिये निःश्वास ये पुद्गलद्रव्यकृत जीवके उपकार हैं ॥ १९ ॥
सूत्र ॥ सुखदु खजीवितमरणोपग्रहाश्च ॥ २० ॥ अर्थ ॥ सुख दु ख जीवन मर
ण येभी उपकार पुद्गलके किये जीवकौ होय हैं ॥ २० ॥ सूत्र ॥ परस्परोपग्रहोजीवाना
॥२१॥ अर्थ ॥ जीव जीवकौ परस्परभी उपकार करै हैं ॥ २१ ॥ सूत्र ॥ वर्तनापरि
णामक्रियापरत्वापरत्वेचकालस्य ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ समस्तद्रव्य अपने पर्यायकी र
चनाकौ अपना स्वभावसेही वर्तना है तिस वर्तनाकौ वाह्यनिमित्त कालद्रव्य हैं ॥ द्र
व्य अपने एकपर्यायकौ छोडि अन्यपर्यायकौ प्राप्तहोना सो परिणाम हैं ॥ जैसै जीव
कौ क्रोधादिपरिणाम, पुद्गलके वर्णआदिकगुण, धर्मअधर्मके स्थिति गमन गुण,
अर आकाशके अगुरु लघु गुण, इनकी हानिवृद्धिरूप होना सो परिणामहैं ॥ वहुरि
एकक्षेत्रतै अन्यक्षत्रमै चलनेरूपक्रिया सो परके प्रयोगतै हू होयहै अर अपने

अनंतप्रदेशहैं ॥९॥ सूत्र ॥ संख्येयासंख्येयाश्चपुद्गलाना ॥१०॥ अर्थ ॥
देश संख्यातहैं असंख्यातभीहैं अर च शब्दकरि अनंतप्रदेशहीहैं ॥ १० ॥ सूत्र ॥
णो ॥११॥ अर्थ ॥ परमाणु (आणु) कै बहुतप्रदेश नही येकप्रदेशहीहै ॥
लोकाकाशेवगाह ॥१२॥ अर्थ ॥ ये कहे जे धर्म अधर्मादिकद्रव्य ते
लोकाकाशके बाहेरनहीहै ॥ अलोकाकाशमै एकआकाशद्रव्यहीहै ॥१२॥ सूत्र ॥
धर्मयो[illegible] ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ धर्मद्रव्य अर अधर्मद्रव्य [illegible]
मेहै जैसें तिलविर्षेतिल सर्वव्यासहै तैसें लोकाकाशके समस्त[illegible]
द्रव्य तिष्टैहैं ॥ १३ ॥ सूत्र ॥ [illegible]
द्रव्यका अवगाह लोकाकाशके एकप्रदेशको [illegible]
[illegible] ॥१४॥ ॥
[illegible]
॥

॥ अथतत्वार्थसूत्रपचमअध्यायप्रारंभः ॥ सूत्र ॥ अजीवकायाधर्माधर्माकाशपुद्गला ॥
॥१॥ अर्थ ॥ धर्मद्रव्य १ अधर्मद्रव्य १ आकाशद्रव्य १ पुद्गलद्रव्य १ ये च्यारद्रव्य
चेतनारहितहैं तातैंअजीवहैं अर वहुप्रदेशीहैं ताते काय हैं ॥ १ ॥ सूत्र ॥ द्रव्याणि
॥ २ ॥ अर्थ ॥ ये कहे जे धर्म अधर्म आकाश काल इनके द्रव्यसंज्ञा हैं ॥ जे अपने
गुण अर पर्यायरूप समयसमयपरिणमे ते द्रव्य हैं ॥ २ ॥ सूत्र ॥ जीवाश्च ॥ ३ ॥
॥ अर्थ ॥ जीवभी द्रव्यहै ॥३॥ सूत्र ॥ नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥४॥ अर्थ ॥ जीव,
धर्म, अधर्म, आकाश, काल, ये पांचद्रव्य नित्यकहिये अविनासीहैं ॥ अर अवस्थित
कहिये अपनेद्रव्यस्वभावकों छोडेनही ॥ अर अरूपीकहिये अमूर्तीक है ॥४॥ सूत्र ॥
रूपिण पुद्गलाः ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ षट्द्रव्यमे पुद्गलद्रव्य रूपीहै दीखैहै और द्रव्य अ
रूपीहैं ॥ ५ ॥ सूत्र ॥ आआकाशादेकद्रव्याणि ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य
अर आकाशद्रव्य ये तीनूद्रव्य एकएकहीहैं वहुत नहीहैं ॥ ६ ॥ सूत्र ॥ नि क्रियाणि
च ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकाशद्रव्य ये तीनूद्रव्य नि क्रिय है ॥ अप
नेस्थानतै कदाचित् चलायमान नहीहोय ॥ ७ ॥ सूत्र ॥ असंख्येया प्रदेशा धर्मा
धर्मैकजीवाना ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ धर्मद्रव्यके अर अधर्मद्रव्यके एकजीवद्रव्यकेवराबर
असंख्यातप्रदेश हैं ॥ ८ ॥ सूत्र ॥ आकाशस्यानता ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ आकाशद्रव्यके

ल्योपममधिक ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ सौधर्मस्वर्ग अर ईशानस्वर्गके देवका
आयु एकपल्यतेकछुअधिकहै ॥ ३३ ॥ सूत्र ॥ परत परत पूर्वापूर्वा[illegible] ॥ ३४ ॥
॥ अर्थ ॥ सौधर्म ईशान ये दोयस्वर्गमै जोउत्कृष्टआयुहै सो आगे[illegible]
जघन्यआयुहै ॥ ऐसैंहीआगेआगेजाननां ॥ ३४ ॥ सूत्र ॥
॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ नारकीके पहलेनरकमै जोउत्कृष्टआयुहै ति[illegible]
न्यमायुहै ॥ दुसरेनरकमै उत्कृष्ट सो तिसरानरकमै जघन्य ॥ ऐसैं जानना ॥
॥ सूत्र ॥ दशवर्षसहस्राणिप्रथमायां ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥ प्रथमनरकवि[illegible]
दशहजारवर्षकाहै ॥ ३६ ॥ सूत्र ॥ भवनेषुच ॥ ३७ ॥ अर्थ ॥
[illegible]न्यआयु दशहजारवर्षकाहै ॥ ३७ ॥ सूत्र ॥
[illegible] जघन्य [illegible]हजारवर्षकाहै ॥
॥

अधिके॥२९॥ अर्थ॥ सौधर्मस्वर्गअर ईशौनस्वर्गके देवका उत्कृष्ट आयु दोयसागरक
छुअधिकहै ॥ २९ ॥ सूत्र ॥ सनत्कुमारमाहेंद्रयो सप्त ॥ ३० ॥ अर्थ ॥ सनत्कुमार
स्वर्ग माहेंद्रस्वर्गके देवका आयु सप्त सागरतैं कछुअधिकहैं ॥ ३० ॥ सूत्र ॥ त्रिस
प्तनवैकादशत्रयोदशपचदशभिरधिकानितु ॥३१॥ अर्थ॥ ब्रह्मस्वर्ग ब्रह्मोत्तरस्वर्गके
देवकाआयु दशसागरतैं कछुअधिकहैं॥ लातवस्वर्ग कापिष्टस्वर्गकेदेवकाआयु चतुर्द
श सागरतैंकछुअधिकहैं ॥ शुक्रस्वर्ग मेंहाशुक्रस्वर्गकेदेवकाआयु शोडशसागरतेकछु
अधिकहैं ॥ शैतारस्वर्ग सहस्रारस्वर्गकेदेवकाआयुअष्टादशसागरतैंकछुअधिकहैं ॥
आणतस्वर्ग प्राणतस्वर्ग देवकाआयु वीससागरतैंकछुअधिकहैं॥ आरणस्वर्ग अच्युत
स्वर्गकेदेवकाआयु वावीससागरतैंकछुअधिकहैं॥ ३१ ॥ सूत्र ॥ आरणाच्युतादूर्द्धमे
कैकेननवसुग्रैवेयकेपुविजयादिपुसर्वार्थसिद्धौच ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ सोलास्वर्गकेऊपर
९ ग्रैवेयक हैं तहाके देवकाआयु एकएकग्रैवेयकमै, एकएकसागरवधतांआयुहैं ॥२३।
२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१ नवमाग्रैवेयककेदेवकाआयु इकतीससागरकाहैं॥
नवअनुदिशविमानमै देवकाआयु वत्तीससागरकाहैं॥ अर विजय वैजयंत जयत अप
राजित ये चारविमानमै देवकाआयु तेतीससागरकाहैं ॥ अर सर्वार्थसिद्धिविषैं उत्कृ
ष्टआयु तेतीससागरकाहैं, सर्वार्थसिद्धिमेंजघन्यआयुनहीहैं॥ ३२॥ सूत्र ॥ पराप

र्गपर्यंत कल्पसंज्ञाहैं ॥ २३ ॥ सूत्र ॥ ब्रह्मलोकालयालौकांतिकाः ॥ २४ ॥
ब्रह्मलोक जो पांचमास्वर्ग तहां लौकांतिकदेवका स्थानहै ॥२४॥
सारस्वतादित्यवन्ह्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥ २५ ॥ अर्थ ॥
प्रकारहै सो कहैहैं ॥ सारस्वत १ आदित्य १ वन्हि १ अरुण १ गर्दतोय १
अव्याबाध १ अरिष्ट १ इनमें अवांतर औरहू अनेकप्रकारहैं, [illegible]
है सर्वसमानहैं ॥ ये सम [illegible] देवऋषिहैं ॥ [illegible]
सूं चयकर मनुष्यहोय निर्वाणकूं [illegible] ॥ अन्यमत नहीयहैं २५ ॥
विजयादिषुद्विचरमा ॥२६॥ अर्थ ॥ विजय
मान इनकेदेव मनुष्यकेदोयभवधरतसंत [illegible] ॥
[illegible] ॥ २७ ॥
[illegible]
॥२७॥

॥१९॥अर्थ॥सौधर्म॥१॥ईशान॥१॥सनत्कुमार॥१॥माहेंद्र॥१॥ब्रह्म॥१॥ब्रह्मोत्तर॥१॥
लांतव॥१॥कापिष्ट॥१॥शुक्र॥१॥ महाशुक्र॥१॥शतार॥१॥सहस्रार॥१॥आणत॥१॥
प्राणत॥१॥आरण॥१॥अच्युत॥१॥थे॥सोलास्वर्गहैं॥॥सोलास्वर्गकेऊपर॥नवविमान॥ग्रै
वेयक हैं॥तिनकेऊपर॥अनुदिशिविमान नवहैं॥तिनकेऊपर॥अनुत्तरविमानपाचहैं॥॥
ऐसे॥वैमानिक॥देवलोकहैं॥॥१९॥॥सूत्र॥॥स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धींद्रि
यावधिविषयतोधिकाः॥॥२०॥॥अर्थ॥॥स्वर्गवासी॥वैमानिकदेवकी॥पटल॥पटल
प्रति॥आयु॥वधतीहैं॥॥ ॥सापानुग्रह॥शक्तिरूप॥प्रभाव॥अधिक॥हैं॥॥ ॥इंद्रियके
विषयका॥सुखअधिकहैं॥॥॥शरीर॥वस्त्र॥आभरणादिककी॥ कांतिअधिक॥हैं॥ ॥
लेश्याकीउज्वलता॥अधिकहैं॥ इंद्रियकाविषयजाननेकी॥शक्तिअधिकहैं॥॥अवधिज्ञान
काविषय॥अधिकहैं॥॥२०॥सूत्र॥॥गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतोहीना ॥२१॥॥अर्थ॥
वैमानिकदेव॥नीचेकेदेवनीतें॥ऊपरकेदेव॥पटल॥पटलप्रती॥अन्यक्षेत्रमैगमन॥अर शरी
रकीऊचता॥अर॥परिग्रहकाअभिमान॥ये॥घटतीघटतीहैं॥॥२१॥॥सूत्र॥॥ पीतपद्मशु
क्ललेश्याद्वित्रिशेषेषु॥२२॥ अर्थ॥ स्वर्गके॥दोययुगलके॥च्यारस्वर्गमै॥पीतलेश्याहैं
अर॥तीनयुगलके॥छहस्वर्गमै॥पद्मलेश्याहैं॥॥शेष रहे॥तिनमै॥शुक्ललेश्याहैं॥॥॥२२॥॥
॥॥सूत्र॥॥ प्राग्ग्रैवेयकेभ्य कल्प॥२३॥॥अर्थ॥॥पहिला सौधर्मस्वर्गसे॥सोलमास्व

णाकरैहैं ॥ मेरुको ग्यारासैइकवीसजोजन छोडके विचरैहैं शाश्वतागमनकरैहैं ॥
लोक जो अढाईद्वीप अर दोयसमुद्रमे पंचप्रकारके ज्योतिषीदेवहैं मेरुके
क्षिणाकरैहैं ॥ १३ ॥ सूत्र ॥ तत्कृत कालविभागः ॥ १४ ॥ अर्थ ॥
मनकरैहैं तासे कालकाविभागमयाहैं ॥ काल ॥ १४ ॥
स्थिता ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ मनुष्यलोकके बाहेर [illegible]
नहीकरे जहांकेतहांस्थिरहैं अवस्थितहैं ॥ १५ ॥ [illegible]
ज्योतिषीदेवके ऊपर स्वर्गहैं तहां वैमानिक[illegible] ॥
[illegible] ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ वैमानिक[illegible]
स्पातीत ॥ सोलस्वर्गकेदेवमे [illegible]
देवहैं ॥ अर सोलस्वर्गके ऊपर

रमाआणतस्वर्ग चौदमाप्राणतस्वर्ग पद्रमाआरणस्वर्ग सोलमाअच्युतस्वर्ग येच्यारस्व
र्गके देवदेवांगनाका मनमेचिंतवन करनेतेही कामकी तृप्तहोयहैं॥८॥सूत्र॥ परेप्रवीचा
रा ॥९॥अर्थ॥सोलास्वर्गके ऊपरके समस्त अहमिंद्रदेवकै कामवेदनाका लेशहीनहीहै
तातै अप्रवीचारहै मैथुनरहित हैं ॥९॥ सूत्र॥ भवनवासिनोसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवात
स्तनितोदधिद्वीपदिकुमारा ॥१०॥ अर्थ॥ भवनवासीदेवमै दशप्रकारहैं सो कहैंहै॥ अ
सुरकुमार १ नागकुमार १ विद्युतकुमार १ सुपर्णकुमार १ अग्निकुमार १ वातकुमार १
स्तनितकुमार १ उदधिकुमार १ द्वीपकुमार १ दिकुमार १ ये दशप्रकारके भवनवासीदेवहैं
तिनका वेप भूपण आयुध वाहन गमन क्रीडनइत्यादि कुमारवतूहैं॥तातै तिनकै कुमारस
ज्ञाहैं॥१०॥ सूत्र ॥ व्यतरा किंनरकिंपुरुपमहोरगगधर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचा ॥११॥
॥ अर्थ ॥ व्यतरदेवमै अष्टप्रकारहैंसोकहैंहैं ॥ किंनर १ किंपुरुष १ महोरग १ गधर्व
१ यक्ष १ राक्षस १ भूत १ पिशाच १ ये अष्टप्रकारके व्यतरदेवहैं सो नानादेशनी
मे निवासकरनेवाले गमनकरनेवाले व्यतरहैं ॥ ११ ॥ सूत्र ॥ ज्योतिष्का सूर्याचद्रम
सौग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ ज्योतिष्कदेवमैं पचप्रकारहैंसोकहै
है ॥ सूर्य १ चद्र १ ग्रह १ नक्षत्र १ तारा १ ॥ १२ ॥ सूत्र ॥ मेरुप्रदक्षिणानित्य
गतयोनृलोके ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ ये पचप्रकारके ज्योतिषीदेवहैं सो मेरुकैनित्यप्रदक्षि

आत्मरक्षकदेवहै १ अर द्वारपालसमान जे देवहैं सो लोकपालदेवहैं ॥ १ ॥ से
मानदेवहैं ते आनीकदेवहैं ॥ १ ॥ जे देव नगरनिवासी प्रजाकेसमानहैं सो
देवहैं ॥ १ ॥ जे देव वाहनादिककर्ममें प्रवर्तनेवालेहैं सो अभियोग्यदेवहैं
चांडालादिसमान, इंद्रकीसभामे नप्रवेशकरनेवाले सो किल्विषिदेवहैं ॥
देवमे दशप्रकारहैं ॥ ४ ॥ सूत्र ॥ त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्याव्यंतरज्योतिष्काः
॥ अर्थ ॥ व्यंतरदेव अर ज्योतिषिदेवमे त्रायस्त्रिंशत् अर लोकपालदेव नहीं ॥ ५
॥ सूत्र ॥ पूर्वयोर्द्वींद्राः ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ भवनवासीदेव अरव्यंतरवासीदेव इनमे
दोइंद्रहैं ॥ ६ ॥ सूत्र ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ अर्थ
नवासीदेव ज्योतिषीदेव सौधर्मस्वर्ग अर ईशानस्वर्गकेदेव
॥ ७ ॥ सूत्र ॥ शेषाः
स्पर्श [illegible]

॥ अथतत्वार्थसूत्रचतुर्थअध्यायप्रारंभ ॥ सूत्र ॥ देवाश्चतुर्निकाया ॥ १ ॥ ॥अर्थ॥ ॥ देवके॥च्यार प्रकार हैं॥ ॥ ॥१॥ ॥सूत्र॥ ॥ ॥आदितस्त्रिषुपीतांतलेश्या॥ ॥ ॥२॥ ॥अर्थ ॥ भवनवासी॥देव,॥व्यंतरदेव,॥ ज्योतिषीदेव,॥ इन॥तीनूकायमे॥ कृष्ण,॥ नील,॥कापोत॥ पीत,॥पर्यंत॥च्यार॥ही॥लेश्या॥हैं॥ ॥२॥सूत्र॥ ॥ ॥दशाष्टपंचद्वादशविकल्पा कल्पोपपन्नप र्यंता॥ ॥ ॥३॥ ॥ ॥अर्थ॥ ॥ ॥भवनवासीदेवमे॥दश॥प्रकारहैं॥ ॥व्यंतरदेवमे॥अष्टप्रकार हैं॥ ॥ज्योतिषीदेवमे॥ पंचप्रकारहैं॥ ॥कल्पवासीकहियेस्वर्गवासीदेवमो॥बाराप्रकारहैं॥ ॥ ॥ ॥३॥ ॥सूत्र॥ ॥ ॥इंद्रसामानिकत्रायस्त्रिंशत्पारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभि योग्यकिल्विषिकाश्चैकश॥ ॥ ॥४॥ ॥ ॥अर्थ॥ ॥ ॥देवमे॥ दशप्रकारहैं॥सो॥कहैंहैं॥ ॥ ॥इंद्रदेव॥१॥ समानिकदेव॥१॥त्रायस्त्रिंशत्देव॥१॥पारिषददेव॥१॥आत्मरक्षकदेव॥१॥लोकपालदेव॥१॥ अनीकदेव॥१॥प्रकीर्णकदेव॥१॥अभियोग्यदेव॥१॥किल्विषदेव॥१॥ऐसे दश॥भेदहैं॥ ॥ ॥समस्त देवऊपर॥जाकीआज्ञा॥हुकुमहोय॥सोइंद्रहैं॥ ॥ ॥१॥ ॥जो॥देवको॥स्थान॥ आयु,॥शक्ती,॥भोग, उपभोग,॥परिवार,॥इत्यादिक इंद्रकेसमानहोय॥परंतु॥आज्ञा ऐश्वर्यइंद्रकेसमाननहीहोय ऐसो॥देव,॥इंद्रकेपितासमान॥गुरूसमान॥उपाध्यायसमान॥हैं॥सो॥सामानिकदेवहैं॥ ॥ ॥१॥ ॥ जे॥देव॥मंत्रीसमान॥पुरोहितसमानहैं॥सो॥त्रायस्त्रिंशत्देवहैं॥ ॥ ॥१॥ ॥ ॥सभामेंबैठनेवाले जे॥देव॥हैं॥सो॥पारिषददेवहैं॥ ॥ ॥१॥ ॥ ॥जे॥देव॥शस्त्रधारनकरनेवाले॥ सुभटसमानहै॥ ॥सो

सरा ॥३०॥ अर्थ ॥ उत्तरकेक्षेत्रजे हैरण्यवत, रम्यक, उत्तरकुरु, इनमे उपजे
[illegible]आयु एकपल्य, दोयपल्य, तीनपल्य, प्रमाणहैं ॥ ३० ॥ सूत्र ॥
[illegible] ॥३१॥ अर्थ ॥ विदेहक्षेत्रविषे मनुष्यका संख्यातकालका आयुहै ॥ [illegible]
भरतस्यविष्कंभोजंबूद्वीपस्य नवतिशतभाग ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ जंबूद्वीपका
भागकरना उसीमे एक भागप्रमाणभरतक्षेत्रहै ॥३२॥ सूत्र ॥ [illegible]
अर्थ ॥ धातकीद्वीपमे भरतादिकक्षेत्र दोयदोयहैं ॥ ३ ॥ ॥[illegible]
अर्थ ॥ पुष्करद्वीपका अर्धभागमेभी भरतादिकक्षेत्र ॥३४॥
[illegible] ॥३५॥ अर्थ ॥ मानुषोत्तर पर्वततांईही मनु [illegible]
त्रमे मनुष्य नाहीहैं ॥३५॥ सूत्र ॥
[illegible]के म ॥ ३६ ॥ ॥
[illegible]
[illegible]

रक्तानदीके अर रक्तोदानदीके चौदह चौदहहजार नदीकापरिवारहैं ॥ २३ ॥ सूत्र ॥
भरतःपड्विंशतिपचयोजनशतविस्तार षट्चैकोनविंशतिभागायोजनस्य ॥२४॥अर्थ॥
भरतक्षेत्रका दक्षणउत्तरविस्तार पाचसैछवीसयोजन अर छहकलाहै ॥२४॥सूत्र॥तद्दि
गुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षाविदेहाता ॥२५॥अर्थ॥ भरतक्षेत्रते द्विगुणविस्तार हि
मवन्पर्वतकाहैं अर हिमवन्पर्वतते हिमवन्क्षेत्रका दूनाविस्तारहैं ॥ ऐसैं विदेहपर्यंत
पर्वत अर क्षेत्रकाविस्तार दूना दूनाहैं ॥ २५ ॥ सूत्र ॥ उत्तरादक्षिणतुल्य ॥२६॥ अर्थ
विदेहतेपरे उत्तरदिशाके पर्वत क्षेत्र नदी द्रह कमलादिकहैसो ॥ दक्षिणदिशाके भरता
दिकक्षेत्र अर हिमवन्आदिकपर्वतके समान हैं॥२६॥सूत्र ॥ भरतैरावतयोर्वृद्धिन्हासौ
षट्समयाभ्यामुत्सर्पिणवसर्प्पिणीभ्या॥२७॥अर्थ॥ भरतअरऐरावतक्षेत्रमै उत्सर्पिणी
अवसर्पिणी कालकेनिमित्तकरि मनुष्यअरतिर्यंचका आयु कायादिक घटैंहैं वा वधै हैं
॥२७॥सूत्र॥ ताभ्यामपराभूमयोवस्थिता ॥२८॥अर्थ॥भरतक्षेत्रअरऐरावतक्षेत्रते अ
न्यक्षेत्रकीभूमी अवस्थितहै,तहा कालकरि घटति वधति नहींहैं॥ २८ ॥ सूत्र ॥ एक
द्वित्रिपल्योपमस्थितयोहैमवतकहारिवर्षकदैवकुरुवका ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ हिमवन्क्षेत्र
मै उपजे मनुष्यनिकाआयु एकपल्यका प्रमाणहै ॥ हरिक्षेत्रमै मनुष्यकाआयू दोय पल्य
का प्रमाणहैं ॥ देवकुरूमै उपजे मनुष्यकाआयु तीनपल्यकाहैं ॥ २९ ॥ सूत्र ॥ तथो

सभानिवासीनी देवकरियुक्त वसैहै॥१९॥ सूत्र ॥ गंगासिंधुरोहिद्रोहितास्याहरि[illegible]

तासीतासीतोदानारीनरकातासुवर्णरूप्यकुलारक्तारक्तोदासरितस्तन्मध्यगा ॥ [illegible]

अर्थ ॥ ये सप्तक्षेत्रकेमध्य गमनकरनेवाली चतुर्दश नदीहैं ॥ गंगा १ सिंधु

३ रोहितास्या ४ हरित् ५ हरिकांता ६ सीता ७ सीतोदा ८ नारी ९ नरकांता

सुवर्णकूला ११ रूप्यकूला १२ रक्ता १३ रक्तोदा १४ ॥ ये चौदामहानदी हैं ॥२

सूत्र ॥ द्वयोर्द्वयो पूर्वा पूर्वगा २१ ॥ अर्थ ॥ चतुर्दशनदीमे, दोयदोयनदीमे

प्रथमनदीकही सो पूर्वसमुद्रमै गमनकरनेवालीहै ॥ २१ ॥ सूत्र ॥ [illegible]

॥२२॥ अर्थ ॥ दोयदोयनदीमे पीछैनदीकही सो प[illegible]

वालीहै ॥ २२ ॥ सूत्र ॥

अर्थ ॥ गंगानदीअरसिंधूनदी [illegible]

[illegible]

अर मध्यमें ॥ भीतकेसमान चौडेहैं ॥ १३ ॥ सूत्र ॥ पद्ममहापद्मतिगंछकेशरिमहा
पुडरीकपुडरीका ह्नदास्तेपासुपरि ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ हिमवनादि छहपर्वतकेऊपर छ
हसरोवर हैं ॥ तिनकेनाम कहेंहैं ॥ पद्मसरोवर १ महापद्मसरोवर १ तिगिंछसरोवर १
केशरीसरोवर १ पुडरीकसरोवर १ महापुडरीकसरोवर १ ये छहन्हद (द्रह) जलके
भरेहै ॥ १४ ॥ सूत्र ॥ प्रथमोयोजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कंभोन्हद ॥ १५ ॥ अर्थ
पद्मनामका प्रथमद्रह पूर्वपश्चिम हजारयोजनलंबाहै अरदक्षिणउत्तर पाचसैयोजन
चौडाहैं ॥ वज्रमय तल है नानामणिसुवर्णकरि विचित्रतटहै ॥ १५ ॥ सूत्र ॥ दशयो
जनावगाह ॥१६॥ अर्थ ॥ पद्मनामका प्रथमद्रह दसयोजन उंडा (खोल) है ॥१६॥
॥ सूत्र ॥ तन्मध्येयोजनपुष्कर ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ पद्मनामद्रहविषै एकयोजनका कम
ल है ॥ १७ ॥ सूत्र ॥ तद्द्विगुणद्विगुणान्हदा पुष्कराणिच ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ द्वितीयम
हापद्मद्रहकी लंबाईचौडाईउंडाईकाप्रमाण पद्मद्रहतै दूनाहैं अर महापद्मद्रहकाप्रमा
णतै तिगिंछद्रहकाप्रमाण दूनाहैं ॥ ऐसैही कमलकाप्रमाण दूनाहैं ॥१८॥ सूत्र ॥ तन्नि
वासिन्योदेव्य श्रीन्हीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्य पल्योपमस्थितय ससामानिकपरिषत्का
॥१९॥ अर्थ ॥ वो कमलनीमें वसनेवाली छहदेवीहै ॥ श्रीदेवी ह्रीदेवी धृतिदेवी की
र्तिदेवी बुद्धिदेवी लक्ष्मीदेवी ॥ येछह भवनवासिनी देवीहैं ते अपने सामानीकदेव अर

जनकाचौडा सूर्यमंडलकेआकार गोल जंबूद्वीपहै ॥ अर जंबूद्वीपकेमध्य मेरुपर्वतहै ॥ मनुष्यकेशरीरके मध्यभागमें नाभिहै तैसाजंबूद्वीपकेविषे मध्यमेरुपर्वतहै ॥ सो मेरुपर्वत मूलमें दसहजारयोजनका मोठाहैं ॥९॥ सूत्र ॥ भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षा क्षेत्राणि ॥ १० ॥ अर्थ ॥ भरत १ हैमवत २ हरि ३ [illegible] ४ रम्यक ५ हैरण्यवत ६ ऐरावत ७ ये सप्तक्षेत्र जंबूद्वीपमें हैं ॥ १० ॥ सूत्र ॥ [illegible]माजिन पूर्वापरायताहिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मि[illegible] ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ ये सप्तक्षेत्रके भागकरनेवाले छहपर्वतहैं [illegible] [illegible]पा वर्षधरपर्वतही कहतेहैं ॥ उसीकानाम ॥ हिमवान्पर्वत [illegible]षपर्वत, नीलपर्वत, रुक्मिपर्वत, शिखरीपर्वत ॥ ये पूर्वपश्चिमलंबे पर्वतहैं ॥ ११ ॥ सूत्र ॥ [illegible]

अर्थ ॥ [illegible]

पर्वत [illegible]

राय दु खउपजावैंहैं तिसरानरकपर्यंतही असुरकुमारदेवजाय आगैनहीजाय॥५॥सूत्र॥
तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमासत्वानापरास्थिति ॥ ६ ॥
॥ अर्थ ॥ नरककी सप्तपृथ्वीविषै नारकीजीवका उत्कृष्टआयु कहैहैं ॥ पहिलानरकमै
एकसागर ॥ दुसरानरकमै तीनसागर ॥ तिसरानरकमै सप्तसागर ॥ चौथानरकमै दश
सागर ॥ पाचवानरकमै सत्रहसागर ॥ छठानरकमै बाईससागर ॥ सातमानरकमै तेती
ससागरहै॥ ऐसा प्रमाण अनुक्रमतैंहैं ॥ [अब जघन्य आयुकहै ॥ पहिलानरकमै दश
हजारवर्ष ॥ दुसरानरकमै एकसागर ॥ तीसरानरकमै तीनसागर ॥ चौथानरकमै सा
तसागर ॥ पाचमानरकमै दससागर ॥ छठानरकमै सत्रहसागर ॥ सातमानरकमै बाई
ससागरहै]॥ ६ ॥ सूत्र ॥ जम्बूद्वीपलवणोदादय शुभनामानोद्वीपसमुद्रा ॥ ७ ॥
अर्थ ॥ मध्यलोकमैं जम्बूद्वीपादिकद्वीप अर लवणोदादिकसमुद्र शुभनामकेधार
क ऐसे असख्यातद्वीप अर असख्यातसमुद्रहैं ॥७॥ सूत्र ॥ द्विर्द्विर्विष्कभा पूर्वपूर्वपरि
क्षेपिणोवलयाकृतय ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ ये द्वीपअरसमुद्र दूनेदूनेहैं ॥ द्वीपसे समुद्रदूनाहै
अर समुद्रसे द्वीपदूनाहैं ॥ द्वीपकौ समुद्रवेढैहैं अर समुद्रकौ द्वीपवेढैहैं ॥ समस्त द्वीप
अर समुद्र कंकणकेआकार गोलाकार हैं ॥ ८ ॥ सूत्र ॥ तन्मध्येमेरुनाभिर्वृत्तोयो
जनशतसहस्रविष्कभोजम्बूद्वीप ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ समस्तद्वीपसमुद्रकेमध्य एकलक्षयो

॥ अथतत्वार्थसूत्रतृतीयअध्यायप्रारंभ ॥ सूत्र ॥ रत्नशर्कराबालुकापंकधूमतमो
महातम प्रभाभूमयोघनांबुवाताकाशप्रतिष्ठा सप्ताधोधा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ रत्नप्र
भा १ शर्कराप्रभा २ वालुकप्रभा ३ पंकप्रभा ४ धूमप्रभा ५ तमप्रभा ६
प्रभा ७ ये सप्तभूमी नीचेनीचेअवस्थितहैं ॥ अर घनोदधिपवन १ घनपवन
पवन १ अर आकाश इनिकरि वेष्टितहैं ॥ १ ॥ सूत्र ॥ तासुत्रिं
पंचदशदशत्रिपंचोनेकनरकशतसहस्राणिपंचचैवयथाक्रमं ॥ २ ॥ [illegible]
अनुक्रमतें चौरासीलक्ष बिलैहैं ॥ १ में तीसलक्ष ॥ २ में [illegible]
पंद्रहलक्ष ॥ ४ में दशलक्ष ॥ ५ में तीनलक्ष ॥ ६ में [illegible]
॥ ७ में पांच ॥ ऐसें सप्तमिनिके चौरासी[illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥

आहारकशरीर कोऊपदार्थतै रुकैनाहि तातै अव्याघातिहैं ॥४९॥ सूत्र ॥ नारकसन्मूर्च्छिनोनपुसकानि॥ अर्थ॥ नारकीजीवकै अर सन्मूर्छनजन्मवालेजीवकै नपुसकलिंग हीहोयहै और दोयलिंग नहीहोय ॥ ५० ॥ सूत्र॥ नदेवा ॥ ५१ ॥ अर्थ ॥ देवनीके नपुसकलिंग नहीहोयहै ॥ ५१ ॥ सूत्र ॥ शेषास्त्रिवेद ॥ ५२ ॥ अर्थ ॥ शेषकहिये नारकी अर सन्मूछन अर देव इनिवीना कर्मभूमीके गर्भजमनुष्य अर गर्भजतिर्यंच इनीकै तीनौवेद होयहैं ॥ अर भोगभूमीके मनुष्य तथा तिर्यंचनीकै पुरुपवेद अर स्त्रीवेद ये दोयवेदहीहैं ॥५२॥ सूत्र ॥ औपपादिकचरमोत्तमदेहासंख्येयवर्षायुषोनपवर्त्यायुप ॥ ५३ ॥ अर्थ ॥ देव अर नारकी अर चरमोत्तमदेहकेधारि अर असख्यातवर्षके आयुकोधारि भोगभूमीकेमनुष्यअरतिर्यंच इनकाआयु विषशस्त्रादिकवाह्य निमित्ततैंनाहीछीदैहैं ॥ ५३ ॥ इतितत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेद्वितीयोध्याय ॥ २ ॥

१ सातनरककेनाम घंमा, वशा, मेघा, अंजना, अरिष्टा, मघवी, माघवी



होयगा तहांताईरहेगा ॥ ४१ ॥ सूत्र ॥ सर्वस्य ॥४२॥ अर्थ ॥ तैजस अरकार्माण ये दोऊशरीर समस्तसंसारीजीवकेंहैं ॥४२॥ सूत्र ॥ तदादीनिभाज्यानियुगपदेकस्मिन्ना चतुर्भ्यः ॥ ४३ ॥ अर्थ ॥ एकजीवके एककालमें तैजस कार्माणकूंआदिलेय शरीरतांईहोयहैं ॥ कोउके तैजसशरीर अर कार्माणशरीर ऐसें दोय कोऊके औदारिक, तैजस, कार्माण, ऐसेंतीनशरीरहोयहैं ॥ तथा कोऊके तैजस, कार्माण, ऐसेंहु तीनशरीरहोयहैं ॥ कोऊके औदारिक, [illegible] कार्माण, ऐसेंच्यारशरीरहोयहैं ॥ ४३ ॥ सूत्र ॥ निरुपभोगमन्त्यं ॥ [illegible] अंतकाजोकार्माणशरीर ताके इन्द्रियद्वारे शब्दादिकविषयनी[illegible]

॥ सूत्र ॥ गर्भसन्मूर्छनजमाद्यं ॥ ४[illegible] ॥ [illegible]

औदारिक हैं ॥ ४५ ॥ ॥

जन्मौ[illegible]

देवनारकाणामुपपाद ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ देवकै अर नारकीनीकै उपपादजन्महैं ॥३४॥
सूत्र ॥ शेषाणासन्मूर्छन ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ गर्भज अर उपपादविना उपजैहै
ते सन्मूर्छन जन्म हैं ॥ ३५ ॥ सूत्र ॥ औदारिकवैक्रियकाहारकतैजसकार्मणानि
शरीराणि ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥ औदारिक १ वैक्रियक १ आहारक १ तैजस १ कार्मोण
१ ऐसैं पचप्रकारके शरीर हैं ॥ ३६ ॥ सूत्र ॥ परंपरंसूक्ष्म ॥ ३७ ॥ अर्थ ॥ ये
पचप्रकारके शरीर कहे सो एकतैएकसूक्ष्महैं ॥ औदारिकतै वैक्रियकशरीरसूक्ष्महै ॥
वैक्रियकशरीरतै आहारकशरीरसूक्ष्महै ॥ आहारकशरीरतै तैजसशरीरसूक्ष्महै ॥ अर
तैजसशरीरतै कार्माणशरीरसूक्ष्महै ॥ ३७ ॥ सूत्र ॥ प्रदेशतोसख्येयगुणंप्राक्
तैजसात् ॥ ३८ ॥ अर्थ ॥ औदारिकशरीरतै वैक्रियकशरीरके असख्यातगुणे प्रदे
शअधिक हैं अर वैक्रियकशरीरतै आहारकशरीके असख्यातगुणे प्रदेशअधिकहैं
॥ ३८ ॥ सूत्र ॥ अनतगुणेपरे ॥ ३९ ॥ अर्थ ॥ आहारकशरीरतै तैजसशरीरके
अनतगुणे प्रदेशअधिक हैं ॥ तैजसशरीरतै कार्माणशरीरके अनतगुणे प्रदेशअधि
क है ॥ ३९ ॥ सूत्र ॥ अप्रतीघाते ॥ ४० ॥ अर्थ ॥ तैजसशरीर अर कार्माणशरीर
समस्तत्रैलोक्यमै वज्रपटलादिकमैंहू नहीरूकैंहैं ॥४०॥ सूत्र ॥ अनादिसबधेच ॥४१॥
अर्थ ॥ इसजीवके तैजस अर कार्माणशरीरका सबध अनादिकालतैंहैं अर मुक्ती नही

आहार विग्रहगतीमें नहीहैं तातै अनाहारक हैं ॥ अन्यअवसरमे समस्तसंसारीजीव
आहारक हीहैं ॥ अर कर्मवर्गनाकाग्रहण विग्रहगतीमेभीहैं ॥ ३० ॥ सूत्र ॥ स
न्मूर्छनगर्भोपपादाजन्म ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ त्रैलोक्यविषै ऊपर नीचै तिर्यक [illegible]
त्रमें नो (नवीन) पुद्गलकाग्रहणकरि देहका उपजना सो सन्मूर्छन जन्म हैं ॥
[illegible]ीकेउदरविषै माताकारुधिर पिताकावीर्यको ग्रहणकरि देहका उपजना सो
जन्म हैं ॥ अर देवनीके तथा नारकीनीके उपपादस्थाननीमे पुद्गल [illegible]
उपपादजन्म हैं ॥ ऐसैं तीनप्रकारजन्म हैं ॥ ३१ ॥ सूत्र ॥
तरामि[illegible]योनयः ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ सचित्त १
[illegible] मिश्र ३ शीत ४ उष्ण ५ शीतउष्ण [illegible]
[illegible]मिश्र ९ ऐसैंनवप्रकारकेपुद्गल
[illegible]हैं ॥ ३

पंक्तीरूपअधः पक्तीरूपतिर्यक् गमनकरै ॥ २६ ॥ सूत्र ॥ अविग्रहाजीवस्य ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ कर्मरहितहोयकै जो जीव सिद्धालयकोजायहै ताके कुटिलतारहित (सूधा) उर्द्धगमन हीहै ॥ २७ ॥ सूत्र ॥ विग्रहवतीचसंसारिण प्राक्चतुर्भ्यं ॥ २८ ॥ अर्थ ॥ संसारीजीव मरनकरि नवीनशरीर ग्रहनकरनेकैअर्थ गमनकरैहै तहाकोऊजीवतौ सूधाहीगमनकरि जायउपजैहै ॥ कोईएकमोडालेयजायउपजैहै ॥ कोईजीवकै दोयमोडालीये उपजना होयहै, कोऊजीव तीनमोडालेयउपजैहै ॥ चतुर्थमोडालेयनहीं चतुर्थमोडालेनेयोग्य कोऊदूरलवाक्षेत्रही नहीहै ॥ २८ ॥ सूत्र ॥ एकसमयाविग्रह ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ जो जीव मोडारहित सूधीगती योग्यक्षेत्रमे उपजै है ताकाकाल एकसमयकाहै ॥ २९ ॥ सूत्र ॥ एकद्वौत्रीन्वानाहारक ॥ ३० ॥ ॥ अर्थ ॥ जो जीव सूधा जाय उपजैहै सो आहारकहै ॥ अरजो एक मोडा कोलाटी उडी (गिरकी) लेय उपजैहै सो एकसमय अनाहारकहै, दूजैसमै आहारग्रहण करै ॥ दोयमोडालेयकरि उपजै सो दोयसमय अनाहारक है, तीजेसमय आहारग्रहण करै ॥ तीनमोडालेयउपजै सो तीनसमय अनाहारक है, चतुर्थसमय आहारग्रहण करै ॥ इहा आहारका अर्थ ऐसासमजना, जो जीवमरनकरि दूसरे गतीमें उपजैतहा माताकेगर्भमै पटपर्याप्तिकाग्रहण तथा योग्यपुद्गलका ग्रहणकारणा सो आहार हैं ॥ सो

श्रोत्राणि ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र, ये
॥ १९ ॥ सूत्र ॥ स्पर्शरसगंधवर्णशब्दास्तदर्थाः ॥ २० ॥ अर्थ ॥
गंध, वर्ण, शब्द, ये पंचइंद्रियनके पंचविषयहैं ॥ २० ॥ सूत्र ॥
॥ २१ ॥ अर्थ ॥ श्रुतज्ञानहै सो मनका विषयहै ॥ २१ ॥ सूत्र ॥
॥ २२ ॥ अर्थ ॥ पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, [illegible]
प्रकारके स्थावरजीवके एक स्पर्शन इंद्रियहै ॥ २२ ॥ सूत्र ॥
[illegible] ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ पिपीलिकादिकनिके [illegible], [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]

इंद्री पचेंद्री ॥ ऐसें च्यार प्रकारके त्रसहैं ॥ १४ ॥ सूत्र ॥ पंचेंद्रियाणि ॥ १५ ॥ अ
र्थ ॥ इंद्रियपाचहीहैं ॥ १५ ॥ सूत्र ॥ द्विविधानि ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ पांचूइंद्रियमें
दोयप्रकारहै ॥ एकद्रव्येंद्रिय एकभावेंद्रिय ॥ १६ ॥ सूत्र ॥ निर्वृत्युपकरणेद्रव्येंद्रियं
॥ १७ ॥ अर्थ ॥ द्रव्येंद्रियमेंदोयभेदहैं ॥ एकनिर्वृतिअरएकउपकरण ॥ अरनिर्वृ
तिमेंदोयभेदहै ॥ अभ्यंतरनिर्वृति ॥ वाह्यनिर्वृति ॥ अवअभ्यंतरनिर्वृतिकेंहैंहै ॥
उत्सेधअगुलकेअसख्यातमेंभागप्रमाण शुद्धआत्माकाप्रदेश नेत्रादिकइंद्रियकेआ
कारहोयके इंद्रियकेस्थानमेंतिष्ठे सो अभ्यतरनिर्वृतिहै ॥ अरपाचइंद्रियआकारपरण
तिरूप आत्मप्रदेशनिविषे नामकर्मकेउदयकरि इंद्रियनीकेआकारपुद्गलसमूहतिष्ठे
सो वाह्यनिर्वृतिहै ॥ वहुरिजो निर्वृतिकों उपकारकरनेवालाहोय सो उपकरणकहिये
सो उपकरणहू दोयप्रकारहैं ॥ नेत्रनीमेंशुक्लकृष्णमंडळहै सो अभ्यतर उपकरणहै ॥
अरवाफणी (पापण्या) पक्ष (भवेया) येवाह्यउपकरणहैं ॥ ऐसेंसमस्तइंद्रियनीका स्व
रूपजानना ॥ १७ ॥ सूत्र ॥ लब्ध्युपयोगौभावेंद्रिय ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ भावेंद्रियमें दो
यभेदहैं ॥ एकलब्धिअरएकउपयोग ॥ इंद्रियज्ञानावरणीय कर्मका क्षयोपशमकाहो
ना सो लब्धिहै ॥ अरलब्धिकेसामर्थ्यतें आत्मा द्रव्येंद्रियकेरचनाप्रति प्रवर्तन करे
सो उपयोगहै ॥ ऐसेंदोयप्रकार भावेंद्रियहैं ॥ १८ ॥ सूत्र ॥ स्पर्शनरसनघ्राणचक्षु

प्रगटनहीभया परंतु भातका संकल्पकरिकैं कार्यकरेहै तातैंसंकल्पमात्रका[illegible]

नयहै ॥ १ ॥ अपनीजातिकौं प्रगटकरिकैं पर्यायकाभेद नकरिकैं समस्तका

ग्रहणकरनेवाला संग्रहनयहैं ॥ उदाहरण ॥ वनीका[illegible] बाजार[illegible]

॥ २ ॥ संग्रहकरिकैं कह्यावस्तुका विशेषजानेबिना प्रवृत्तिनहिहोय

दूसराभेदनहीहोय तहांताईं पृथक् पृथक् कहना सोव्यवहारनय प्रवर्तेहै ॥ ३ ॥

भिन्नउविषयकौंछोरिकैं वर्तमानविषयमात्रकाग्रहणकरनेवाला ऋ[illegible]

तातैंविनसीगया अरअनागतउत्पन्ननहीभया तातैं अतीत

[illegible] ॥ ४ ॥ लिंग संख्या साधनादि[illegible] दूरकरनेवाला [illegible]

अर्थकौंछाडिकरिकैं एकअर्थनेप्रधानकरि [illegible]

जिसस्वरूपकरिकैंपदार्थहोय तिसस्वरूप[illegible]

जैसैं ऐश्वर्य[illegible]

॥ ७ ॥ ६ ॥ ॥

॥ २८ ॥ सूत्र ॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ जीवादिकसमस्तद्रव्य अरसमस्तद्रव्यनिकी भूत भविष्य वर्तमान त्रिकालवर्त्ती अनंतपर्यायनीविषैजाननेंका केवलज्ञानकानियमहैं ॥ २९ ॥ ॥ सूत्र ॥ एकादीनिभाज्यानियुगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्य ॥३०॥ अर्थ ॥ एकआत्माविषैं युगपत् एकज्ञानकोंआदिलें चारपर्यंत ज्ञान होयहैं ॥ एकहोयतदि केवलज्ञानहोय ॥ दोयहोयतहांमतिज्ञान अरश्रुतज्ञानहोयहैं ॥ तीनज्ञानहोयतहां मति, श्रुति, अवधि, होय वा मति, श्रुति, मन पर्यय, होय॥ च्यार ज्ञानहोयतहा मति, श्रुति, अवधि, मन पर्यय, होयहैं॥ ३० ॥ ॥ सूत्र ॥ मतिश्रुतावधयोविपर्ययश्च ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ मति श्रुति अवधि येतीनज्ञानमिथ्याभीहोयहैं जैसें कडवीतुंबिमें रखाहुवादुग्धकटुकहोयहै तैसेंमिथ्याश्रद्धानीकाज्ञानहूमिथ्याहोयहैं ३१ ॥ ॥ सूत्र ॥ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ सत् असत्यका विच्यारनकरिकें जोइच्छाकरि उन्मत्तकीनाई ग्रहणकरनेतें ज्ञानकेविपर्ययपणा होयहै ॥३२॥ ॥ सूत्र ॥ नैगमसंग्रहव्यवहारऋजुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूतानया ॥ ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ जोअर्थतो परिपूर्णनहीभया अरतिसविषैंसंकल्पमात्रकाग्रहणकरनेवाला नैगमनयहै ॥ उदाहरण ॥ जैसेंकोऊपुरुष इंधनजलादिकसामग्री ग्रहणकरैथा तिसकों कोऊपूछ्यातुमकहाकरोहो तदिवोकहै मैं भात पकाऊंहू, तहामातकापर्याय

मतिमन:पर्ययज्ञानहुवाफेरछूटैनही केवलज्ञानही उपजावै ॥२४॥ ॥ सूत्र ॥ विशुद्धि
क्षेत्रस्वामिविषयेभ्योवधिमन:पर्ययो ॥ २५॥ अर्थ ॥ अवधिज्ञानतै मनःपर्ययज्ञान
की शुद्धताअधिकहै ॥ अर क्षेत्रअवधिज्ञानकाअधिकहै ॥ अबस्वामित्वकहैहै ॥ अ
वधिज्ञानतो संयमीकै होयहै अरअसंयमीकैहीहोयहै ॥ अर मनः
संयमीकै होयनही॥ संयमीकैहीहोयहै ॥ परंतु सप्तमगुणस्थानमैंकोउत्कृष्टजाकै
ऐसैंविशेषचारित्रयुक्तसंयमी (मुनि) हीकै मन:पर्ययज्ञानहोय ॥
मन:पर्ययज्ञानका जानपनाविशेषसूक्ष्महै ॥ मनका सूक्ष्मसंबंध मन
ऐसैंअवधिअरमनःपर्ययमैं विशेषहै ॥२५॥ ॥ ॥
पर्यायेषु ॥ ६॥ अर्थ ॥ मतिज्ञान अर
॥

॥ अर्थ ॥ श्रुतज्ञानहोयहैसोमतिज्ञानपूर्वकहोयहै ॥ श्रुतज्ञानकाकारणमतिज्ञानहै ॥
श्रुतज्ञानके दोयभेदहै तथाद्वादशभेदहैं तथा अनेकभेदहैं ॥ २० ॥ ॥ सूत्र ॥ भ
वप्रत्ययोवधिर्देवनारकाणा ॥ २१ ॥ अर्थ ॥ देवनिकैतथानारकिनिकैअवधिज्ञानहै
ताकोभवकहियेदेवनारककीपर्यायहीकारणहै ॥ जोदेवकीअरनारककी पर्यायधरैगा
ताकै अवधिज्ञानावरणकाक्षयोपशमहोय नियमतैअवधिज्ञानउपजैहीगा ॥ मिथ्यादृष्टी
देव तथा नारकीकै विभंगाअवधिहोय ॥ अर सम्यग्दृष्टीदेवतथानारकीकै सम्यग्
अवधिहोयहै ॥ २१ ॥ ॥ सूत्र ॥ क्षयोपशमनिमित्त षड्विकल्प शेषाणा ॥ २२ ॥
॥ अर्थ ॥ शेषकहिये मनुष्य अरसंज्ञीतिर्यंच इनिमै कोईकैअवधिज्ञानहोयहै सो अव
धिज्ञानावरणकर्मके क्षयोपशमतैअवधिज्ञानहोयहै ॥ ताकैछहभेदहैं ॥ अनुगामि १
अननुगामि २ वर्द्धमान ३ हियमान ४ अवस्थित ५ अनवस्थित ६ ऐसैं अवधि
ज्ञानके छहभेदकहें ॥ २२ ॥ ॥ सूत्र ॥ ऋजुविपुलमती मन पर्यय ॥ २३ ॥
॥ अर्थ ॥ ऋजुमतिमन पर्यय अरविपुलमतीमन पर्यय ऐसैदोयप्रकारकामन पर्यय
ज्ञानहैं ॥ २३ ॥ सूत्र ॥ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यातद्विशेष ॥ २४ ॥ अर्थ ॥
ऋजुमतिमन पर्ययसे विपुलमतिमन पर्ययमै विशुद्धताअधिकहै सो द्रव्य क्षेत्र काल
भाव करि अधिकहैं ॥ अरऋजुमतिमन पर्ययज्ञानछूटैतो छूटहीजायहै अरविपुल

अरएकप्रकारकेवस्तुकाहू अवग्रहहोयहैं ॥ शीघ्रकाअवग्रह अर चिरकालकरि अवग्रहहोयहैं ॥ समस्तवस्तु बाह्यप्रगटनहीनिकली ताका अवग्रहहोयहैं ॥ अर समस्तवस्तु बाह्यनिकली ताका अवग्रह होयहैं ॥ बहुरि बिनाकह्याका अभिप्रायसे [illegible] होयहैं ॥ अरकह्याहुवाकाहू अवग्रहहोयहै ॥ बहुरि वस्तुकोजसारूपहोयतैसानिरंतर [illegible] ग्रहहोयहैं ॥ अर क्षणक्षणमैं भिन्नभिन्नहू अवग्रहहोयहैं ॥ ऐसैं द्वादशप्रकार अवग्रहना मतिज्ञानकेभेदकहैं ॥ तैसैंहीद्वादशप्रकार ईहानामामतिज्ञानकेभेद ॥ तैसैं द्वादशप्रकार आवायकेभेद ॥ तैसैंही द्वादशप्रकार धारणाकेभेद जानना ॥ [illegible] समेदभये ॥ ऐसैंही एक एक इंद्रियकेबारे [illegible]

के अरतालीसभेदहैं ॥ पंचइंद्रियके अरमनके

॥१६॥ ॥ सूत्र ॥ [illegible] ॥ १७ ॥ ॥ ये

[illegible]

वहुरि लिंगकौ (भेषकौ) देखी भेखका जानना सो अंनुमानहै याकौ अभिनिवोध कहे
हें॥ यद्यपि मति, स्मृति, सज्ञा, चिंता, अभिनिवोध, इनके शब्दभेदतें अर्थभेद दीखैहें
तथापि एकमतिज्ञानावर्णकर्मके क्षयोपशमतें उपजैहे तातें ये मतिज्ञानहीहे अन्यना
हीहे ॥१३॥ ॥ सूत्र ॥ तदिंद्रियानिंद्रियनिमित्त ॥१४॥ अर्थ ॥ सोमतिज्ञान, पचइ
द्रिय अर अनिंद्रिय जे मन ताके निमित्ततै उपजैहे ॥१४॥ ॥ सूत्र ॥ अवग्रहेहावाय
धारणा ॥१५॥ अर्थ ॥ पदार्थ अर इंद्रिय इनका जोडहोतैंही जो सामान्य सत्तामात्र
काग्रहणहोय सो दर्शनहै ॥ वहुरि यो शुक्लहे ऐसाविशेष ग्रहणहोना सो अवग्रहना
मामतिज्ञानहे ॥ वहुरि अवग्रहकरि ग्रहणकीयाजो शुक्लरूप तिसविषै जो विशेष जा
नवाकी इच्छा जोशुक्लदीखैहे सो धुजाहे वा वकपक्ती जानिजायहे ऐसाज्ञान सो इहाना
मामतिज्ञानहे॥ वहुरि ताका निर्णयहोना या ध्वजाहिहे ऐसा निश्चमया सो आवाय
नामा मतिज्ञानहे ॥ वहुरिजाकानिश्चयमयाताकौ अन्यकालमे विस्मरणनहीहोना सो
धारणानामा मतिज्ञानहे ॥ १५ ॥ ॥ सूत्र ॥ वहुवहुविधक्षिप्रानि सृतानुक्तध्रुवाणा
सेतराणां ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ पदार्थ अरइंद्रियनीके संवधहोतेही जो आद्यमे पदा
र्थका स्वरूप ग्रहणहोय सो अवग्रहज्ञानहे ॥ सो (वहुतवस्तुका) अवग्रहहोयहे ॥
अर अल्पवस्तुकाहू अवग्रहहोयहे ॥ वहुरि (वहुप्रकारकेवस्तुनिका) अवग्रहहोयहें ॥

मर्यादा ॥ अंतरकहिये विरहकाल ॥ भावकहिये क्षयोपशमादिक परिणाम ॥ [illegible]
तुल्य कहिये परस्परकीअपेक्षाकरि हीनपणा अधिकपणा ॥ ये अष्टप्रकार
म्यग्दर्शनादिकनिकौ तथा जीवादिकनिकौ जानना ॥८॥ ॥ अब
सूत्र ॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानिज्ञानं ॥९॥ अर्थ ॥ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान,
ज्ञान, मनःपर्ययज्ञान, केवलज्ञान ॥ येपंचप्रकार ज्ञानकेभेदहैं सो ये पंचप्रकार
ही प्रमाणसंज्ञाहैं ॥९॥ ॥ सूत्र ॥ तत्प्रमाणे ॥१०॥ अर्थ ॥ येमतिज्ञानआदिक
नहैं तेही प्रमाणहैं ॥१०॥ ॥ सूत्र [illegible] ॥११॥ अर्थ ॥ आदिके
ज्ञान ये दोय परोक्षप्रमाणहैं ॥ ११ ॥ ॥ सूत्र ॥
श्रुतविना अन्य जे अवधि, मनःपर्यय ये
॥ ॥ सूत्र ॥ [illegible]
मनौं

रावर्तनकीहै पाछैं निर्वाणहीहोय॥अरजघन्यस्थिति अंतरमुहूर्तकीहै पाछैंनिर्वाणहोजा
य ॥ क्षायकसम्यक्तकीजघन्यस्थिति ससारीजीवके अंतर्मुहूर्तकीहैं ॥ अंतरमुहूर्तपाछैं
निर्वाणहोहीजाय अर उत्कृष्टस्थिति तेतीस सागर अतरमुहूर्तसहित अष्टवर्षहीन दूय
पूर्वकोटिअधिक हैं ॥ अरमोक्षकेजीवके क्षायक सम्यकीस्थिति आदिसहितहै अरअंत
नहीहैऐसीहै ॥ क्षयोपशमिकसम्यक्तकी जघन्यस्थिति अतर्मुहूर्तहै अरउत्कृष्टस्थि
ति छ्यासठिसागरकीहै ॥ ऐसी स्थितिकही ॥ ॥ अवसम्यक्तके प्रकारकहैंहैं ॥ सा
मान्यतैंतो सम्यक्त एक प्रकारहै ॥ और निसर्ग अधिगम भेदतैं दोय प्रकारहैं ॥ उप
शम क्षायक क्षयोपशम भेदतैं तीनप्रकारहैं ॥ ऐसैं सख्यात भेदहैं ॥ अरश्रद्धान
करनेवाला अर श्रद्धानकरनेके योग्यपनाकेभेदतैं असख्यात भेदहैं अर अनत
भेदहैं ॥ ऐसैंभेदकहें ॥ ऐसैं सम्यग्दर्शनका निर्देशादिक छहप्रकारकरिवर्णनकिया
तैसैंही ज्ञानमें चारित्रमें तथा जीवादिक तत्वनमें निर्देशादिक छहप्रकार परमाग
मके अनुसारकरि युक्त करने योग्यहै ॥ ७॥ औरहू सम्यग्दर्शनादिक तथा जीवादि
कके जाननेकाउपायकहैंहैं ॥ ॥ सूत्र ॥ सत्सख्याक्षेत्रस्पर्शनकालातरभावाल्पबहुत्वै
श्च ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ सत् कहिये अस्तित्व ॥ सख्याकहिये भेदनकी गणना ॥ क्षेत्रकहिये
वर्तमानकालमेंनिवास ॥ स्पर्श कहिये त्रिकालगोचरनिवास ॥ कालकहिये समयकी

जातिस्मरणतें केइकनिके वेदनाका अनुभवकरि सम्यक्त होयहै।। तिसरी पृथ्वीताईं धर्मकाश्रवण कारणहै नीचेंनहीहै ॥ अर तिर्यंचके जातिस्मरण, केईकनीके धर्मश्रवण केईकनिके जिनबिंबदर्शन ये सम्यक्त उपजनेके कारणहै ॥ अर तीन कारणहैं ॥ देवनिमें कितनेक देवनके जातिस्मरण कितनेकनके कितनेकके जिनेंद्रकेपंचकल्याणककीमहिमाके देखनेकरि कितनेकके देवनकीऋद्धि देखनेकरि सम्यग्दर्शन उत्पन्न होयहै बारमास्वर्गताईं ये आनतें प्राणत आरण अच्युतके देवनिके देवऋद्धिदर्शनबिना नवग्रैवेयकनिवासीके कितनेकनिके जातिस्मरण वा धर्मश्रवण [illegible] अनुदिश अनुत्तरके निवासीनिके वा [illegible] [illegible] [illegible] उत्पन्न ॥ ऐसें [illegible] [illegible] [illegible]

तीनों सम्यक्तहै ॥ दर्शनके अनुवादकरि चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन अवधिदर्शन इन तीनूदर्शनविपै तीनों सम्यक्त है अर केवलदर्शनविपै एकक्षायक सम्यक्तहै ॥ लेश्या के अनुवादकरि छह लेश्यानिमै तीनों सम्यक्तहै अर लेश्यारहितमै क्षायक सम्यक्त है ॥ भव्यकेअनुवादकरि भव्यकै तीनों सम्यक्तहै अर अभव्यके सम्यक्तनहीहै ॥ सम्यक्तके अनुवादकरि जहा जैसा सम्यग्दर्शनहै तहा तैसाही जाननो ॥ संज्ञीके अनुवादकरि संज्ञीके तीनों सम्यक्तहै अर असंज्ञीकै सम्यक्त नहीहै अर सज्ञीअसंज्ञी दोऊ पनारहितनके क्षायकसम्यक्तहीहै ॥ आहारकके अनुवादकरि आहारकनके तीनू सम्यक्तहै अर अनाहारकनके कहिये छदमस्थनके तीनू सम्यक्तहै समुद्घातगत अनाहारककै क्षायकसम्यक्तहीहै ॥ ऐसैं सम्यक्तकास्वामित्वकहा ॥ अव सम्यक्तका साधन जो कारण सो कहैहैं ॥ सोसाधन दोय प्रकारहै एक अभ्यतर एक वाह्य ॥ अभ्यतर साधनतो दर्शनमोहका उपशम क्षय तथा क्षयोपशम येतीन हैं अर वाह्य कारण तीसरे नर्कताई नारकीनकै कितनेकके जातिस्मरणतैं सम्यक्त होय अर कितनेक नारकीनकै धर्मश्रवणतैं सम्यक्त होय अर कितनेककै वेदनाके भोगनेतै सम्यग्दर्शन उपजैहै ॥ अर चोथेनर्कको आदिलेय सप्तमनर्कपर्यन्त नारकीनिमें केइकनिके

---

१ उपशममें उपशमसम्यक्त, क्षयोपशममें क्षयोपशमसम्यक्त, क्षायकमें क्षायकसम्यक्त ऐसा जानना

जातिस्मरणतें केइकनिके वेदनाका अनुभवकरि सम्यक्त होयहै॥तिसरीपृथ्वीताँई [illegible] धर्मकाश्रवण कारणहै नीचेंनहीहै॥ अर तिर्यंचके जातिस्मरण, केईकनीके धर्मश्रवण केईकनिके जिनबिंबदर्शन ये सम्यक्त उपजनेके कारणहैं ॥ अर मनुष्यनिके [illegible] तीन कारणहैं ॥ देवनिमें कितनेक देवनके जातिस्मरण कितनेकनके धर्म[illegible] कितनेकके जिनेंद्रकेपंचकल्याणककीमहिमाके देखनेकरि कितनेकके मह[illegible] देवनकीऋद्धि देखनेकरि सम्यग्दर्शन उत्पन्न होयहै बारमास्वर्गताँई ये कारणहैं॥ [illegible] आणतें प्राणत आरण अच्युतइनि देवनिके देवऋद्धिदर्शनबिना तीनहीकारणहैं अर [illegible]ग्रैवेयकनिवासीके कितनेकनिके जातिस्मरण वा धर्मश्रवण दोय ही कारण [illegible] [illegible]विश अनुत्तरके निवासीनिके या [illegible]नहीं उनके पूर्वजन्ममें

[illegible] उत्पन्न है ॥ ऐसें स [illegible]

[illegible]

त्वकोपूछेसो कहेहै ॥ सामान्यकरिकैंतो जीवके होय है ॥ विशेषकरिकेकहेहैं ॥ गतिके अनुवादकरि नर्कगतिविषै कोईजीवके सम्यक्तहोयतो समस्तनर्कविषै नारकीनके पर्याप्तअवस्थाविषै उपशम वा क्षयोपशमसम्यक्त होय ॥ अरप्रथमनर्कविषै पर्याप्त अपर्याप्त अवस्थाविषै क्षायिक क्षायोपशमिक होयहै ॥ द्वितीयादि नरकमें अपर्याप्त अवस्थाविषै सम्यक्त नहीहोयहै ॥ और तिर्यंचविषै सम्यक्तहोयतो उपशमसम्यक्त तो पर्याप्ततिर्यंचहीके होय है ॥ अपर्याप्तकेनहीहोयहै ॥ अर क्षायक क्षयोपशमिक पर्याप्त अपर्याप्त दोनोंअवस्थामें होय परंतु अपर्याप्त अवस्थामै भोगभूमिके तिर्यंच हीकै होय ॥ कर्मभूमिकेतिर्यंचके पर्याप्तअवस्थाहीमै उपशम क्षयोपशम होय । क्षायक नही होय ॥ अरक्षायक सम्यक्त तिर्यंचणीकेहोयही नही अर उपशम क्षयोपशम सम्यक्त पर्याप्तअवस्थामें तिर्यंचणीकेहोय अपर्याप्तअवस्थामें नहीहोय ॥ बहुरि मनुष्यगतिविषै क्षायक क्षयोपशमिक दोयसम्यक्त तो पर्याप्त अपर्याप्त दोऊ अवस्थाविषै होजाय अर उपशमसम्यक्त पर्याप्तअवस्थाहीमें होय अपर्याप्त अवस्थामें नही होय ॥ मनुष्यणीकै (स्त्रीकै) पर्याप्त अवस्थाहीमै सम्यक्त होय, अपर्याप्तअवस्थामै नही होय ॥ क्षायकसम्यक्त द्रव्यस्त्रीकैनहीहोय ॥ भावस्त्रीके होय ॥ देवगतिमै सम्यक्त होय तो कल्पवासीनमें पर्याप्त अपर्याप्त दोऊ अवस्थाविषै तीनों

है राजाकहना॥ ऐसेंच्यारनिक्षेपनिकर जीवादिकनिकोस्थापनकरिये ।नामनिक्षेपमेंतो
नाममात्रहीव्यवहारकेअर्थ कहनाहै औरप्रयोजननाही॥ जैसेंकिसीकों रिषभ[illegible]
नामकहदेनेमात्रही प्रयोजनहै॥ अरजहां रिषभकी स्थापनाकरितहां तदा[illegible]
[illegible]मैसाक्षात् रिषभहीमानिकरि आदर स्तवन दर्शन पूजन करना
ऐसेंच्यारनिक्षेपनितें पदार्थनिका व्यवहार प्रवर्तैहै सोयथावत्जानना॥५॥ऐसें न्य
निक्षेपनिकरि अंगीकारकीये पदार्थनिका स्वरूपका ज्ञान कहेतें होय तातें
सूत्र ॥ [illegible]ः ॥६॥ अर्थ ॥ प्रमाणऔरनयनिकरि
[illegible]नपनाहोयहै॥६॥ बहुरि सम्यग्दर्शनादिक
[illegible]है॥ ॥सूत्र॥
[illegible]कहिये स्वरूपका कहना॥ स्वामित्व
[illegible]

ग्दर्शनकैसैंउपजैहैसोकहैहैं ॥ सूत्र ॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ जोसम्यग्
दर्शनबाह्यउपदेशविना प्रगट होय सोनिसर्गसम्यक्तहै ॥ अरजोपरको उपदेशतें जीवा
दिकपदार्थोंका श्रद्धान होयसोअधिगमसम्यक्तहै ॥ ॥ ३ ॥ ॥ अबतत्वोंकेनामकहैहै ॥ ॥
सूत्र ॥ जीवाजीवाश्रवबंधसंवर निर्जरामोक्षास्तत्व ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ चेतनालक्षणजीवहै ॥
चेतना रहितहोय सोअजीवहै ॥ शुभअरअशुभ कर्म आवनेकेद्वारसो आश्रवहै ॥ ॥ आ
त्माकेप्रदेश अरकर्मकेप्रदेशनिका मिलना सोबंधहै ॥ आवते कर्मका रोकना सोसंवरहै ॥
एकदेसतैंकर्मकाक्षयहोना सोनिर्जराहै ॥ समस्तकर्मका नाशहोनासोमोक्षहै ॥ एससतत्व
हैं ॥ ४ ॥ अब ॥ सम्यग्दर्शनादिक वा जीवअजीवादिक पदार्थनिका यथावत् व्यवहारके
अर्थचारनिक्षेपककहैहैं ॥ ॥ सूत्र ॥ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ जि
सवस्तुका जैसा नाम है तैसा गुणतोनहीहोय अर व्यवहारकी प्रवृत्तिकेअर्थ नामसंज्ञाक
हिये सोनामनिक्षेपहै ॥ जैसैं किसीमनुष्यकानाम इंद्रराजाकहै ॥ ॥ बहुरि धातु पाषाण
अरकाष्ठ मृत्तिकादिकनिमें सो यो है ऐसास्थापनकरनासो स्थापनाहै ॥ जैसें सतरंजके
ख्यालमें काष्ठकेरोपानिकु हस्ती घोटका कहैहै ॥ ॥ और आगामी कालमें ॥ जिसरूपहोय
गाताकु तिसरूप कहना सोद्रव्यनिक्षेपहै ॥ जैसैंराजाके पुत्रको राजा कहना ॥ बहुरिव
र्त्तमानजेसीपर्यायसहितहोय ताकूतैसाकहनासो भावनिक्षेपहै ॥ जैसैंराज्यकरताहोयता